हिंदी

कक्षा – 9

सत्र 2022–23

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?	
विकल्प 1	: अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2	: Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे —> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें —> उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1. पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।
2. मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।
3. सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1. QR Code के नीचे 6 अंक का Al-pha Numeric Code दिया गया है।

2. ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3. सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4. प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष : 2022

DUMK4J

© संचालक, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

मार्गदर्शक : प्रो. रमा कान्त अग्निहोत्री, दिल्ली

सहयोग : विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर (राज.), अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन

समन्वयक : डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, एस.सी.ई.आर.टी., छ.ग.

विषय–समन्वयक : बी.आर.साहू, सहायक संचालक, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

लेखन समूह : डेकेश्वर प्रसाद वर्मा, डॉ. दादू लाल जोशी, रमेश शर्मा, दिनेश गौतम, रामकृष्ण पुष्पकार, डॉ. रचना दत्त, संजय पाण्डेय, सतीश उपाध्याय, बलदाऊ राम साहू, पुष्पराज राणावत, अंजना राव।

चित्रांकन : मयंक शर्मा

आवरण पृष्ठ एवं ले–आउट : रेखराज चौरागड़े, भवानी शंकर

टंकण : चेतन यादव

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

समय के साथ—साथ शिक्षा का सरोकार भी बदलता है। इस बदलते परिवेश में शिक्षा का संदर्भ भी बदला है। अब शिक्षा परीक्षा उत्तीर्ण करना मात्र न होकर स्कूली ज्ञान को उनके आस—पास के अनुभवों से जोड़ना एवं सामाजिकता और संवेदनशीलता को सुदृढ़ करना भी है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में घर और स्कूल के बीच अंतर्संबंध का अभाव दिखता है। हम लोग घर की भाषा को कक्षा में स्थान देना तो दूर की बात इसके प्रयोग के अवसर भी नहीं देते। परिणाम स्वरूप बच्चे भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ नहीं बना पाते। यदि कक्षा में बच्चों के घर की भाषा को संसाधन के रूप में लिया जाए तो बच्चे भाषायी रूप से सक्षम होंगे और वे अपनी संस्कृति से जुड़ पाएँगे। छत्तीसगढ़ की बहुभाषिकता को ध्यान में रखकर अपनी मातृभाषा में भी विचार व्यक्त करने के अवसर इस पुस्तक में दिए गए हैं।

यह पाठ्यपुस्तक भाषा—शिक्षण के नए संदर्भों को सामने रखकर लिखी गई है। पुस्तक में एक ओर जहाँ वैश्विक समाज के दृष्टिकोण में आए बदलाव को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का चयन किया गया है, वहीं दूसरी ओर भाषा के बदलते स्वरूप से परिचित कराने हेतु भक्तिकालीन साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य को यथा संभव स्थान दिया गया है। पाठ्यपुस्तक की रचना 'थीम' आधारित की गई है, इसलिए इसमें सात थीम शामिल हैं— **1 : प्रेरक प्रसंग; 2 : स्थानीय परिवेश; कला और संस्कृति; 3 : समसामयिक मुद्दे, 4 : छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य; 5 : पर्यावरण एवं प्रकृति; 6 : विज्ञान एवं तकनीकी; 7 : विविध**। दी गई सातों 'थीम' की विषयवस्तु का संबंध बच्चे के सामाजिक संदर्भ, सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, परिवेशीय ज्ञान, छत्तीसगढ़ी व हिंदी भाषा साहित्य को समझने व उस पर तार्किक विश्लेषण कर समझ विकसित करने से है।

इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से भाषा शिक्षण की प्रविधियों में आधारभूत परिवर्तन करने का प्रयास किया गया है। भाषा रटने की विषयवस्तु नहीं है, बल्कि उसका सीखना उसकी प्रकृति और प्रवृत्ति को समझकर प्रयोग पर बल देने में निहित है। हमने बच्चों में भाषायी कौशल विकसित करने के लिए अभ्यास को गतिविधि आधारित बनाया है। पाठ के प्रश्नों से जहाँ बच्चों को विषयवस्तु को बेहतर ढंग से समझने के अवसर मिलेंगे, वहीं पाठ से आगे के प्रश्न परिवेश को समझते हुए ज्ञान के विस्तार व तार्किक विश्लेषण करने के अवसर प्रदान करेंगे। भाषा के बारे में दिए गए अभ्यास को अधिक से अधिक प्रयोगात्मक बनाने की कोशिश की गई है ताकि बच्चे व्याकरण की विशिष्टताओं को प्रयोग करके सीख सकें। कुछ पाठों में व्याकरण की समझ को सुदृढ़ करने के लिए उदाहरण स्वरूप गतिविधियों का भी समावेश किया गया है। योग्यता विस्तार के प्रश्नों के माध्यम से भाषा शिक्षण को केवल भाषा की कक्षा तक सीमित न रखकर सामाजिक अनुभव, व्यवहार एवं परिवेश से सीखने के माध्यम के रूप में दिया गया है। उसमें यह भी प्रयास किया गया है कि बच्चे अधिक से अधिक साहित्य का अध्ययन करें इस हेतु अतिरिक्त पठन सामग्री भी पाठ्यपुस्तक में दी गई है।

साहित्य की विविधता बच्चों को अच्छी लगती है, उनमें व्यक्ति विशेष व समाज के प्रति खास किस्म की संवेदना पैदा करती है। इस पुस्तक में साहित्य की विविधताओं से परिचित कराने के लिए अनेक विधाओं से संबंधित सामग्री ली गई हैं। शामिल की गई कहानी, कविता, गीत, एकांकी और निबंधों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ेंगे और इससे अपने अनुभव को विकसित करते हुए संवेदनशील बनेंगे।

अध्यापकों एवं प्राचार्यों से आग्रह है कि वे भाषा शिक्षण में आए बदलाव को ध्यान में रखकर कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं में अपेक्षित बदलाव लाएँ, ताकि बच्चे सही ढंग से भाषायी ज्ञान प्राप्त कर सकें। विषय को सीखने का अभिप्राय उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावलियों को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा कर मत व्यक्त करने से है। इस हेतु शिक्षकों को अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाते हुए भाषा शिक्षण पर नई समझ विकसित करने की आवश्यकता होगी। भाषा शिक्षण के संदर्भ में यह भी समझने की आवश्यकता होगी कि बच्चों के द्वारा की जाने वाली गलतियाँ केवल गलतियाँ नहीं होतीं, वे अधिगम का हिस्सा भी होती हैं। गलतियों को सीखने के संसाधन के रूप में किस तरह उपयोग करें, इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

पाठ्यपुस्तक लेखन में हमें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बहुत से विद्वानों एवं संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ है। हम लेखन समिति के सदस्यों के साथ उन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। इस पाठ्यपुस्तक को छात्रोपयोगी बनाने में मार्गदर्शन करने के लिए हम प्रो. रमा कान्त अग्निहोत्री के प्रति विशेष आभारी हैं, जिनके उपयोगी सुझावों ने विषय को वैज्ञानिक ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया है। हम विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर (राजस्थान) एवं अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के उन सदस्यों का भी आभार मानते हैं जिनका हमें अकादमिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्‌देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक कक्षा नवमी के बच्चों में भाषायी चेतना विकसित करने के लिए उपयोगी साबित होगी। फिर भी हम विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं समाज के समस्त सुधीजनों से उपयोगी सुझावों की अपेक्षा करते हैं, ताकि इस पाठ्यपुस्तक को और भी बेहतर बनाया जा सके।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

AJ44H1

पाठ	विधा	लेखक	पृष्ठ संख्या
इकाई 1 : प्रेरक प्रसंग			**2–22**
पाठ 1.1 : जीवन नहीं मरा करता है	कविता	गोपाल दास 'नीरज'	3
पाठ 1.2 : गुल्ली–डंडा	कहानी	प्रेमचंद	7
पाठ 1.3 : अपूर्व अनुभव	प्रसंग	तेत्सुको कुरोयानागी	17
इकाई 2 : स्थानीय परिवेश, कला और संस्कृति			**24–44**
पाठ 2.1 : छत्तीसगढ़ी लोकगीत	लेख	डॉ. जीवन यदु	25
पाठ 2.2 : गद्दार कौन	लोककथा	नारायण लाल परमार	34
पाठ 2.3 : कलातीर्थ : खैरागढ़ का संगीत विश्वविद्यालय	लेख	डॉ. राजन यादव	39
इकाई 3 : समसामयिक मुद्दे			**46–84**
पाठ 3.1 : बच्चे काम पर जा रहे हैं	कविता	राजेश जोशी	47
पाठ 3.2 : अकेली	कहानी	मन्नू भण्डारी	51
पाठ 3.3 : जामुन का पेड़	व्यंग्य	कृश्न चंदर	61
पाठ 3.4 : रीढ़ की हड्डी	एकांकी	जगदीश चंद्र माथुर	70
इकाई 4 : छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य			**86–100**
पाठ 4.1 : सुरुज टघलत हे . . .	कविता	पवन दीवान	87
पाठ 4.2 : लोककथाएँ	लोककथा	संकलित	91
पाठ 4.3 : नँदिया–नरवा मा तँउरत हे	ग़ज़ल	मुकुंद कौशल	97

पाठ	विधा	लेखक	पृष्ठ संख्या
इकाई 5 : पर्यावरण एवं प्रकृति			**102–120**
पाठ 5.1 : ग्राम्य जीवन	कविता	डॉ. मुकुटधर पांडेय	103
पाठ 5.2 : मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग	यात्रा वृत्तांत	अनीता सक्सेना	107
पाठ 5.3 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख	कविता	निर्मला पुतुल	115
इकाई 6 : विज्ञान एवं तकनीकी			**122–140**
पाठ 6.1 : सी. वी. रमन	जीवनी	अरविंद गुप्ता	123
पाठ 6.2 : प्लास्टिक : कल का खतरा, आज ही जागें	लेख	सुदिप्त घोष	128
पाठ 6.3 : विकसित भारत का स्वप्न	निबंध	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	135
इकाई 7 : विविध			**142–158**
पाठ 7.1 : पद	भक्ति पद	संकलित	143
पाठ 7.2 : आ रही रवि की सवारी	कविता	हरिवंश राय बच्चन	147
पाठ 7.3 : अख़बार में नाम	कहानी	यशपाल	150
पाठ 7.4 : अपने हिस्से में लोग आकाश देखते हैं	कविता	विनोद कुमार शुक्ल	157

मूल्यांकन योजना (कक्षा 9)

विषय– हिंदी मूल्यांकन योजना प्रारूप

1. बाह्य मूल्यांकन — निर्धारित अंक भार (75)
2. आन्तरिक/रचनात्मक मूल्यांकन — निर्धारित अंक भार (25)

समेकित (बाह्य) मूल्यांकन कक्षा 9 वीं

कुल अंक – 75

क्र.	विषयवस्तु
1.	**पाठ्यपुस्तक पर आधारित**
	पद्य खण्ड ● पाठ्यपुस्तक में निर्धारित पाठों के आधार पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक–तत्व पर आधारित प्रश्न। ● पाठ्यपुस्तक पर आधारित चिंतन–मनन, भाव–ग्रहण, तर्क एवं भाव–विस्तार (व्याख्या) वाले प्रश्न।
	गद्य खण्ड ● पाठ्यपुस्तक में दिए गए पाठों में से विषय–वस्तु का बोध, तर्क करने, भाषिक–तत्व पर आधारित प्रश्न। ● पाठ्यपुस्तक पर आधारित चिंतन–मनन, तर्क, विश्लेषण पर आधारित प्रश्न व स्वतंत्र प्रश्न।
2	**पठन कौशल संबंधित** ● अपठित गद्यांश (शब्द सीमा 100) पर शीर्षक, बोधात्मक प्रश्न, भाषिक–तत्व, भाषायी संरचना पर आधारित प्रश्न। ● अपठित काव्यांश (शब्द सीमा 60–100) पर काव्य बोधात्मक, भाव ग्रहण आदि पर प्रश्न।
3	**व्याकरण** ● पाठ्यपुस्तक में निर्धारित विषयवस्तु से संबंधित एवं संदर्भ आधारित व्याकरण के प्रश्न। ● इन प्रश्नों की प्रकृति पाठ्यपुस्तक में दिए गए व्याकरण प्रश्नों के अनुरूप होगी।
4	**रचनात्मक लेखन** ● निबंध लेखन, समसामयिक मुद्दों एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े विविध विषयों पर आधारित। ● पत्र–लेखन–व्यावहारिक पत्र एवं अनौपचारिक पत्र।

मौखिक गतिविधियाँ* (10 अंक)	लिखित गतिविधियाँ* (5 अंक)	परियोजना कार्य (10 अंक)
कविता पाठ, कहानी व नाटक पठन	रिपोर्ट लेखन	सर्वे/डाटा संग्रहण और विश्लेषण (पाठ्यपुस्तक में दी गई)।
किसी विषय पर चर्चा और वाद विवाद	कहानी का नाट्य रूपांतरण (समूह गतिविधि)	पाठ/कहानी/पुस्तक की समीक्षा लिखना।
अधूरी कहानी पूरा करना	स्वतंत्र लेखन	पाठ्यपुस्तक से भिन्न किन्हीं दो या उससे अधिक लेखकों/कवियों की रचनाओं का संग्रहण (पुस्तकालय या अन्य स्त्रोतों से) और उनके बारे में अपने विचार/राय प्रस्तुत करना।
ऑडियो सुनकर चर्चा करना	सारांश लिखना	प्रसिद्ध व्यक्तियों का जीवनवृत लिखना।
नाटक प्रस्तुतीकरण (समूह गतिविधि)	अधूरी कहानी पूरा करना/आगे बढ़ाना (समूह गतिविधि)	चार्ट्स और भित्ति पत्रिका बनाना (समूह गतिविधि) (पाठ्यपुस्तक से)
	किसी चर्चा को सुनकर उसके नोट्स बनाना एवं प्रस्तुत करना	
* = इनमे से कोई भी तीन गतिविधियाँ करना अनिवार्य होगा	* = इनमे से कोई भी एक गतिविधि करना अनिवार्य होगा	* = उपर्युक्त में से या पाठ्यपुस्तक में से कोई दो प्रोजेक्ट कार्य करना अनिवार्य होगा

इकाई 1 : प्रेरक प्रसंग

पाठ 1.1 : जीवन नहीं मरा करता है

पाठ 1.2 : गुल्ली–डंडा

पाठ 1.3 : अपूर्व अनुभव

इकाई 1

प्रेरक प्रसंग

महान व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी घटनाओं को प्रेरक प्रसंगों के रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा रही है। कई बार बचपन से जुड़ी कोई छोटी सी घटना भी हमें प्रेरणा प्रदान कर जाती है; लेकिन उस तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। जीवन के छोटे–छोटे प्रसंग भी हमें सोचने को विवश कर सकते हैं। इस इकाई में शामिल किए गए पाठ न केवल विधा के स्तर पर, बल्कि संवेदना के स्तर पर भी जीवन के कुछ अनछुए प्रसंगों की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे।

जीवन में निराशा और हताशा के ऐसे कई क्षण आते हैं, जब हम पूरी तरह हार कर बैठ जाते हैं। नीरज की कविता **जीवन नहीं मरा करता है** निराशा के इन्हीं क्षणों से हमें मुक्त कर आशा का संचार करती है।

बच्चों का हृदय बड़ा निश्छल होता है। उनमें किसी प्रकार के भेद–भाव नहीं होते। जैसे–जैसे वे बड़े होने लगते हैं, उनके भीतर भेदमूलक व्यवहार उनके व्यक्तित्व में झलकने लगते हैं। प्रेमचंद की कहानी **गुल्ली–डंडा,** खेल की पृष्ठभूमि में मनुष्य के इसी अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत करती है।

बच्चे भी कई बार ऐसे जोखिम भरे काम कर बैठते हैं, जो बड़ों की कल्पना से बाहर होते हैं। तोत्तो–चान द्वारा पोलियो से ग्रस्त साथी यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने का जोखिम भरा कार्य एक ऐसे **अपूर्व अनुभव** की सृष्टि करता है, जहाँ शब्द भी चूक जाते हैं। कहने–सुनने से अधिक गहरी अनुभूति के स्तर पर उतर कर इन्हें महसूस करने की जरुरत होती है।

पाठ 1.1 : जीवन नहीं मरा करता है

AJCZIN

गोपाल दास 'नीरज'

पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से विभूषित ***गोपालदास 'नीरज'*** *का जन्म 4 जनवरी 1925 को इटावा (उत्तर प्रदेश) के पुरावली ग्राम में हुआ था। हिंदी भाषा के प्रमुख गीतकार और कवि नीरज ने कविता के साथ–साथ हिंदी सिनेमा के लिए लोकप्रिय गीत लिखे हैं–* ***कारवाँ गुजर गया, बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, ए भाई! जरा देख के चलो*** *आदि। जन सामान्य की दृष्टि में वे मानव प्रेम के अनन्य गायक हैं। उन्होंने अपनी मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति तथा सहज, सरल भाषा द्वारा हिंदी कविता को आम जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।* ***कारवाँ गुजर गया, प्राण गीत, आसावरी, बादर बरस गयो, दो गीत, नदी किनारे, नीरज की गीतिकाएँ, संघर्ष, विभावरी, नीरज की पाती, लहर पुकारे, मुक्तक, गीत भी अगीत*** *आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

छिप–छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है? नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी,
गीली उमर बनाने वालो!
डूबे बिना नहाने वालो!
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी

पहने सुबह धूप की धोती,
वस्त्र बदलकर आने वालो!
चाल बदलकर जाने वालो!
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

लाखों बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर,
लाखों बार कश्तियाँ डूबीं
चहल–पहल वो ही है तट पर,
तम की उमर बढ़ाने वालो!
लौ की आयु घटाने वालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर
उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफ़ानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की,
नफ़रत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

शब्दार्थ

नयन – आँख; **सेज** – बिस्तर, बिछावन; **अश्रु** – आँसू; **व्यर्थ** – अर्थहीन, अनावश्यक; **शिकन** – सिलवटें, सिकुड़न; **पनघट** – पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

अभ्यास

पाठ से

1. कविता में वे कौन–कौन सी पंक्तियाँ हैं जो हमारे अंदर आशा का संचार करती हैं?
2. 'मोती व्यर्थ लुटाने वालो!' पंक्ति में मोती से क्या आशय है?
3. 'तम की उमर बढ़ाने वालो! लौ की आयु घटाने वालो।' कविता की इन पंक्तियों में किस तरह के लोगों को संबोधित किया गया है और इनकी तुलना किससे की गई है?
4. ''लूट लिया माली ने उपवन, लुटी न लेकिन गंध फूल की'' कविता की इन पंक्तियों में कवि क्या संदेश देना चाह रहा है? अपने विचार लिखिए।
5. कविता के शीर्षक 'जीवन नहीं मरा करता' की उपयुक्तता पर अपने विचार लिखिए।

पाठ से आगे

AVHCXK

1. कुछ सपनों के मर जाने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? अपने पक्ष में उदाहरण सहित तर्क दीजिए।
2. अपने या अपने आसपास के लोगों के जीवन की कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन कीजिए जिनके घटित होने पर भी जीवन के वृहद परिदृश्य प्रभावित नहीं होते।

भाषा के बारे में

AVR8Z8

1. हिंदी भाषा में कई बार एक ही अर्थ के लिए एक से अधिक शब्द रूप इस्तेमाल किए जाते हैं, उदाहरण के लिए कविता में 'ज्यों' शब्द आया है, इसके लिए 'जैसे' शब्द का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इन्हें पर्यायवाची भी कहते हैं। निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची बताइए।

(क) अश्रु	(ख) व्यर्थ	(ग) नयन
(घ) चंद	(ङ) कश्ती	(च) तम
(छ) उपवन	(ज) कोशिश	

योग्यता विस्तार

1. गोपाल दास 'नीरज' के कुछ प्रसिद्ध गीतों को खोजकर पढ़िए और गाइए।
2. जीवन में आशा का संचार करने वाली रामधारी सिंह दिनकर की दी गई कविता को भी पढ़िए।

यह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल दूर नहीं है
थक कर बैठ गए क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।
चिंगारी बन गई लहू की बूँद, गिरी जो पग से
चमक रहे पीछे मुड़ देखो चरण–चिह्न जगमग से।
शुरू हुई आराध्य भूमि यह क्लांत नहीं रे राही;
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से।
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है
थक कर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तम का,
सारी रात चले तुम, दुख झेलते कुलिश निर्मम का।
एक खेप है शेष, किसी विध पार उसे कर जाओ;
वह देखो, उस पार चमकता है मंदिर प्रियतम का।
आकर इतना पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है;
थककर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य–प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल–अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही,
अंबर पर घन बन छाएगा ही उच्छ्वास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गए क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

आराध्य – जिनकी पूजा की जाती हो; **क्लांत** – थका हुआ; **तूर** – नाद, घोष; **कुलिश** – आकाशीय बिजली, गाज; **खेप** – उतनी वस्तु जो एक बार लादी, ढोई या पहुँचाई जा सके; **अनल** – अग्नि; **अंबर** – आकाश; **उच्छ्वास** – साँस छोड़ना।

पाठ 1.2 : गुल्ली–डंडा

प्रेमचंद

__प्रेमचंद__ का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 में बनारस जिले के लमही ग्राम में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। प्रेमचंद की कहानियाँ मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं। __सेवासदन, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गबन, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गोदान__ इनके प्रमुख उपन्यास हैं। कथा–साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार के गद्य लेखन के साथ ही __हंस, माधुरी, जागरण__ जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं का संपादन भी किया। प्रेमचंद, साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते हैं। उनके कथा साहित्य में तत्कालीन समाज की जीती–जागती बहुरंगी तस्वीर है जिसमें किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति, स्त्रियों की दुर्दशा तथा सामाजिक विषमताओं का यथार्थवादी चित्रण है। सन् 1936 में इस महान कथाकार का देहांत हो गया।

हमारे अंगरेजी दोस्त मानें या न मानें, मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली–डंडा सब खेलों का राजा है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली–डंडा खेलते देखता हूँ, तो जी लोट–पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लॉन की जरूरत, न कोर्ट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली, और दो आदमी भी आ जाएँ, तो खेल शुरू हो गया।

विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं। जब तक कम–से–कम एक सैकड़ा न खर्च कीजिए, खिलाड़ियों में शुमार ही नहीं हो पाता। यहाँ गुल्ली–डंडा है कि बिना हर्र–फिटकरी के चोखा रंग देता है, पर हम अंगरेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गई। स्कूलों में हरेक लड़के से तीन–चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ, जो बिना दाम–कौड़ी के खेले जाते हैं। अंगरेजी खेल उनके लिए हैं, जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मढ़ते हो? ठीक है, गुल्ली से आँख फूट जाने का भय रहता है, तो क्या क्रिकेट से सिर फूट जाने, तिल्ली फट जाने, टाँग टूट जाने का भय नहीं रहता! अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है, तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे। यह अपनी–अपनी रुचि है। मुझे गुल्ली ही सब खेलों से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियों में गुल्ली ही सबसे मीठी है।

वह प्रातःकाल घर से निकल जाना, वह पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली–डंडे बनाना, वह उत्साह, वह खिलाड़ियों के जमघट, वह पदना और पदाना, वह लड़ाई–झगड़े, वह सरल स्वभाव, जिससे छूत–अछूत, अमीर–गरीब का बिल्कुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोंचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब .... जब ...। घरवाले बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे वेग से रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं, अम्माँ की दौड़ केवल द्वार तक है, लेकिन उनकी विचारधारा में मेरा अंधकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है और मैं हूँ कि पदाने में मस्त हूँ, न नहाने की सुधि है, न खाने की। गुल्ली है तो जरा–सी, पर उसमें दुनिया–भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनंद भरा हुआ है।

मेरे हमजोलियों में एक लड़का गया नाम का था। मुझसे दो–तीन साल बड़ा होगा। दुबला, बंदरों की–सी लंबी–लंबी, पतली–पतली उँगलियाँ, बंदरों की–सी चपलता, वही झल्लाहट। गुल्ली कैसी ही हो, पर इस तरह लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ों पर लपकती है। मालूम नहीं, उसके माँ–बाप थे या नहीं, कहाँ रहता था, क्या खाता था; पर था हमारे गुल्ली–क्लब का चैंपियन। जिसकी तरफ वह आ जाए, उसकी जीत निश्चित थी। हम सब उसे दूर से आते देख, उसका दौड़कर स्वागत करते थे और अपना गोइयाँ बना लेते थे।

एक दिन मैं और गया दो ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था। मैं पद रहा था, मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन–भर मस्त रह सकते है; पदना एक मिनट का भी अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चलीं, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र–विहित न होने पर भी क्षम्य हैं, लेकिन गया अपना दाँव लिए बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।

मैं घर की ओर भागा। अनुनय–विनय का कोई असर न हुआ था।

गया ने मुझे दौड़कर पकड़ लिया और डंडा तानकर बोला–मेरा दाँव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादुर बनके, पदने के बेर क्यों भागे जाते हो।

''तुम दिन–भर पदाओ तो मैं दिन–भर पदता रहूँ?''

''हाँ, तुम्हें दिन–भर पदना पड़ेगा।''

''न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ?''

''हाँ! मेरा दाँव दिए बिना कहीं नहीं जा सकते।''

''मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?''

''हाँ, मेरे गुलाम हो।''

''मैं घर जाता हूँ, देखूँ मेरा क्या कर लेते हो!''

''घर कैसे जाओगे; कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, दाँव लेंगे।''

'अच्छा, कल मैंने अमरूद खिलाया था। वह लौटा दो।'

'वह तो पेट में चला गया।'

'निकालो पेट से। तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?'

'अमरूद तुमने दिया, तब मैंने खाया। मैं तुमसे माँगने न गया था।'

'जब तक मेरा अमरूद न दोगे, मैं दाँव न दूँगा।'

मैं समझता था, न्याय मेरी ओर है। आखिर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरूद खिलाया होगा। कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया, तो फिर उसे मुझसे दाँव लेने का क्या अधिकार है? रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं, यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जाएगा? अमरूद पैसे के पाँचवाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था।

गया ने मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा–मेरा दाँव देकर जाओ, अमरूद–समरूद मैं नहीं जानता।

मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था। मैं हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था। वह मुझे जाने न देता! मैंने उसे गाली दी, उसने उससे कड़ी गाली दी, और गाली–ही नहीं, एक चाँटा जमा दिया। मैंने उसे दाँत काट लिया। उसने मेरी पीठ पर डंडा जमा दिया। मैं रोने लगा। गया मेरे इस अस्त्र का मुकाबला न कर सका। मैंने तुरंत आँसू पोंछ डाले, डंडे की चोट भूल गया और हँसता हुआ घर जा पहुँचा।

उन्हीं दिनों पिताजी का वहाँ से तबादला हो गया। नई दुनिया देखने की खुशी में ऐसा फूला कि अपने हमजोलियों से बिछुड़ जाने का बिलकुल दुःख न हुआ। पिताजी दुःखी थे। वह बड़ी आमदनी की जगह थी। अम्माजी भी दुःखी थीं। यहाँ सब चीज सस्ती थीं, और मुहल्ले की स्त्रियों से घराँव–सा हो गया था, लेकिन मैं मारे खुशी के फूला न समाता था। लड़कों में जीट उड़ा रहा था, वहाँ ऐसे घर थोड़े ही होते हैं। ऐसे–ऐसे ऊँचे घर हैं कि आसमान से बातें करते हैं। वहाँ के अंगरेजी स्कूल में कोई मास्टर लड़कों को पीटे, तो उसे जेहल हो जाए। मेरे मित्रों की फैली हुई आँखें और चकित मुद्रा बतला रही थीं कि मुझसे उनकी निगाह में कितनी स्पर्द्धा हो रही थी! मानो कह रहे थे–तू भाग्यवान है भाई, जाओ। हमें तो इसी ऊजड़ ग्राम में जीना भी है और मरना भी।

बीस साल गुजर गए। मैंने इंजीनियरी पास की और उसी जिले का दौरा करता हुआ उसी कस्बे में पहुँचा और डाकबँगले में ठहरा। उस स्थान को देखते ही इतनी मधुर बाल–स्मृतियाँ हृदय में जाग उठीं कि मैंने छड़ी उठाई और कस्बे की सैर करने निकला। आँखें किसी प्यासे पथिक की भाँति बचपन के उन क्रीड़ा–स्थलों को देखने के लिए व्याकुल हो रही थीं; पर उस परिचित नाम के सिवा वहाँ और कुछ परिचित न था। जहाँ खँडहर था, वहाँ पक्के मकान खड़े थे। जहाँ बरगद का पुराना पेड़ था, वहाँ अब एक सुन्दर बगीचा था। स्थान की काया पलट हो गई थी। अगर उसके नाम और स्थिति का ज्ञान न होता, तो मैं उसे पहचान भी न सकता। बचपन की संचित और अमर स्मृतियाँ बाँहें खोले अपने उन पुराने मित्रों से गले मिलने को अधीर हो रही थीं; मगर वह दुनिया बदल गई थी। ऐसा जी होता था कि उस धरती से लिपटकर रोऊँ और कहूँ, तुम मुझे भूल गई! मैं तो अब भी

तुम्हारा वही रूप देखना चाहता हूँ।

सहसा एक खुली जगह में मैंने दो–तीन लड़कों को गुल्ली–डंडा खेलते देखा। एक क्षण के लिए मैं अपने को बिल्कुल भूल गया। भूल गया कि मैं एक ऊँचा अफसर हूँ, साहबी ठाठ में, रौब और अधिकार के आवरण में।

जाकर एक लड़के से पूछा–क्यों बेटे, यहाँ कोई गया नाम का आदमी रहता है?

'हाँ, है तो।'

'जरा उसे बुला सकते हो?'

लड़का दौड़ता हुआ गया और एक क्षण में एक पाँच हाथ के काले देव को साथ लिए आता दिखाई दिया। मैं दूर से ही पहचान गया। उसकी ओर लपकना चाहता था कि उसके गले लिपट जाऊँ, पर कुछ सोचकर रह गया। बोला–कहो गया, मुझे पहचानते हो?

गया ने झुककर सलाम किया–हाँ मालिक, भला पहचानूँगा क्यों नहीं! आप मजे में हो?

'बहुत मजे में। तुम अपनी कहो।'

'डिप्टी साहब का साईस हूँ।'

'मतई, मोहन, दुर्गा सब कहाँ हैं? कुछ खबर है?'

'मतई तो मर गया, दुर्गा और मोहन दोनों डाकिया हो गए हैं। आप?'

'मैं तो जिले का इंजीनियर हूँ।'

'सरकार तो पहले ही बड़े जहीन थे?'

'अब कभी गुल्ली–डंडा खेलते हो?'

गया ने मेरी ओर प्रश्न–भरी आँखों से देखा–अब गुल्ली–डंडा क्या खेलूँगा सरकार, अब तो धंधे से छुट्टी नहीं मिलती।

'आओ, आज हम–तुम खेलें। तुम पदाना, हम पदेंगे। तुम्हारा एक दाँव हमारे ऊपर है। वह आज ले लो।'

गया बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। वह ठहरा टके का मजदूर, मैं एक बड़ा अफसर। हमारा और उसका क्या जोड़? बेचारा झेंप रहा था। लेकिन मुझे भी कुछ कम झेंप न थी; इसलिए नहीं कि मैं गया के साथ खेलने जा रहा था, बल्कि इसलिए कि लोग इस खेल को अजूबा समझकर इसका तमाशा बना लेंगे और अच्छी–खासी भीड़ लग जाएगी। उस भीड़ में वह आनंद कहाँ रहेगा, पर खेले बगैर तो रहा नहीं जाता। आखिर निश्चय हुआ कि दोनों जने बस्ती से बहुत दूर खेलेंगे और बचपन की उस मिठाई को खूब रस ले–लेकर खाएँगे। मैं गया को लेकर डाकबँगले पर आया और मोटर में बैठकर दोनों मैदान की ओर चले। साथ में एक कुल्हाड़ी ले ली। मैं गंभीर भाव धारण किए हुए था, लेकिन गया इसे अभी तक मजाक ही समझ रहा था। फिर भी उसके मुख पर उत्सुकता

या आनंद का कोई चिह्न न था। शायद वह हम दोनों में जो अंतर हो गया था, यही सोचने में मगन था।

मैंने पूछा—तुम्हें कभी हमारी याद आती थी गया? सच कहना।

गया झेंपता हुआ बोला—मैं आपको याद करता हजूर, किस लायक हूँ। भाग में आपके साथ कुछ दिन खेलना बदा था; नहीं तो मेरी क्या गिनती?

मैंने कुछ उदास होकर कहा—लेकिन मुझे तो बराबर, तुम्हारी याद आती थी। तुम्हारा वह डंडा, जो तुमने तानकर जमाया था, याद है न?

गया ने पछताते हुए कहा—वह लड़कपन था सरकार, उसकी याद न दिलाओ।

'वाह! वह मेरे बाल—जीवन की सबसे रसीली याद है। तुम्हारे उस डंडे में जो रस था, वह तो अब न आदर—सम्मान में पाता हूँ, न धन में।'

इतनी देर में हम बस्ती से कोई तीन मील निकल आए। चारों तरफ सन्नाटा है। पश्चिम ओर कोसों तक भीमताल फैला हुआ है, जहाँ आकर हम किसी समय कमल पुष्प तोड़ ले जाते थे और उसके झूमक बनाकर कानों में डाल लेते थे। जेठ की संध्या केसर में डूबी चली आ रही है। मैं लपककर एक पेड़ पर चढ़ गया और एक टहनी काट लाया। चटपट गुल्ली—डंडा बन गया।

खेल शुरू हो गया। मैंने गुच्ची में गुल्ली रखकर उछाली। गुल्ली गया के सामने से निकल गई। उसने हाथ लपकाया, जैसे मछली पकड़ रहा हो। गुल्ली उसके पीछे जाकर गिरी। यह वही गया है, जिसके हाथों में गुल्ली जैसे आप ही आकर बैठ जाती थी। वह दाहिने—बाएँ कहीं हो, गुल्ली उसकी हथेली में ही पहुँचती थी। जैसे गुल्लियों पर वशीकरण डाल देता हो। नई गुल्ली, पुरानी गुल्ली, छोटी गुल्ली, बड़ी गुल्ली, नोकदार गुल्ली, सपाट गुल्ली सभी उससे मिल जाती थी। जैसे उसके हाथों में कोई चुंबक हो, गुल्लियों को खींच लेता हो; लेकिन आज गुल्ली को उससे वह प्रेम नहीं रहा। फिर तो मैंने पदाना शुरू किया। मैं तरह—तरह की धाँधलियाँ कर रहा था। अभ्यास की कसर बेईमानी से पूरी कर रहा था। हुच जाने पर भी डंडा खेले जाता था। हालाँकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी। गुल्ली पर ओछी चोट पड़ती और वह जरा दूर पर गिर पड़ती, तो मैं झपटकर उसे खुद उठा लेता और दोबारा टाँड़ लगाता। गया यह सारी बे—कायदगियाँ देख रहा था; पर कुछ न बोलता था, जैसे उसे वह सब कायदे—कानून भूल गए। उसका निशाना कितना अचूक था। गुल्ली उसके हाथ से निकलकर टन से डंडे से आकर लगती थी। उसके हाथ से छूटकर उसका काम था डंडे से टकरा जाना, लेकिन आज वह गुल्ली डंडे में लगती ही नहीं! कभी दाहिने जाती है, कभी बाएँ, कभी आगे, कभी पीछे।

आध घंटे पदाने के बाद एक गुल्ली डंडे में आ लगी। मैंने धाँधली की—गुल्ली डंडे में नहीं लगी। बिल्कुल पास से गई; लेकिन लगी नहीं।

गया ने किसी प्रकार का असंतोष प्रकट नहीं किया।

'न लगी होगी।'

'डंडे में लगती तो क्या मैं बेईमानी करता?'

'नहीं भैया, तुम भला बेईमानी करोगे?'

बचपन में मज़ाल था कि मैं ऐसा घपला करके जीता बचता! यही गया गर्दन पर चढ़ बैठता, लेकिन आज मैं उसे कितनी आसानी से धोखा दिए चला जाता था। गधा है! सारी बातें भूल गया।

सहसा गुल्ली फिर डंडे से लगी और इतनी जोर से लगी, जैसे बंदूक छूटी हो। इस प्रमाण के सामने अब किसी तरह की धाँधली करने का साहस मुझे इस वक्त भी न हो सका, लेकिन क्यों न एक बार सबको झूठ बताने की चेष्टा करूँ? मेरा हरज ही क्या है। मान गया तो वाह–वाह, नहीं दो–चार हाथ पदना ही तो पड़ेगा। अँधेरे का बहाना करके जल्दी से छुड़ा लूँगा। फिर कौन दाँव देने आता है।

गया ने विजय के उल्लास में कहा–लग गई, लग गई। टन से बोली।

मैंने अनजान बनने की चेष्टा करके कहा–तुमने लगते देखा? मैंने तो नहीं देखा।

'टन से बोली है सरकार!'

'और जो किसी ईंट से टकरा गई हो?'

मेरे मुख से यह वाक्य उस समय कैसे निकला, इसका मुझे खुद आश्चर्य है। इस सत्य को झुठलाना वैसा ही था, जैसे दिन को रात बताना। हम दोनों ने गुल्ली को डंडे में जोर से लगते देखा था; लेकिन गया ने मेरा कथन स्वीकार कर लिया।

'हाँ, किसी ईंट में ही लगी होगी। डंडे में लगती तो इतनी आवाज न आती।'

मैंने फिर पदाना शुरू कर दिया; लेकिन इतनी प्रत्यक्ष धाँधली कर लेने के बाद गया की सरलता पर मुझे दया आने लगी; इसीलिए जब तीसरी बार गुल्ली डंडे में लगी, तो मैंने बड़ी उदारता से दाँव देना तय कर लिया।

गया ने कहा–अब तो अँधेरा हो गया है भैया, कल पर रखो।

मैंने सोचा, कल बहुत–सा समय होगा, यह न जाने कितनी देर पदाए, इसलिए इसी वक्त मुआमला साफ कर लेना अच्छा होगा।

'नहीं, नहीं। अभी बहुत उजाला है। तुम अपना दाँव ले लो।'

'गुल्ली सूझेगी नहीं।'

'कुछ परवाह नहीं।'

गया ने पदाना शुरू किया; पर उसे अब बिलकुल अभ्यास न था। उसने दो बार टाँड़ लगाने का इरादा किया; पर दोनों ही बार हुच गया। एक मिनिट से कम में वह दाँव खो बैठा। मैंने अपनी हृदय की विशालता का परिचय दिया।

'एक दाँव और खेल लो। तुम तो पहले ही हाथ में हुच गए।'

'नहीं भैया, अब अँधेरा हो गया।'

'तुम्हारा अभ्यास छूट गया। कभी खेलते नहीं?'

'खेलने का समय कहाँ मिलता है भैया!'

हम दोनों मोटर पर जा बैठे और चिराग जलते–जलते पड़ाव पर पहुँच गए। गया चलते–चलते बोला–कल यहाँ गुल्ली–डंडा होगा। सभी पुराने खिलाड़ी खेलेंगे। तुम भी आओगे? जब तुम्हें फुरसत हो, तभी खिलाड़ियों को बुलाऊँ।

मैंने शाम का समय दिया और दूसरे दिन मैच देखने गया। कोई दस–दस आदमियों की मंडली थी। कई मेरे लड़कपन के साथी निकले! अधिकांश युवक थे, जिन्हें मैं पहचान न सका। खेल शुरू हुआ। मैं मोटर पर बैठा–बैठा तमाशा देखने लगा। आज गया का खेल, उसका नैपुण्य देखकर मैं चकित हो गया। टाँड़ लगाता, तो गुल्ली आसमान से बातें करती। कल की–सी वह झिझक, वह हिचकिचाहट, वह बेदिली आज न थी। लड़कपन में जो बात थी, आज उसने प्रौढ़ता प्राप्त कर ली थी। कहीं कल इसने मुझे इस तरह पदाया होता, तो मैं जरूर रोने लगता। उसके डंडे की चोट खाकर गुल्ली दो सौ गज की खबर लाती थी।

पदने वालों में एक युवक ने कुछ धाँधली की। उसने अपने विचार में गुल्ली लपक ली थी। गया का कहना था–गुल्ली जमीन में लगकर उछली थी। इस पर दोनों में ताल ठोकने की नौबत आई है। युवक दब गया। गया का तमतमाया हुआ चेहरा देखकर डर गया। अगर वह दब न जाता, तो जरूर मार–पीट हो जाती।

मैं खेल में न था; पर दूसरों के इस खेल में मुझे वही लड़कपन का आनंद आ रहा था, जब हम सब कुछ भूलकर खेल में मस्त हो जाते थे। अब मुझे मालूम हुआ कि कल गया ने मेरे साथ खेला नहीं, केवल खेलने का बहाना किया। उसने मुझे दया का पात्र समझा। मैंने धाँधली की, बेईमानी की, पर उसे जरा भी क्रोध न आया। इसलिए कि वह खेल न रहा था, मुझे खेला रहा था, मेरा मन रख रहा था। वह मुझे पदाकर मेरा कचूमर नहीं निकालना चाहता था। मैं अब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गई है। मैं अब उसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।

शब्दार्थ

व्यसन – बुरी आदत; **थापी** – कुटेला, लकड़ी से बना बैट जैसा दिखने वाला; **गोइयाँ** – साथी, दोस्त; **जमघट** – लोगों की भीड़; **वशीकरण** – वश में करना; **घराँव** – घनिष्ठता, परस्पर मेलजोल का भाव, घर का सा संबंध;

सुधि – याद, स्मृति; **शास्त्र–विहित** – शास्त्र के अनुसार; **शास्त्र–सम्मत** – शास्त्र द्वारा समर्थित; **बेर** – समय; **बे–कायदगियाँ** – जो नियम या कायदे के विरूद्ध हो; **गुच्ची** – गुल्ली डंडा खेलने के लिए बनाया जाने वाला छोटा गड्ढा; **टाँड़** – गुल्ली पर किया गया आघात; **सलूक** – व्यवहार; **साईस** – ताँगा हाँकने वाला; **ज़हीन** – जिसका ज़ेहन तेज हो, मेधावी, प्रतिभावान, समझदार, बुद्धिमान; **जीट** – मौज; **पदना** – दाँव देना; **पदाना** – दाँव लेना।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि गुल्ली–डंडा सब खेलों का राजा है?
2. ''मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था'' लेखक खेल में पराजित होने के बाद भी अपनी ओर 'न्याय का बल' क्यों मानता है और 'वह' (गया) को 'अन्याय पर डटा' क्यों कहता है?
3. पिताजी अपने तबादले से दुःखी थे, जबकि लेखक खुश था। क्यों?
4. बीस साल बाद जब लेखक फिर से उस क़स्बे में पहुँचा, तो उस क़स्बे और लेखक दोनों में क्या–क्या बदलाव हो चुके थे?
5. लेखक के साथ खेलते हुए गया के मन में गुल्ली–डंडा के प्रति वही जोश और उत्साह देखने को नहीं मिला, जो बचपन में हुआ करता था। गया के व्यवहार में इस परिवर्तन के पीछे कौन से कारण रहे होंगे?
6. निम्नांकित कथनों के क्या अभिप्राय हैं :–

   (क) ''वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।''

   (ख) ''हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे।''

पाठ से आगे

AHIH56

1. गुल्ली–डंडा एक ऐसा भारतीय खेल है जिसके लिए पैसे खर्चने की जरूरत नहीं पड़ती। अपने आसपास/परिवेश में प्रचलित ऐसे खेलों की सूची बनाइए। वर्तमान समाज में इन खेलों के प्रति घटते आकर्षण के क्या कारण हो सकते हैं?

2. गुल्ली–डंडा कहानी में इस खेल से जुड़े कुछ शब्द आए हैं; जैसे– दाँव, पदना/पदाना, हुच, गुल्ली आदि। अपने आसपास प्रचलित खेलों से जुड़ी शब्दावलियों की एक सूची बनाइए–

खेल के नाम	खेल से जुड़े शब्द

भाषा के बारे में

1. सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश मुहावरे तथा वाक्य लोकोक्ति कहे जाते हैं। लोकोक्ति लम्बे लोक अनुभव को व्यक्त करने वाला सूत्र वाक्य होता है। कहानी में कई मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है; जैसे–लोट–पोट हो जाना, हर्रे लगे न फिटकरी रंग चोखा आए, पिंड न छोड़ना आदि। इन मुहावरों के अलावा कहानी से अन्य मुहावरे भी ढूँढ़िए और उनका वाक्य में प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट कीजिए।

AHSS6T

2. कहानी में 'बचपन', 'लड़कपन' जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'बच्चा' और 'लड़का' में 'पन' प्रत्यय जोड़ने से यह नया शब्द बना है। 'बच्चा' और 'लड़का' जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं, जबकि 'बचपन' और 'लड़कपन' भाववाचक संज्ञा शब्द हैं। कहानी से जातिवाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर उसका भाववाचक रूप बनाइए–

उदाहरण

जातिवाचक संज्ञा शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द
आदमी	आदमियत
मास्टर	मास्टरी

3. 'सोहन बस्तर में रहता है और **वह** रोज स्कूल जाता है।'

इस वाक्य में **वह** निश्चयवाचक सर्वनाम है, जिसका प्रयोग सोहन के लिए हुआ है। जबकि कहानी से ली गई अग्रलिखित वाक्यों में **वह** का प्रयोग सर्वनाम के रूप में किसी व्यक्ति को सूचित नहीं करता है। हिन्दी भाषा में **वह** सर्वनाम शब्द का प्रयोग कई बार दूर या अनुपस्थित व्यक्ति को सूचित करने के अतिरिक्त भाव या विचार के लिए भी होता है। जैसे–

वह प्रातःकाल घर से निकल जाना, **वह** पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली–डंडे बनाना, **वह** उत्साह, **वह** खिलाड़ियों के जमघट, **वह** पदना और पदाना, **वह** लड़ाई–झगड़े, **वह** सरल स्वभाव, जिससे छूत–अछूत, अमीर–गरीब का बिल्कुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोंचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब .... जब ...

- उपर्युक्त वाक्यों की तरह **वह** का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।
- उसी वक्त भूलेगा जब .... जब ... वाक्य को पूरा कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों से जुड़ी जानकारियों को पत्र–पत्रिकाओं से इकट्ठा कीजिए और उनके जीवन से जुड़ी घटनाओं और प्रसंगों को कक्षा में साझा कीजिए।
2. 'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे ख़राब' समाज में प्रचलित इस मान्यता से आप कहाँ तक सहमत हैं। इस पर कक्षा में वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
3. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित निबंध **खेल भी शिक्षा ही है** को पुस्तकालय/इंटरनेट/शिक्षक की सहायता से ढूँढ़कर पढ़िए और सहपाठियों से इस पर चर्चा कीजिए।
4. क्रिकेट खेलने के लिए किन–किन सामग्रियों की आवश्यकता होती है। इन सामग्रियों की बाजार में कीमत पता कीजिए तथा किसी भी देशी/स्थानीय खेल में आने वाले खर्च से इसकी तुलना कीजिए।

AX2N8G

पाठ 1.3 : अपूर्व अनुभव

तेत्सुको कुरोयानागी

AXBJA4

यूनिसेफ की सद्भावना दूत रहीं ***तेत्सुको कुरोयानागी*** *का जन्म 9 अगस्त 1933 को टोकियो, जापान में हुआ था। मूलतः जापानी भाषा में लिखी गई पुस्तक* ***तोत्तो–चान*** *विश्व साहित्य की एक चर्चित कृति है। इसका अनुवाद विश्व की कई भाषाओं में हो चुका है। यह एक ऐसी अद्भुत स्कूल तोमोए और उसमें पढ़नेवाले बच्चों की कहानी है, जिनके लिए रेल के डिब्बे कक्षाएँ थीं, गहरी जड़ोंवाले पेड़ स्कूल का गेट, पेड़ की शाखा बच्चों के खेलने के कोने। इस अनोखे स्कूल के संस्थापक थे श्री कोबायाशी। लेखिका स्वयं इस स्कूल की छात्रा थीं। उन्हीं के बचपन के अनुभवों पर आधारित पुस्तक* ***तोत्तो–चान*** *का एक अंश है 'अपूर्व अनुभव'।*

सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद तोत्तो–चान के लिए एक बड़ा साहस करने का दिन आया। इस दिन उसे यासुकी–चान से मिलना था। इस भेद का पता न तो तोत्तो–चान के माता–पिता को था न ही यासुकी–चान को। उसने यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ने का न्यौता दिया था।

तोमोए में हरेक बच्चा बाग के एक–एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। तोत्तो–चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जाने वाली सड़क के पास था। बड़ा सा पेड़ था उसका। चढ़ने जाओ तो पैर फिसल–फिसल जाते, पर ठीक से चढ़ने पर जमीन से कोई छह फुट की ऊँचाई पर एक द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। बिल्कुल किसी झूले–सी आरामदेह जगह थी यह। तोत्तो–चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद ऊपर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह सामने दूर तक, ऊपर आकाश को, या नीचे सड़क पर चलते लोगों को देखा करती थी।

बच्चे अपने–अपने पेड़ को निजी संपत्ति मानते थे। किसी दूसरे के पेड़ पर चढ़ना हो तो उससे पहले पूरी शिष्टता से, ''माफ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?'' पूछना पड़ता था।

यासुकी–चान को पोलियो था, इसलिए वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ पाता था और न किसी पेड़ को निजी संपत्ति मानता था। अतः तोत्तो–चान ने उसे अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था। पर यह बात उन्होंने किसी से नहीं कही, क्योंकि अगर बड़े सुनते तो जरुर डाँटते।

घर से निकलते समय तोत्तो–चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी–चान के घर डेनेनचोफु जा रही है। चूँकि वह झूठ बोल रही थी, इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। अपनी नजरें वह जूतों की फीतों पर ही गड़ाए रही। रॉकी उसके पीछे–पीछे स्टेशन तक आया। जाने से पहले उसे सच बताए बिना तोत्तो–चान से रहा नहीं गया।

''मैं यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ने देने वाली हूँ।'' उसने बताया।

जब तोत्तो–चान स्कूल पहुँची तो रेल–पास उसके गले के आसपास हवा में उड़ रहा था। यासुकी–चान उसे मैदान मे क्यारियों के पास मिला। गर्मी की छुट्टियों के कारण सब सूना पड़ा था। यासुकी–चान उससे कुल जमा एक ही वर्ष बड़ा था, पर तोत्तो–चान को वह अपने से बहुत बड़ा लगता था।

जैसे ही यासुकी–चान ने तोत्तो–चान को देखा, वह पैर घसीटता हुआ उसकी ओर बढ़ा। उसके हाथ अपनी चाल को स्थिर करने के लिए दोनों ओर फैले हुए थे। तोत्तो–चान उत्तेजित थी। वे दोनों आज कुछ ऐसा जो करने वाले थे जिसका भेद किसी को भी न पता था। वह उत्तेजना में ठिठिया कर हँसने लगी। यासुकी–चान भी हँसने लगा।

तोत्तो–चान यासुकी–चान को अपने पेड़ की ओर ले गयी। और उसके बाद वह तुरंत चौकीदार के छप्पर की ओर भागी, जैसा उसने रात को ही तय कर लिया था। वहाँ से वह एक सीढ़ी घसीटती हुई लाई। उसे तने के सहारे ऐसे लगाया, जिससे वह द्विशाखा तक पहुँच जाए। वह फुर्ती से ऊपर चढ़ी और सीढ़ी के किनारे को पकड़ लिया। तब उसने पुकारा, ''ठीक है, अब ऊपर चढ़ने की कोशिश करो।''

यासुकी–चान के हाथ–पैर इतने कमजोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी बिना सहारे के चढ़ नहीं पाया। इस पर तोत्तो–चान नीचे उतर आई और यासुकी–चान को पीछे से धकियाने लगी। पर तोत्तो–चान थी छोटी और नाजुक सी, इससे अधिक सहायता क्या करती। यासुकी–चान ने अपना पैर सीढ़ी पर से हटा लिया और हताशा से सिर झुका कर खड़ा हो गया। तोत्तो–चान को पहली बार लगा कि काम उतना आसान नहीं है जितना वह सोचे बैठी थी। अब क्या करे वह?

यासुकी–चान उसके पेड़ पर चढ़े, यह उसकी हार्दिक इच्छा थी। यासुकी–चान के मन में भी उत्साह था। वह उसके सामने गई। उसका लटका चेहरा इतना उदास था कि तोत्तो–चान को उसे हँसाने के लिए गाल फुलाकर तरह–तरह के चेहरे बनाने पड़े।

''ठहरो, एक बात सूझी है।''

वह फिर चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी और हरेक चीज उलट–पुलट कर देखने लगी। आखिर उसे एक तिपाई–सीढ़ी मिली जिसे थामे रहना भी जरुरी नहीं था।

वह तिपाई–सीढ़ी को घसीटकर ले आई तो अपनी शक्ति पर हैरान होने लगी। तिपाई की ऊपरी सीढ़ी द्विशाखा तक पहुँच रही थी।

''देखो, अब डरना मत,'' उसने बड़ी बहन की सी आवाज में कहा, ''यह डगमगाएगी नहीं।''

यासुकी–चान ने घबराकर तिपाई–सीढ़ी की तरफ देखा। तब उसने पसीने से तरबतर तोत्तो–चान को देखा। यासुकी–चान को भी काफी पसीना आ रहा था। उसने पेड़ की ओर देखा और तब निश्चय के साथ पाँव उठाकर पहली सीढ़ी पर रखा।

उन दोनों को यह बिल्कुल भी पता नहीं चला कि कितना समय यासुकी–चान को ऊपर तक चढ़ने में लगा। सूरज का ताप उन पर पड़ रहा था, पर दोनों का ध्यान यासुकी–चान के ऊपर तक पहुँचने में रमा था। तोत्तो–चान नीचे से उसका एक–एक पैर सीढ़ी पर धरने में मदद कर रही थी। अपने सिर से वह उसके पिछले हिस्से को भी स्थिर करती रही। यासुकी–चान पूरी शक्ति के साथ जूझ रहा था, और आखिरकार वह ऊपर पहुँच गया।

''हुर्रे !''

पर अचानक सारी की हुई मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो–चान तो सीढ़ी पर से द्विशाखा पर छलाँग लगा कर पहुँच गई, पर यासुकी–चान को सीढ़ी से पेड़ पर लाने की हर कोशिश बेकार रही। यासुकी–चान सीढ़ी थामे तोत्तो–चान की ओर ताकने लगा। तोत्तो–चान की रुलाई छूटने को हुई। उसने चाहा था कि यासुकी–चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नई–नई चीजें दिखाए।

पर वह रोई नहीं। उसे डर था कि उसके रोने पर यासुकी–चान भी रो पड़ेगा। उसने यासुकी–चान की पोलियो से पिचकी और अकड़ी उँगलियों वाला हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसके खुद के हाथ से वह बड़ा था, उँगलियाँ भी लंबी थीं। देर तक तोत्तो–चान उसका हाथ थामे रही। तब बोली, ''तुम लेट जाओ, मैं तुम्हें पेड़ पर खींचने की कोशिश करती हूँ।''

उस समय द्विशाखा पर खड़ी तोत्तो–चान द्वारा यासुकी–चान को पेड़ की ओर खींचते अगर कोई बड़ा देखता तो वह जरूर डर के मारे चीख उठता। उसे वे सच में जोखिम उठाते ही दिखाई देते। पर यासुकी–चान

को तोत्तो–चान पर पूरा भरोसा था और वह खुद भी यासुकी–चान के लिए भारी खतरा उठा रही थी। अपने नन्हे–नन्हे हाथों से वह पूरी ताकत से यासुकी–चान को खींचने लगी। बादल का एक बड़ा टुकड़ा बीच–बीच में छाया करके उन्हें कड़कती धूप से बचा रहा था।

काफी मेहनत के बाद दोनों आमने–सामने पेड़ की द्विशाखा पर थे। पसीने से तरबतर अपने बालों को चेहरे पर से हटाते हुए तोत्तो–चान ने सम्मान से झुककर कहा, ''मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत है।''

यासुकी–चान डाल के सहारे खड़ा था। कुछ झिझकता हुआ वह मुस्कराया। तब उसने पूछा, ''क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?''

उस दिन यासुकी–चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी जिसे उसने पहले कभी न देखा था। ''तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना,'' यासुकी–चान ने खुश होते हुए कहा।

वे बड़ी देर तक पेड़ पर बैठे–बैठे इधर–उधर की गप्पें लड़ाते रहे।

''मेरी बहन अमरीका में है। उसने बताया है कि वहाँ एक चीज होती है– टेलीविजन।'' यासुकी–चान उमंग से भरा बता रहा था। ''वह कहती है कि जब वह जापान में आ जाएगा, तो हम घर बैठे–बैठे ही सूमो–कुश्ती देख सकेंगे। वह कहती है कि टेलीविजन एक डिब्बे जैसा होता है।''

तोत्तो–चान उस समय यह तो न समझ पाई कि यासुकी–चान के लिए, जो कहीं भी दूर तक चल नहीं सकता था, घर बैठे चीजों को देख लेने के क्या अर्थ होंगे।

वह तो यह ही सोचती रही कि सूमो पहलवान घर में रखे किसी डिब्बे में कैसे समा जाएँगे? उनका आकार तो बड़ा होता है। पर बात उसे बड़ी लुभावनी लगी। उन दिनों टेलीविजन के बारे में कोई नहीं जानता था। पहले–पहले यासुकी–चान ने ही तोत्तो–चान को उसके बारे में बताया था।

पेड़ मानो गीत गा रहे थे और दोनों बेहद खुश थे। यासुकी–चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था।

शब्दार्थ

शिविर – तंबू आदि लगाकर बनाया गया यात्री निवास, अस्थाई पड़ाव; **सभागार** – वह स्थान जहाँ सभा होती है, सभाकक्ष; **भेद** – राज की बात, गुप्त बात; **द्विशाखा** – पेड़ की दो शाखाएँ या डाल; **हताशा** – आशा का न रहना, निराशा।

अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ पर चढ़ना एक सुखद अनुभव है, इस पर अपने विचार रखिए और बताइए कि यासुकी–चान इस अपूर्व अनुभव से वंचित क्यों था?
2. ''तोत्तो–चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी–चान के घर डेनेनचोफु जा रही है' यह बात कहते हुए उसकी नजरें जूतों के फीते पर क्यों गड़ी रहीं? वह कौन सी स्थितियाँ होती हैं, जब आप अपने बड़ों से आँखें चुराते हैं। लिखिए।
3. तोत्तो–चान की हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी–चान उसके पेड़ पर चढ़े, आपके अनुसार वह कौन–कौन से कारण रहे होंगे जिसकी वजह से तोत्तो–चान उसे अपने पेड़ पर चढ़ाना चाहती थी?
4. ''तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना'' यासुकी–चान के इस कथन को ध्यान में रखते हुए पेड़ पर चढ़ने के बाद हुई खुशी को अपने शब्दों में लिखिए।
5. तोत्तो–चान द्वारा यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाना एक जोखिम भरा काम था। आपके अनुसार तोत्तो–चान का यह कार्य उचित था या अनुचित? अपने विचार रखिए।
6. दृढ़निश्चय और कठिन परिश्रम से पेड़ पर अपने मित्र को चढ़ाने के बाद तोत्तो–चान और यासुकी–चान को जिस प्रकार की खुशी हुई, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
7. ''यासुकी–चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था'' सोचकर बताइए कि लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

पाठ से आगे

1. तोत्तो–चान द्वारा यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाना साहसिक कार्य था। हम अपने दैनिक जीवन में कौन–कौन से बहादुरी या साहस के कार्य करते हैं। उदाहरण सहित बताइए।
2. यासुकी–चान जैसे शारीरिक चुनौतियों वाले व्यक्ति के प्रति सहानुभूति जताना अथवा असंवेदनशीलता दोनों ही प्रकार के व्यवहार उन्हें ठेस पहुँचाते हैं। आपकी समझ से उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?

AXKFBR

3. तोत्तो–चान ने माता–पिता से झूठ बोलकर अपने मित्र यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाने जैसा साहसिक कार्य किया। आपने भी यदि किसी की सहयोग के लिए या किसी अच्छे कार्य के लिए झूठ का सहारा लिया हो, तो निःसंकोच उल्लेख करें।
4. यासुकी–चान जैसे शारीरिक चुनौतियों से जूझने वाले व्यक्तियों के लिए विशेष सुविधा की आवश्यकता होती है। विद्यालयों अथवा सार्वजनिक स्थलों पर ऐसे कौन–कौन से भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। आपसी चर्चा के पश्चात् एक सूची तैयार कीजिए।

भाषा के बारे में

1. **द्विशाखा, तिपाई** जैसे शब्दों का उल्लेख इस पाठ में हुआ है। इन शब्दों का पहला पद संख्यावाची विशेषण है। इस तरह के शब्दों से बने संख्यावाची पदों को द्विगु समास कहते हैं। जब संख्यावाची पदों से किसी विशेष अर्थ का बोध होता है तब वहाँ बहुब्रीहि समास होता है, जैसे– दशानन। द्विगु और बहुब्रीहि समास के पाँच–पाँच उदाहरण लिखिए।

2. नीचे दी गई पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करें–

   यासुकी–चान डाल के सहारे खड़ा था कुछ झिझकता हुआ वह मुस्कराया तब उसने पूछा क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ

   उस दिन यासुकी–चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना यासुकी–चान ने खुश होते हुए कहा

3. 'इस **भेद** का पता न तो तोत्तो–चान के माता–पिता को था न ही यासुकी–चान को।' इस वाक्य में **भेद** शब्द का प्रयोग राज़ या गुप्त बात के लिए हुआ है। **भेद** शब्द का प्रयोग कई बार अंतर बताने (जैसे–मनुष्य और पशु में **भेद** होता है।), प्रकार बताने (संज्ञा शब्द के तीन भेद होते हैं।) आदि के लिए होता है। आप भी **भेद** शब्द का विभिन्न अर्थो में प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाइए।

AXUBDE

4. कुछ क्रियाओं से संज्ञा शब्द बनते हैं जैसे– रोना से रुलाई, धोना से धुलाई इत्यादि। यहाँ **ओ–'उ'** में तथा **आ–'ई'** में बदल जाते हैं। कुछ इसी तरह की क्रियाओं से संज्ञा शब्द बनाइए और यह भी देखिए कि इसके लिए उनमें किस तरह के बदलाव की जरूरत पड़ती है?

योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से या शिक्षकों की मदद से निम्नलिखित के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए और पढ़िए।
   - शिवानी की कहानी 'अपराजिता', हेलेन केलर की जीवनी, यशपाल की कहानी 'गूँगे'।

AY47F2

2. शारीरिक चुनौती वाले व्यक्तियों का समाज के प्रति क्या दृष्टिकोण होता है उनसे चर्चा कर लिखिए।
3. समास व इसके भेदों पर अपने शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कीजिए।

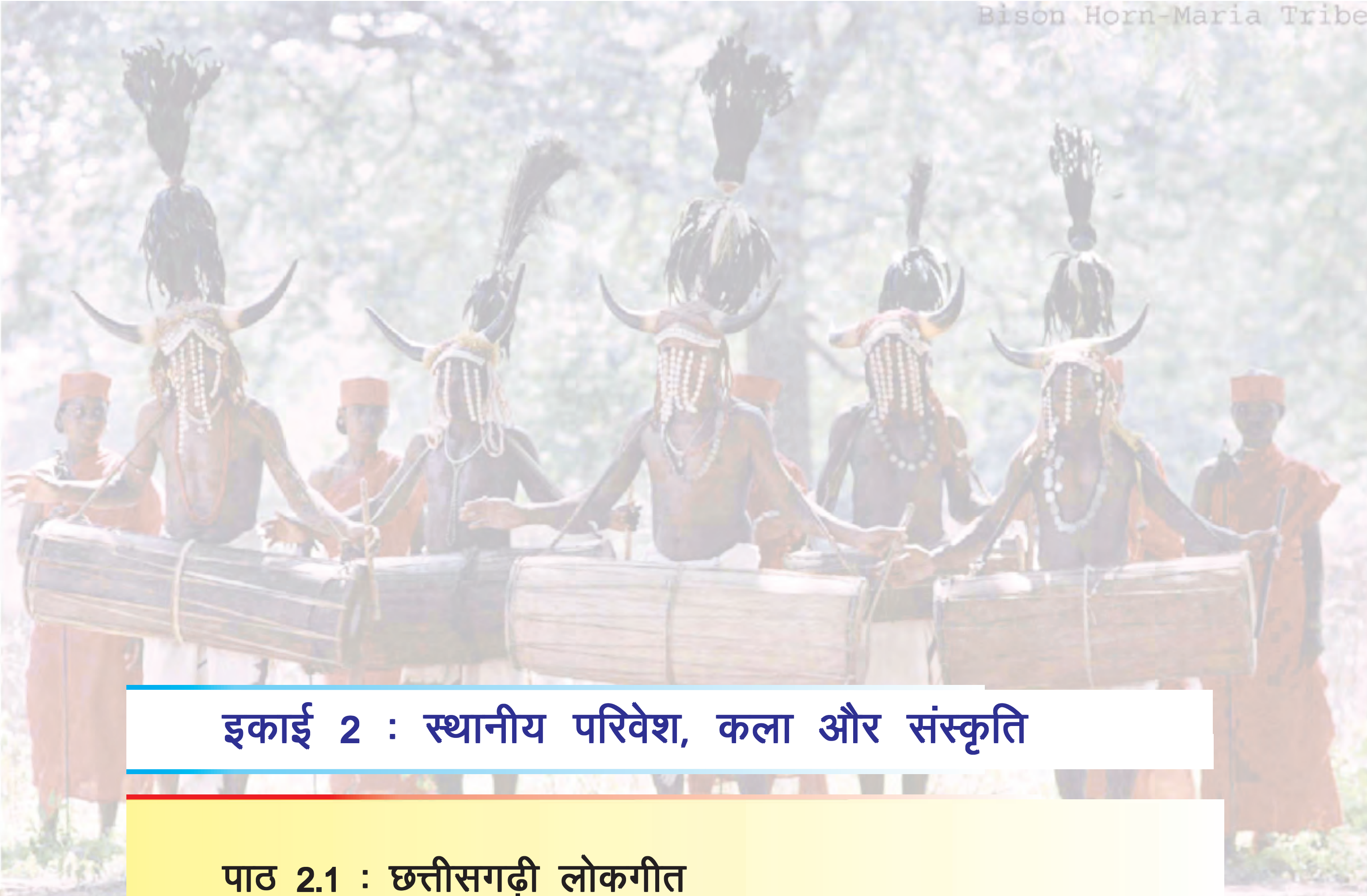

इकाई 2 : स्थानीय परिवेश, कला और संस्कृति

पाठ 2.1 : छत्तीसगढ़ी लोकगीत

पाठ 2.2 : गद्दार कौन

पाठ 2.3 : कलातीर्थ : खैरागढ़ का संगीत विश्वविद्यालय

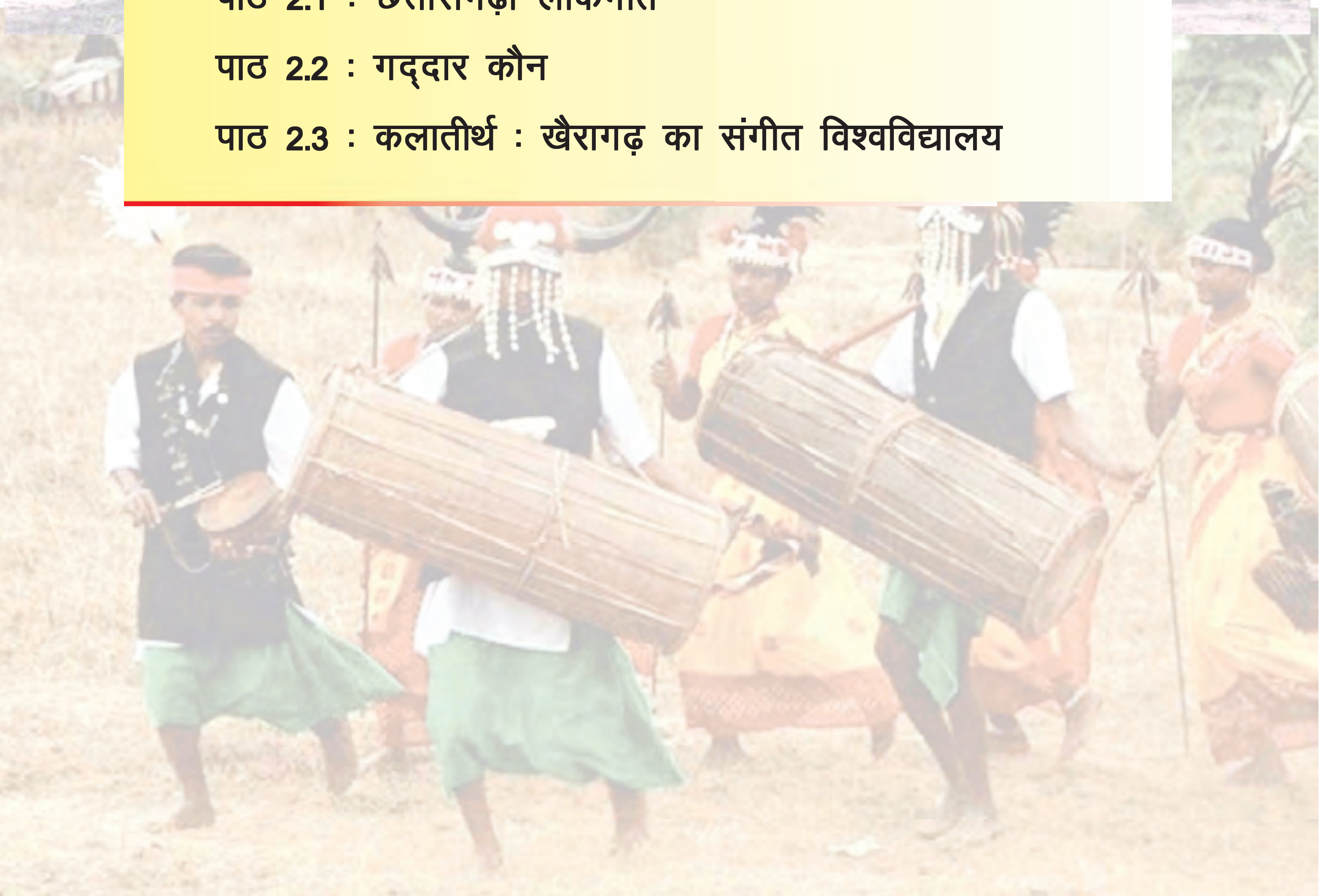

इकाई 2

स्थानीय परिवेश, कला और संस्कृति

देश के अन्य राज्यों की तरह छत्तीसगढ़ भी कला, संस्कृति, और सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से समृद्ध है। यहाँ की लोकसंस्कृति के विभिन्न रंग हमें लोकगीतों, नृत्यों, कलाओं एवं लोककथाओं में दिखाई देते हैं। यह विविधता ही इसकी सुन्दरता है, इसे जानना आवश्यक है। अपने परिवेश की सांस्कृतिक एवं सौन्दर्य की धरोहरों को पहचानना और उसकी सराहना करना तथा उनमें आनंद ले सकना सभी के लिए आवश्यक है। विद्यार्थियों के सृजनात्मक मस्तिष्क को हमारी संस्कृति में मौजूद विशिष्टताओं को अपनाने एवं प्रोत्साहित करने के लिए इस इकाई में तीन पाठ सम्मिलित किए गए हैं।

डॉ. जीवन यदु द्वारा लिखित लेख **छत्तीसगढ़ी लोकगीत** हमें छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा से परिचित कराकर सौन्दर्यबोध का विकास करने और इस अनूठी संस्कृति को इसकी विविधता और समृद्धि सहित बचाए रखने हेतु प्रेरित करता है।

गद्दार कौन लोककथा हमारी परंपराओं में निहित जीवन मूल्यों से हमें परिचित कराती है। अवांछित और अनैतिक मूल्यों को अस्वीकार कर सत्य और श्रेष्ठ का वरण करने का संदेश देती है। यह लोककथा हमारे उच्च सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है।

अपने परिवेश की सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान कराता हुआ पाठ **कलातीर्थ : खैरागढ़ का संगीत विश्वविद्यालय** एशिया में अपनी तरह के अनूठे इस विश्वविद्यालय से न केवल हमें परिचित कराता है बल्कि गुणवत्ता और श्रेष्ठता पर गर्व करने हेतु प्रेरित भी करता है।

आशा है इन पाठों के माध्यम से कला—संस्कृति की शिक्षा एक आवश्यक उपकरण एवं विषय के रूप में राज्य की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनेगी और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करेगी।

पाठ 2.1 : छत्तीसगढ़ी लोकगीत

डॉ. जीवन यदु

AYD3GP

लोकसाहित्य के अध्येता और छत्तीसगढ़ के प्रमुख गीतकारों में एक विशेष नाम है डॉ. जीवन यदु का। उनका जन्म 1 फरवरी सन् 1947 ई. को खैरागढ़ में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा भी यहीं हुई। 'लोकसाहित्य' में आपको डॉक्टरेट की उपाधि मिली, कविता आपकी मुख्य विधा है, पर विचारपरक लेख भी आपने बहुत लिखे हैं। ***झील की मुक्ति के लिए*** *(काव्य संग्रह),* ***अनकहा है जो तुम्हारा*** *(गीत संग्रह),* ***छत्तीसगढ़ी कविता– संदर्भ एवं मूल्य*** *(आलोचना),* ***अइसनेच रात पहाही*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य नाटिका) तथा* ***धान के कटोरा*** *(कविता संग्रह) आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। नवसाक्षरों के लिए लिखी आपकी रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में खैरागढ़ में ही निवासरत हैं। प्रस्तुत लेख उनके निबंध संग्रह* ***लोकस्वप्न में लिलिहंसा*** *से लिया गया है।*

लोकगीत 'लोक' की आंतरिकता का लयबद्ध और संगीतबद्ध अभिव्यक्ति है। 'लोक' ने अपनी जिस आंतरिकता के प्रकाशन के लिए विभिन्न माध्यम अपनाए, वह आंतरिकता युगीन व्यवस्थाओं के दबावों से कभी मुक्त नहीं रही और न कभी हो सकती है। अतः लोकगीत 'लोक' की सांस्कृतिक यात्रा का ऐसा साक्षी है, जो अपनी परंपरा में नवीनता का पक्षधर है। आज के लोकगीत–संगीत आदिम गीत–संगीत नहीं हैं, यद्यपि उन्होंने उनसे रस अवश्य ग्रहण किया होगा। मनुष्य के शिकारी जीवन से निकलकर पशुपालक व्यवस्था में प्रवेश करने के बाद ही लोकगीत और लोकसंगीत ने रूप ग्रहण किया था। फिर वे कृषि व्यवस्था और सामंती व्यवस्था को पार कर, आज इस जटिल युग में अपने परिवर्तित रूप में पहुँचे हैं। लोक की आंतरिकता पर उन सभी व्यवस्थाओं का असर रहा है। लोकगीतों में उन व्यवस्थाओं की स्मृतियाँ, अवशेषादि इसीलिए आज भी मिलते हैं। उन व्यवस्थाओं को लेकर लोकमानस पर जो प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हीं से लोक साहित्य सृजित हुआ, जिसका एक बड़ा हिस्सा संगीतमय है।

चूँकि लोकमानस एक–सा होता है, अतः लोकगीतों के आंतरिक एवं बाह्य बुनावट को क्षेत्रान्तर अधिक प्रभावित नहीं करता। किसी विशिष्ट व्यवस्था में रहते हुए दुख और सुख की, असुरक्षा और संघर्ष की, जय और पराजय की अनुभूतियों का कलात्मक प्रकटीकरण लोक की सांस्कृतिक अनिवार्यता है। अतः यदि हम छत्तीसगढ़ क्षेत्र के लोकगीतों का अध्ययन करें, तो भी सारे क्षेत्रों के लोकगीतों की मूल प्रकृति, बनावट, बुनावट गुण–धर्म आदि स्पष्ट हो जाएँगे।

लोकगीत चूँकि सामाजिक व्यवस्थाओं और परंपराओं की देन हैं और उनकी रचना किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा न होकर, उन सामान्य व्यक्तियों द्वारा होती है जिनका व्यक्तित्व सामाजिक व्यक्तित्व में पूरे तौर पर रूपान्तरित अथवा समाहित हो चुका है। लोकगीतकारों और लोकगायकों के माध्यम से एक पूरी जाति अपनी बात समवेत सुर में रखती है। यही कारण है कि लोकगीतों में व्यक्ति विशेष के बदले पूरी जाति का व्यक्तित्व परिलक्षित होता है।

लोकगीतों में ऐसे गीतों का मिलना असंभव नहीं, तो मुश्किल ज़रूर है, जो 'अकेले आदमी की पुकार' या 'अरण्यरोदन' बनकर लांछित हों। क्योंकि :

''डहर म रेंगय, हलाए डेरी हाथ।

अकेल्ला झन रेंगबे, बनाले संगी साथ।।''

(भावार्थ– बायाँ हाथ हिलाते हुए राह में अकेले मत चलो, किसी को अपना साथी बना लो।)

– जैसे विचारों को लेकर लोक जीवन चलता है।

दीपावली के अवसर पर छत्तीसगढ़ में 'सुआगीत' गाने की परंपरा है। चूँकि लोकगीतों में सुख और दुख दोनों का सामाजीकरण होता है, अतः सुआगीत की नारी पीड़ा समूची नारी जाति की पीड़ा बन जाती है।

''चंदा सुरुज तोर पैंया परत हँव,

तिरिया जनम झन देबे न रे सुआ न।

पहली गवन करि डेहरी बैठारे न रे सुआ न,

धनि छोड़ चले बनिझार।।

(भावार्थ– हे चाँद और सूरज, मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ अगले जन्म में मुझे स्त्री मत बनाना। गौना कराने के बाद मैं पहली बार अपने पति के घर आई हूँ, और मेरे पति है, कि मुझे यहाँ अकेली छोड़कर खुद काम पर चले गए हैं।)

''तुलसी के बिरवा जब झुरमुर होइ है,

रे सुआ न, मोर मयारू गए रन जूझ ।।''

यह और बात है कि सुआगीत की नारी–पीड़ा मध्य युगीन नारी–पीड़ा है, तब नारी होना अपने आप में पीड़ादायक बात मानी जाती थी। उन नारियों की करुणा लोकमानस में लगातार घुल रही है। इससे एक बात और स्पष्ट होती है, कि लोकगीतों में इतिहास छुपा होता है, उनके भावों में ही नहीं, उनके शब्दों में भी इतिहास की झलक होती है–

''पान खाय सुपारी खाय

सुपारी के दुइ फोरा।

रंग–महल में बइठो मालिक

राम–राम लौ मोरा। ''

'राउत नाचा' के इस दोहे में दो शब्द – 'रंगमहल' और 'मालिक' सामंती व्यवस्था की याद दिलाते हैं, जो लोकमानस में घुल–मिल गए हैं।

लोकगीतों के शब्द और धुन, दोनों में मस्ती होती है। लोकजीवन उस मस्ती का अमृत पीकर अपने दुख को भी भूल जाता है। श्रृंगार और प्रेम की खुली अभिव्यक्ति लोकजीवन की उसी मस्ती का परिणाम है।

''बटकी म बासी अउ चुटकी म नून,

मैं गावत हौं ददरिया, तैं कान दे के सुन।''

लोकजीवन 'नून और बासी' खाकर भी ददरिया की मस्ती में डूब सकता है, श्रृंगार का सृजन कर सकता है और प्रेम को शब्द दे सकता है।

''अमली के लकड़ी, काटे म कटही।

तोर मोर पिरीत हा मरे म छुटही।।''

पूर्व में कहा जा चुका है कि लोकगीत लोक की सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी है। लोकसंस्कारों की पूरी छाप लोकगीतों पर होती है, उनमें न केवल स्थूल लोकसंस्कार (कर्मकांड) ही प्रदर्शित होते हैं, वरन ऐसे लोकसंस्कार भी चित्रित होते हैं जो लोकस्वभाव में घुस कर लोकचरित्र में शामिल हो चुके हैं। उदाहरण के तौर पर विवाह–संस्कार का यह गीत लिया जा सकता है–

''ददा तोर लानिथै हरदी–सुपारी वो,

दाई लानय तिला तेल।

कोन चढ़ाथय तोर मन भर हरदी वो,

कोन देवय अँचरा के छाँव।

फुफू चढ़ावै तोर तन भर हरदी वो,

दाई देवय अँचरा के छाँव।''

(भावार्थ– तुम्हारे पिता हल्दी–सुपारी लाते हैं और माँ तिल का तेल लाती है। कौन तुम्हें मन भर हल्दी चढ़ाएगा? कौन तुम्हें अपने आँचल की छाँव देगा? बुआ तुम्हारे तन पर हल्दी चढ़ाएगी और माँ अपने आँचल की छाँव देगी।)

इसी तरह इस गीत में सारे रिश्तेदारों को जगह दी जाती है। यदि हम इसमें गहरे उतरें तो लोकस्वभाव को देख और समझ पाएँगे। सहयोग लोक का स्वभाव है। विवाह जैसे कार्यों में सारे रिश्तेदारों का सहयोग होता है। उस सहयोग को लोकगीतकार सूक्ष्मता से रेखांकित करता है। ऐसे गीत आत्मीय वातावरण निर्मित करने में सक्षम होते हैं। इसी तरह एक विवाह गीत में रिश्तों के सर्वमान्य स्वभाव को रेखांकित किया गया है।

लोकगीत जनजीवन को पूरी बारीकी से खोलते हैं। यद्यपि वे अपनी ऊपरी परत से सामान्य लगते हैं, लेकिन उनमें लोकजीवन के संस्कार, व्यवहार और स्वभाव की गहराई होती है।

''देतो दाई, देतो दाई अस्सी वो रुपैया,

सुंदरी ला लातेव मैं बिहाय।

''तोर बर लानहूँ दाई रँधनी–परोसनी,

मोर बर घर के सिंगार।''

उपरांकित नहडोरी गीत में नायक अपनी माँ से निवेदन करता है कि हे माँ! मुझे अस्सी रुपए दे दो, जिससे मैं सुंदरी को ब्याह कर, आपके लिए राँधने–परोसने वाली और अपने घर का श्रृंगार ला सकूँ। इन चार पंक्तियों में कई बातें स्पष्ट होती हैं। पहले तो यह कि लोकजीवन में विवाह ज्यादा खर्चीला नहीं होता। नायक अस्सी रुपए में सुंदरी नायिका से विवाह कर सकता है। यह तब की कल्पना हो सकती है, जब लोकजीवन में अस्सी रुपए का कोई बड़ा अर्थ रहा होगा। दूसरी बात यह कि उस विवाह से, नायक अपने लिए सिर्फ पत्नी ही नहीं लाएगा, अपनी माँ के लिए राँधने–परोसनेवाली भी लाएगा। वह 'राँधने–परोसनेवाली' उसकी पत्नी ही नहीं, उस घर का श्रृंगार भी होगी। इस तरह इससे छत्तीसगढ़ के लोकजीवन की आर्थिक स्थिति, लोकजीवन का स्वप्न, लोक जीवन की भीतरी आत्मीय दुनिया आदि एक साथ स्पष्ट होते हैं।

लोकगीत सहज संप्रेष्य होते हैं। इसके कुछ कारण हैं– पहला, लोकगीत किसी एक व्यक्ति की अभिव्यक्ति नहीं हैं। दूसरा, लोकगीत समूह की मानसिकता पर आधारित होते हैं। तीसरा, लोकगीत विचारों के वाहक ही नहीं, रंजन का साधन भी हैं और चौथा, लोकजीवन की सहजता लोकगीतों को असहज नहीं होने देती। 'जँवारा–गीत' की निम्नांकित पंक्तियाँ इसकी पुष्टि करती हैं–

''माता फूल गजरा गूँथव हो मालिन के

देहरी, हो फूल गजरा।

काहेन फूल के गजरा, काहेन फूल के हार।

काहेन फूल के तोर माथ मटुकिया, सोलहों सिंगार।

चंपा फूल के गजरा चमेली फूल के हार।

चमेली फूल के माथ मटुकिया, सोलहों सिंगार।''

इस लोकगीत में अध्यात्म या भक्ति के स्थान पर लोकजीवन में देवी माँ की कल्पना भी सादगीपूर्ण है– अपनी खुद की माँ की तरह। सोने–चाँदी के गहनों के स्थान पर फूलों के गहने हैं, जो लोक को सुलभ है, वही लोक का सत्य है। लोक की सादगी ही लोक का ऐश्वर्य है। एक व्यक्ति की अभिव्यक्ति में ऐश्वर्य का रूप इससे अलग होता है। वह अभिव्यक्ति सहज संप्रेष्य नहीं होती है। समूह की मानसिकता पर आधारित होने के कारण

लोकगीतों में जीवन के व्यवहारों का सामान्यीकरण हो जाता है। अतः हर आदमी के हृदय को गीत के लय और शब्द छू सकें।

लोकगीतों में बहुत से गीत ऐसे मिलेंगे जिनमें चित्रों की रचना हुई है। कथात्मक गीतों में यह बात निश्चित रूप से होती है। लोकगीतकार चित्रों की रचना इस तरह करते हैं कि श्रोताओं को वह घटना अपनी आँखों के सामने घटती–सी प्रतीत होती है। 'पंडवानी' की इन पंक्तियों को बतौर उदाहरण रख सकते हैं–

''रानी के नेवता कीचक पावे जी,

साजे सिंगार राजा चलत हावै न,

माथे म मुकुट राजा बाँधत हावै जी,

काने म कुंडल राजा पहिरत हावै जी,

गले म गजमुक्ता के हार सोहै जी,

इन पंक्तियों में विराट राजा महाबाहु के साले और राज्य के सेनापति कीचक के उस शृंगार का चित्रात्मक वर्णन है, जिसे उसने सैरंध्री (द्रौपदी) के कक्ष में जाते समय धारण किया था। इसी तरह 'पंडवानी' के सेना– प्रयाण के दृश्य को लोक गीतकार ने चित्र और ध्वनि के माध्यम से उभारा है।

लुहँगी, साँप सँलगनी,

हाथी हदबद, गदहा गदबद,

घोड़ा सरपट, पैदल रटपट,

सेना करिन पयान।'

चूँकि लोकप्रकृति 'मुक्ति' की हामीदार है, मोक्ष की नहीं। अतः लोकसाहित्य में आए चमत्कारी देवता–लोक को भौतिक सुविधा प्रदान करने वाले लगते हैं। गोपालक जातियाँ 'बाँस गीत' गाती हैं–

''पहली धरती अउ पिरथी, दूसर बंदव अहिरान

तीसर बंदव गाय– भँइस ला, काटय चोला के अपराध।

चौथे बंदव नोई कसेली, राउत के करे प्रतिपाल।

पँचहे बंदव अहिर पिलोना, जनमें हे गोपी गुवाल।''

(भावार्थ– पहले धरती को प्रणाम करता हूँ, दूसरा प्रणाम सभी अहीरों को, तीसरा प्रणाम गाय–भैंसों को करता हूँ जिनकी सेवा से पाप कट जाते हैं, चौथा प्रणाम नोई और कसेली को जिनसे मेरी आजीविका चलती है, पाँचवें यादव कुल को प्रणाम जिसमें श्रीकृष्ण और गोपी ग्वालों का जन्म हुआ था।)

'मतराही' जाने से पहले राउत अपने घर का भार अपने गृह देवता पर इस तरह डालता है, जैसे वे उसके घर के कोई बुजुर्ग हों–

'' बोकरा लेबे के भेड़ा रे, या लेबे रकत के धार,

मैं तो जावत हौं मतराही, तोला लगे हे घर के भार।''

(भावार्थ– हे गृह देवता! तुम चढ़ावे के रूप में चाहे तो बकरा ले लो या चाहो भेड़ ले लो या फिर मेरे रक्त की धार ही ले लो। चूँकि मैं मतराही जा रहा हूँ इसलिए घर की सारी जिम्मेदारी अब तुम्हारी है।)

लोकगीतकारों ने संसार की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए इसी तरह जगत को सत्य माना है। ''हरदाही– गीत' की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

''खेल ले गोंदा जियत भर ले।

ये चोला नइ आवय घेरी–बेरी।''

लोकगीतों में विरोध का स्वर व्यंग्य में फूटता है। जमींदारी प्रथा से पीड़ित व्यक्ति अपने विरोध को प्रकट करने का मौका ढूँढ ही लेता है। 'मँड़ई' के समय राउत अपने दोहे में 'ठाकुर' को भी नहीं बख्शता–

''गाय बइला के सींग म, मैं हा देखँव माटी।

ठाकुर पहिरे सोना चाँदी, ठकुराइन पहिरे घाँटी।''

इस तरह एक दोहे का उदाहरण और लिया जा सकता है–

''जइसे मालिक लिये–दिये, तइसे देबो असीस।''

इस पंक्ति में 'लिये–दिये' और 'तइसे देबो' शब्द का एक विशिष्ट संबंध बनाकर वे व्यंग्यार्थ प्रकट करते हैं। यदि ठीक–ठाक लिया–दिया गया होगा, तभी हृदय से आशीर्वाद मिल सकता है, वरना नहीं।

लोकसाहित्य अपने परिवर्तन में ही विकास पाता है। वह इतिहास का हम–कदम होता है। लोकगीतकार जब अपने युगबोध को स्वर देता है तब–

''पीपर के पाना हलर– हइया।

अँगरेजवा के राज कलर– कइया।''

या

''नरवा के तिर हा दिखत हे हरियर।

टोपी वाला नइ दिखय, बदे हौं नरियर।''

(भावार्थ– नदी के किनारे हरे–भरे हो गए हैं, मुझे टोपी वाला नहीं दिख रहा है इसके लिए मैंने नारियल के साथ मन्नत माँगी है।)

जैसी रचनाएँ लोकजीवन को आंदोलित करने लगती हैं। नाचा–गम्मतों में लोकगायक ज्वलंत समस्याओं को लेकर जीवंत अभिव्यक्ति देते हैं। इस तरह छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के माध्यम से हम यहाँ के समग्र लोकजीवन और लोकसंस्कृति को समझ सकते हैं।

टीप : कोष्टक में दिए गए भावार्थ रचनाकर के नहीं है। इसे विद्यार्थियों को समझने हेतु लिखा गया है।

शब्दार्थ

साक्षी – गवाह; **लोकजन** – आम जनता; **बाहृय** – बाहरी; **क्षेत्रांतर** – क्षेत्रों के बीच अंतर; **रूपांतरित** – परिवर्तित; **परिलक्षित** – दिखाई; **लांछित** – कलंकित; **डहर** – रास्ता; **डेरी** – बायाँ; **झन रेंगबे** – मत चलना; **झुरमुर** – मुरझाना; **मयारू** – प्रिय; **नून** – नमक; **दुइ फोरा** – फोड़कर दो भाग किया हुआ; **फुफू** – बुआ; **रँधनी** – पकाने की (का); **परोसनी** – परोसने की; **मटुकिया** – मुकुट; **घाँटी** – लोहे की बड़ी घंटी जो पशुओं के गले में पहनाई जाती है; **असीस** – आशीष; **नहडोरी** – विवाह के समय वर या वधू के स्नान की प्रक्रिया; कलर–कइया – झगड़ा कलह; **नोई** – गाय बाँधने की रस्सी; **कसेली** – दूध दुहने का बर्तन; **मतराही** – यादव जाति के द्वारा भाईदूज के दिन मनाया जाने वाला पर्व (मातर–पर्व)।

अभ्यास

पाठ से

1. क्षेत्रीय लोकगीतों में पाई जाने वाली समानताएँ क्या–क्या हो सकती हैं?
2. सुआगीत की विशेषताएँ लिखिए।
3. राउत नाचा के दोहों में से उदाहरणार्थ कोई दोहा लिखिए जिससे सामंती व्यवस्था की याद आती हो।
4. 'मतराही' क्या है?
5. छत्तीसगढ़ के भक्ति संबंधी लोकगीत कौन–कौन से हैं?
6. लोकगीत सहज संप्रेष्य क्यों होते हैं?
7. पाठ में दिए गए कौन–कौन से लोकगीत पर्वों से संबंधित हैं?

पाठ से आगे

AYLYIC

1. आपके आसपास ऐसे कौन–कौन से लोकगीत हैं जो–

   (क) केवल पुरुषों के द्वारा गाए जाते हैं?

   (ख) केवल महिलाओं के द्वारा गाए जाते हैं?

   (ग) पुरुषों और महिलाओं के द्वारा सम्मिलित रूप से गाए जाते हैं?

2. जैसे होली के अवसर पर 'फाग गीत' गाए जाते हैं, वैसे ही अन्य पर्वों पर कौन–कौन से लोकगीत गाए जाते हैं?
3. विवाहगीतों में हास्य–व्यंग्य कहाँ देखने को मिलता है? उदाहरण सहित लिखिए।
4. सुआगीतों का संकलन कर उनके विषय को लिखिए।
5. सुआ, पंथी, कर्मा और राउत नाचा में गीत के साथ किए जा रहे नृत्य की पोशाक और प्रयुक्त अन्य सामग्रियों की सूची बनाइए।
6. लोककथाओं के आधार पर रचे गए लोकगीतों के नाम लिखिए।
7. पंडवानी में गाई गई कथा के किसी एक प्रसंग को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा के बारे में

1. सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वास्तविक आदि शब्द पाठ में आए हैं। इनमें मूल शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगा है। इनके मूल शब्दों को पहचानकर लिखिए तथा ऐसे ही तीन उदाहरण और लिखिए।
2. 'अर्थ' तथा 'रस' ऐसे शब्द हैं जिनके एक से अधिक अर्थ हैं। आप ऐसे ही और पाँच शब्द खोजकर लिखिए।
3. पाठ से निम्नांकित शब्द लिए गए हैं। इन्हें स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्दों के रूप में पहचानकर अलग कीजिए।

   प्रकाशन, व्यवस्था, माध्यम, परंपरा, नवीनता, संगीत, रस, लोकगीत, स्मृतियाँ, प्रतिक्रियाएँ।

पुल्लिंग शब्द	स्त्रीलिंग शब्द
उदाहरण– प्रकाशन	परंपरा

BB17YH

4. निम्नांकित शब्दों का उपयोग करते हुए एक कहानी लिखिए–

   शिकारी, किसान, चरवाहा, जंगल, बाँसुरी, संगीत, वन्य–पशु, चिड़िया, शेर, चरवाहा, राजा, भय, पुरस्कार, प्रसन्नता, दरबार।

5. 'लोक' शब्द में गीत जोड़कर बना लोकगीत। आप 'लोक' शब्द के साथ अन्य शब्द जोड़कर कितने शब्द बना सकते हैं? लिखिए।

6. निम्नांकित शब्द एक थीम की तरह दिए गए हैं। आपको इस थीम से संबंधित और शब्द लिखने हैं। यह खेल नीचे दिए गए उदाहरण की तरह होगा, याद रहे आपके शब्द उस 'थीम' के अंतर्गत ही होने चाहिए।

उदाहरण–

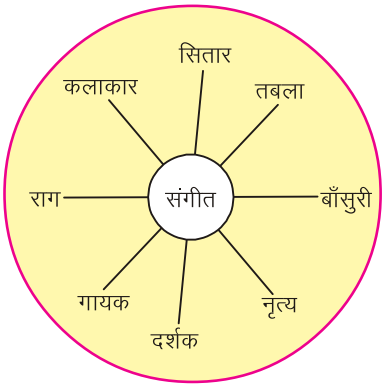

(क) वर्षा (ख) विद्यालय

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी विवाह गीतों का संकलन कर एक फाइल बनाइए।
2. लोकगीतों के साथ प्रस्तुत किए जाने वाले नृत्यों के चित्र संकलित कर उनकी फाइल बनाइए।
3. यहाँ 'जसगीत' की कुछ पंक्तियाँ दी जा रही हैं, इन्हें पढ़िए और समूह में गाइए।

माँ आशीष देबे हो,
तोरे सरन मा आयेन माँ, आशीष देबे हो
हम लइका हन हमला तैं हा
कभु नहीं बिसराबे वो
माँ आशीष देबे हो,
तोरे सरन मा आयेन माँ आशीष देबे हो।
तहीं भवानी तहीं शारदा तहीं हवस जगदंबा
तोर प्रतापे तोड़िन वो बेंदरा–भालु मन गढ़ लंका
माँ आशीष देबे हो
तोरे सरन मा आयेन माँ आशीष देबे हो।

BBA41J

पाठ 2.2 : गद्दार कौन

BBIZ37

नारायण लाल परमार

*नारायण लाल परमार का जन्म 1 जनवरी 1927 को हुआ। वे छत्तीसगढ़ में नई कविता के प्रारंभिक कवियों में से एक थे। वे हिंदी और छत्तीसगढ़ी के ख्यातिनाम कवि थे। बच्चों के लिए भी उन्होंने कई विधाओं में बहुत–सी किताबें लिखीं। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– **रोशनी का घोषणा पत्र, काँवर भर धूप, खोखले शब्दों के खिलाफ, सब कुछ निष्पंद है** तथा **विस्मय का वृंदावन** साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें मुक्तिबोध सम्मान मिला। 27 अप्रैल 2003 को उनका निधन हुआ।*

नवलगढ़ राज्य में यह प्रथा चली आ रही थी कि हर साल दशहरे के दिन राजधानी में एक बड़ा मेला भरता। प्रजा का हर व्यक्ति राजा को अपनी शक्ति के अनुसार भेंट चढ़ाता, राजमहल खूब सजाया जाता। नगर में कम उत्साह नहीं रहता। दूर–दूर से नृत्य मंडलियाँ आतीं, संगीत के कलाकारों का जमाव होता और रामलीला का तो जैसे अंत ही न होता। सचमुच राजधानी मानिकपुरी उस दिन सजी–धजी दुल्हन से कम न लगती।

उस साल भेंट इतनी अधिक चढ़ी कि राजा रामशाह खुद आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने राजा साहब की तारीफ के पुल बाँध दिए और उनकी तुलना भगवान श्रीरामचंद्रजी से करने लगे। वे यह कहने से भी न चूके कि संसार में ऐसा कोई राज्य है तो वह नवलगढ़ राज्य है जिसमें शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं।

राजा साहब सुनकर खुश हुए। पंडित रामभगत को वे राजपुरोहित कम और अपना दोस्त अधिक समझते थे। अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए उन्होंने पंडितजी को ढेर सारी सोने की मुद्राएँ भेंट कीं।

रात को पंडितजी घर में पंडिताइन से कहने लगे कि यह बूता पंडित रामभगत का ही है जिन्होंने राजा साहब के यश को चारों दिशाओं में फैला दिया है। राजा साहब उनकी हर बात को आदरपूर्वक मान लेते हैं। दूसरे राजाओं की तरह वे विलासी या आरामतलब नहीं हैं। वे प्रजा की भलाई का भी सदा ध्यान रखते हैं। प्रजा भी उन्हें सच्चे मन से चाहती है। जीवन की सफलता के अनेक रहस्य उन्होंने राजा साहब को सिखलाए हैं।

इस तरह नींद आने के पहले पंडिताइन यह मान गई कि सचमुच उसके पति नवलगढ़ राज्य की एक बहुत बड़ी हस्ती हैं।

पंडित रामभगत, जब कभी समय मिलता, अपनी इस विद्या की थोड़ी बहुत बानगी अपने इकलौते पुत्र रामचरण को भी देते। उनको यह विश्वास था कि एक न एक दिन जब राजा रामशाह की जगह उनका पुत्र लेगा तो उनकी जगह भी रामचरण बखूबी ले लेगा। अभी तो राजपुत्र और ब्राह्मणकुमार की पढ़ाई अलग–अलग होने लगी। एक दिन ऐसा भी आया कि जब राजेंद्रशाह राजा हुए और पंडितजी का बेटा उनका राजपुरोहित। नई उमर

थी, नए विचार थे। आरंभ से ही दोनों टकराने लगे। राजेंद्रशाह अपने पिता से भिन्न उद्दंड और विलासी था। इसके विपरीत रामचरण कुछ अधिक बुद्धिवादी और तर्क करने वाला था।

अब रोज सवेरे नृत्य और संगीत की महफिल जमती। राजेंद्रशाह को बड़ा मजा आता। रामचरण बीच में कभी उन्हें टोकता, प्रजा की ओर उनका ध्यान खींचता तो वे उसे झिड़क देते। अजीब परिस्थिति आ गई। वैसे रामचरण जानता था कि बुरी आदतों को जल्दी बदला नहीं जा सकता। वह अपमान सहता और अपने कर्तव्य का पालन करता जाता। परंतु कब तक? इधर राजा की विलासप्रियता बढ़ती गई और उधर खजाना खाली होता गया। प्रजा के दुख बढ़ने लगे। रामचरण ने राजा को आखिरी नेक सलाह दी। परिणाम में उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

रामचरण निराश नहीं हुआ। उसने आसपास के गाँवों में शिक्षा प्रसार का बीड़ा उठा लिया। उसे इस काम में बड़ी सफलता मिली। धीरे–धीरे राजा के कुछ खुशामदियों को यह बात खलने लगी। ज्यों–ज्यों रामचरण का यश बढ़ता जाता त्यों–त्यों उसकी शिकायतें भी बढ़ती गईं। एक दिन उसे प्रजा को भड़काने के आरोप में राजा के सामने पेश किया गया।

नए राजपुरोहित ने मामले को संगीन बताया। उसने कहा–प्रजा को राजा के विरुद्ध भड़काना सबसे बड़ा पाप है। राज–दरबारियों ने भी हामी भरी। बेचारा रामचरण क्या करता? उसकी एक न सुनी गई।

मृत्युदंड सुनाने के पहले राजेंद्रशाह ने पूछा कि यदि कोई अंतिम इच्छा है तो कहो। रामचरण ने कहा 'महाराज! अब तक मैंने आपको अपनी शक्ति के अनुसार बहुत सी बातें बतलाई हैं। अब चाहता हूँ कि मोतियों की फसल उगाने का गुर भी आपको बता दूँ।

यह सुनना था कि दरबारी दंग रह गए। कुछ लोगों को शंका हुई कि यह कहीं धोखा देकर भाग न जाए। परंतु राजा ने उस पर विश्वास किया। कहा, ''हम तुम्हें मौका देंगे। अपनी यह विद्या तुम हमें अवश्य सिखा दो''। राजा से आज्ञा लेकर रामचरण अपने काम में जुट गया। उसने कुछ बीघे अच्छी जमीन ली। उसे जोतकर उसमें गेहूँ डलवा दिए। शर्त यह रखी गई कि वह अपना काम चुपचाप ही करेगा। कोई भी उसमें बाधा न डाल सकेगा।

दुश्मनों ने बहुत चाहा कि देखें, आखिर वह पंडित का बच्चा क्या करता है? परंतु वे रामचरण के काम की टोह न पा सके। समय पर अंकुर निकले और फिर पौधे बड़े हो गए।

एक धुंध भरी सुबह को रामचरण राजा और उसके मुसाहिबों को लेकर खेत पर पहुँचा। हर पौधा ओस की सुनहरी बूँदों से जड़ा हुआ था। रामचरण ने कहा लीजिए– मोतियों की फसल। एक मुसाहिब ज्यों ही उसे तोड़ने के लिए बढ़ा, रामचरण चिल्लाया, 'ठहरो! यह मोतियों की पवित्र फसल है, इसे वही व्यक्ति हाथ लगा सकता है जिसने अब तक देश के प्रति गद्दारी न की हो।

सब के चेहरे फीके पड़ गए। कुछ देर तक वे एक दूसरे की सूरत देखते रहे और जिधर से जाते बना, सब चल दिए। अंत में बचे राजा। उनकी आँखें आत्मज्ञान से मानो चमक उठीं। दूसरे ही पल उनका मस्तक पंडित रामचरण के चरणों में था।

शब्दार्थ

लालसा – प्राप्त करने की इच्छा; **विलासी** – आमोद–प्रमोद और व्यसन में डूबा रहने वाला; **बखूबी** – अच्छी तरह से, भली–भाँति; **उद्दंड** – अक्खड़; **गुर**–युक्ति, कार्य सिद्धि का मूलमंत्र; **आराम तलब** – आराम करने की इच्छा रखने वाला; **मुसाहिब** – चाटुकार।

अभ्यास

पाठ से

1. दशहरे पर नवलगढ़ राज्य में होने वाले आयोजन के बारे में लिखिए।
2. राजा रामशाह और उनके राजपुरोहित पंडित रामभगत के आपसी संबंध कैसे थे?
3. रामचरण को नौकरी से क्यों हाथ धोना पड़ा?
4. मोतियों की फसल वस्तुतः क्या थी?
5. रामचरण की सफलता पर किस तरह की प्रतिक्रियाएँ हुईं?
6. राजा रामशाह और उनके पुत्र राजेंद्रशाह के व्यक्तित्व में क्या–क्या समानताएँ थीं? एक तालिका के रूप में लिखिए।

राजा रामशाह	राजा राजेंद्रशाह

पाठ से आगे

BBSV4U

1. अपने गाँव या शहर में किसी पर्व पर चली आ रही प्रथा के विषय में लिखिए।
2. आपके गाँव में प्रचलित तीन अच्छी और तीन बुरी प्रथाओं के विषय में तीन–तीन वाक्य लिखिए।
3. यदि राजेंद्रशाह के स्थान पर रामचरण राजा बन जाता तो राज्य की स्थिति क्या होती?
4. कहानी में राजपुरोहित द्वारा राजा की झूठी तारीफ कर सोने की मुद्राएँ प्राप्त करते हुए बताया गया है। ऐसा करना उचित है या अनुचित? अपने उत्तर तर्क सहित लिखिए।

भाषा के बारे में

1. पाठ में दिए गए इन मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   (क) तारीफ के पुल बाँधना

   (ख) बीड़ा उठाना

   (ग) राई का पहाड़ बनाना

   (घ) चेहरा फीका पड़ना

   (ङ) टोह न पाना

BC2R6H

2. वाक्य के रेखांकित शब्दों में अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु (ँ) लगाइए और लिखिए

   (क) राजा ने पंडित जी को ढेर सारी मुद्राए दीं।

   (ख) हर पौधा ओस की सुनहरी बूदों से जड़ा हुआ था।

   (ग) मृत्युदड सुनाने से पहले राजेंद्रशाह ने पूछा।

   (घ) अभी तो राजपुत्र और ब्राह्मण कुमार आगन में खेल रहे थे।

   (ङ) दूर–दूर से नृत्य मडलिया आतीं।

3. निम्नांकित वाक्यों के रेखांकित शब्दों को उनके हिंदी पर्याय से इस तरह बदल कर लिखिए कि उनके अर्थ में परिवर्तन न हो।

   (क) हम तुम्हें मौका देंगे।

   (ख) कुछ खुशामदियों को यह बात खलने लगी।

   (ग) नए राजपुरोहित ने मामले को संगीन बताया।

   (घ) प्रजा को राजा के खिलाफ भड़काना पाप है।

   (ङ) इधर राजा की विलासप्रियता बढ़ती गई और उधर खजाना खाली होता गया।

4. निम्नांकित वाक्यों से कारक चिह्न पहचानकर अलग कीजिए।

   (क) प्रजा का हर व्यक्ति राजा को अपनी शक्ति के अनुसार भेंट चढ़ाता।

   (ख) परिणामत: उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

   (ग) उनकी आँखें आत्मज्ञान से मानो चमक उठीं।

(घ) संसार में ऐसा अगर कोई राज्य है तो वह नवलगढ़ है।

(ङ) राजा ने उस पर विश्वास किया।

योग्यता विस्तार

1. एक अन्य लोककथा खोजकर लाइए और उसे अपनी भाषा में लिखकर शाला की भित्ति पत्रिका में लगाइए।
2. 'आँख' से संबंधित मुहावरों की सूची तैयार कीजिए और उनके अर्थ भी लिखिए।
3. अपने अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति की झूठी प्रशंसा कर लाभ उठाने के उदाहरण तुम्हारे आसपास भी दिखाई देते होंगे। कक्षा, विद्यालय या समाज से ऐसा एक उदाहरण ढूँढ़कर उसके विषय में अपने साथियों से चर्चा करें।
4. आपने राजा और राजपुरोहित की यह कथा पढ़ी। इसी तरह अकबर–बीरबल तथा तेनालीराम की कथाएँ लिखी गई हैं। इन्हें खोजकर पढ़िए।
5. छत्तीसगढ़ के मानचित्र में निम्नांकित स्थानों को दर्शाइए।

   (क) खैरागढ़

   (ख) रतनपुर

   (ग) सरगुजिहा भाषा वाला क्षेत्र

   (घ) कांगेर घाटी

   (ङ) कुटुंबसर गुफा

   (च) मैनपाट

   (छ) राज्य का सबसे ठंडा क्षेत्र

   (ज) दंतेवाड़ा

BCBH85

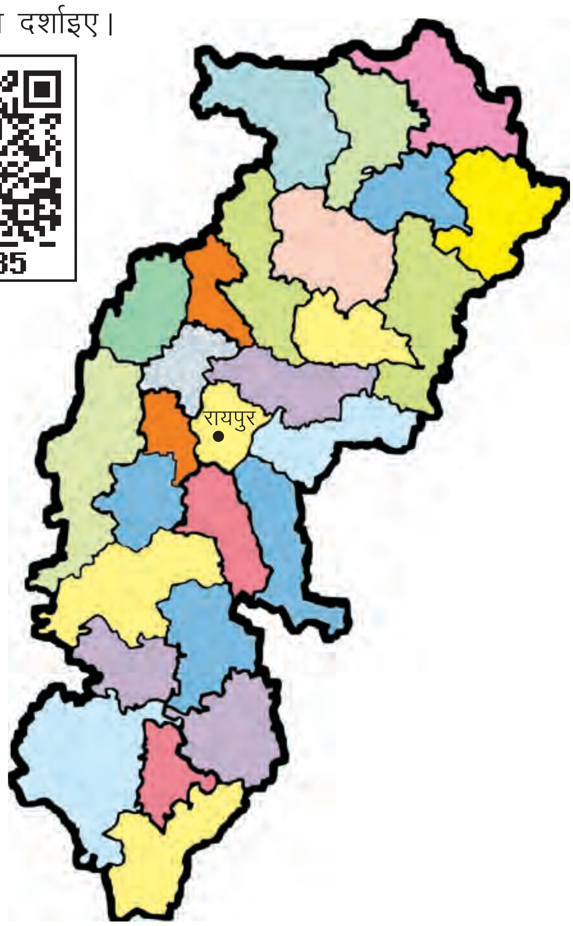

पाठ 2.3 : कलातीर्थ : खैरागढ़ का संगीत विश्वविद्यालय

BCKI9S

डॉ. राजन यादव

*डॉ. राजन यादव का जन्म 19 अक्टूबर सन् 1968 को कबीरधाम जिले के पीपरमाटी गाँव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके गृह ग्राम, कंझेटा और कुण्डा में हुई। डॉ. यादव भक्तिकालीन हिंदी साहित्य और लोक साहित्य के विशेषज्ञ माने जाते हैं। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ **तुलसी तरंग** (समीक्षा ग्रंथ) **विविधा** (साहित्यिक निबंध) **मध्ययुगीन हिंदी कविता में बसंत वर्णन** (शोध ग्रंथ) हैं।*

कलात्मक सौंदर्य का संबंध जीवन और समाज से होता है। युग की उपलब्धियाँ और सीमाएँ दोनों ही कला में उभरती हैं। इसलिए कला को भारतीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यहां कला के विविध रूपों की साधना हमारी जीवन यात्रा की लम्बी और गौरवपूर्ण गाथा है। भारतीय संस्कृति जितनी पुरानी है, उतनी ही पुरानी इसकी कलाएँ हैं। भारतीय कला–चिंतन में कला को एक साधना माना गया है। प्राचीन आचार्यों ने कला को भक्ति से भी जोड़ा है। भर्तृहरि ने तो साहित्य संगीत और कला से विहीन मनुष्य को पूँछ और सींग से रहित साक्षात् पशु कहा है– 'साहित्य संगीतकला विहीनः, साक्षात् पशुः पुच्छविषाण हीनः।' भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का एक कारण उसकी कलात्मकता भी है। संगीत आदि ललित–कलाएँ मानव जीवन को पूर्णता प्रदान करती हैं तथा मानवता को प्रांजल बनाती हैं। इनमें व्यक्ति का व्यक्तित्व तो भास्वर होता ही है, समष्टि–चेतना भी समन्वित रूप में बलवती हो उठती है। भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर इन्हीं कलाओं के संवर्धन और संरक्षण में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ का योगदान अविस्मरणीय है। विगत छप्पन वर्षों में विश्वविद्यालय ने उन्नति के अनेक शिखर छुए हैं।

खैरागढ़ भारत के मध्य भाग में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य के राजनाँदगाँव जिले के अंतर्गत आता है। यहाँ का ग्रामीण एवं शांत परिवेश विश्वविद्यालय की कला और कला–साधना में विशेष सहायक है। यहाँ रियासत कालीन कलात्मक व गुलाबी रंग के महल की अपनी विशेषता है। नागवंश के दानवीर राजा–रानी ने अर्धशती पहले जो संगीत की बगिया लगाई थी, उसमें आज संगीत ही नहीं, सभी ललित–कलाओं के बहुरंगी व बहुगंधी पुष्प विकसित हो रहे हैं।

खैरागढ़ राज्य और नागवंश के अतीत पर दृष्टि डालें तो खैरागढ़ के इतिहास का आरंभ खोलवा–परगना से होता है जिसे मण्डला के राजा ने लक्ष्मीनिधि कर्णराय को उनकी वीरता के लिए सन् 1487 ई. में पुरस्कार स्वरूप दिया था। इन्हीं के चारण कवि दलपतराव ने इस क्षेत्र के लिए पहली बार छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग अपनी कविता में 1497 ई. में किया था। स्व. लाल प्रद्युम्न सिंह रचित ग्रंथ 'नागवंश' के अनुसार वर्तमान खैरागढ़ में नागवंशी राजाओं के इतिहास का आरंभ राजा खड़गराय से हुआ। वे खोलवा राज्य के सोलहवें तथा नई राजधानी खैरागढ़ के प्रथम राजा थे। उन्होंने पिपरिया, मुस्का तथा आमनेर नदी के मध्य अपने नाम से एक नगर बसाया। उस नगर के चारों ओर खैर वृक्षों की अधिकता थी। इतिहासकार दोनों मान्यताओं से सहमत हैं कि राजा खड़गराय या खैर वृक्षों की अधिकता की वजह से नगर को खैरागढ़ कहा जाने लगा।

कालांतर में यहाँ के नागवंशी राजा उमराव सिंह व राजा कमलनारायण सिंह जैसे प्रजावत्सल, विद्यानुरागी, कलाप्रेमी तथा साहित्य सृजक राजाओं ने स्वास्थ्य तथा संगीत–कला पर विशेष ध्यान दिया। प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक वैभव से सम्पन्न इसी धरती के मनोहर प्रांगण में आज से छप्पन वर्ष पूर्व एक अपूर्व विश्वविद्यालय का अविर्भाव हुआ। गुरु–शिष्य परम्परा से पल्लवित संगीत की शिक्षा के लिए विद्यालयों की परिकल्पना भी बाल्यावस्था में थी, उसी समय तत्कालीन मध्यप्रदेश के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में स्थित खैरागढ़ नगर को इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना का गौरव प्राप्त हुआ। यहाँ के राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह एवं रानी पद्मावती देवी की प्रसिद्धि सदैव मुस्काती रहेगी, जिन्होंने अपनी दिवंगत पुत्री 'राजकुमारी इंदिरा' की स्मृति में सम्पूर्ण राजभवन का उदारतापूर्वक दान करके इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। 14 अक्टूबर 1956 ईस्वी में श्रीमती इंदिरा गाँधी ने इसका उद्घाटन किया। यहीं से मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल के सहयोग से एशिया के इस प्रथम एवं एक मात्र विश्वविद्यालय की स्वर्णयात्रा आरंभ हुई।

इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति पद्मभूषण पं. एस.एन. रातंजनकर का संगीत के आरंभिक पाठ्यक्रम बनाने में महती योगदान रहा। उन्होंने संगीत की शिक्षा को घरानों की चहारदीवारी से निकालकर संस्थागत किया। शास्त्र और प्रयोग को एक दूसरे के नजदीक लाने और जोड़ने का कार्य किया इससे गीत, संगीत और नृत्य की शिक्षा के प्रति समाज का दृष्टिकोण सकारात्मक हुआ।

वर्तमान में विश्वविद्यालय के शिक्षण विभाग द्वारा संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला, छापाकला, लोककला तथा साहित्य संबंधी डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित हैं। यहाँ के बी.ए., बी.ए. (आनर्स) संगीत, नृत्य, लोकसंगीत तथा बी.एफ.ए., एम.ए., एम.एफ.ए. के पाठ्यक्रम रोजगारमूलक तथा जीवन पर्यंत उपयोगी हैं। यहाँ गायन पक्ष में– हिन्दुस्तानी गायन, कर्नाटक गायन, सुगमसंगीत तथा लोकसंगीत की प्रभावी शिक्षण व्यवस्था है। नृत्य पक्ष में– कथक, भरतनाट्यम तथा ओडिसी नृत्य की शास्त्रीय और प्रयोगात्मक शिक्षा दी जाती है। वाद्यपक्ष में तबला, वायलिन, सितार, सरोद, कर्नाटक बेला तथा लोकवाद्यों की शिक्षा दी जाती है। दृश्यकला के अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला तथा छापाकला में स्नातकोत्तर तक की शिक्षा व्यवस्था है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा स्वीकृत दो स्पेशलाइजेशन पाठ्यक्रम बैचलर ऑफ वोकेशन (बी.ओक.) फैशन डिजाइनिंग और टेक्सटाइल डिजाइनिंग का पाठ्यक्रम संचालित करने वाला यह एक मात्र विश्वविद्यालय है।

यहाँ कला संकाय में हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के पाठ्यक्रम संचालित हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व तथा थियेटर की स्नातकोत्तर की पढ़ाई होती है। यहाँ पर्यावरण से लेकर दैनिक

जीवन में उपयोगी अनेक प्रकार की शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालय में दर्जनों मनोरंजक तथा रोजगारमूलक डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स संचालित हैं। विश्वविद्यालय में पाँच संकाय के बीस विभागों द्वारा संस्थागत, जीवन शिक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षा दी जाती है। छत्तीसगढ़ का यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिनके संबद्ध महाविद्यालय भारत के कई राज्यों में हैं। सम्पूर्ण भारत में 24 सम्बद्ध महाविद्यालय तथा 35 परीक्षा केन्द्रों में परिव्याप्त यह विश्वविद्यालय ललितकलाओं का गौरव स्तंभ है। यहाँ पी–एच.डी. तथा डी.लिट्. तक शोध–कार्य होते हैं। यहाँ से प्रकाशित उच्चस्तरीय शोध पत्रिकाएँ 'कलासौरभ' 'कला–वैभव' तथा 'लिटरेरी डिस्कोर्स' विश्वविद्यालय के गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के दर्पण हैं। यहां ललित कलाओं के सृजक–चित्रकार, मूर्तिकार, वास्तुकार, संगीतकार और काव्यकार सभी नवीन उद्भावनाओं को मूर्तरूप देने के प्रयास में संलग्न हैं।

ललितकलाओं की दृष्टि से यहाँ का ग्रंथालय भारतवर्ष में प्रथम है, जो पैंतालिस हजार से अधिक पुस्तकें, ऑडियो (श्रव्यताफोन, अभिलेख) और सी.डी., भारतीय चित्रकारों की विडियो स्लाइड्स, लोक एवं जनजातीय कलाकारों के कला नमूनों के उल्लेखनीय संग्रह से सुसज्जित है। ग्रंथालय में भव्य श्रव्यकक्ष है, जहाँ विद्यार्थी, शोधार्थी तथा कला–जिज्ञासु अपने विषय के अनुरूप महान कलाकारों के ऑडियो–विडियो कैसेट्स द्वारा ज्ञान अर्जन करते हैं। विश्वविद्यालय के संग्रहालय में कलात्मक अवशेषों का विपुल संग्रह है, जो देश के इस हिस्से की बहुविध समृद्ध संस्कृति को प्रदर्शित करता है। शास्त्रीय एवं लोकसंगीत के वाद्यों की कलावीथिका भी मनोहारी है। विश्वविद्यालय का शिक्षण तथा प्रशासनिक कार्य दो परिसरों में संपन्न होता है।

छत्तीसगढ़ का प्रथम तथा भव्य आडिटोरियम विश्वविद्यालय में ही स्थित है। अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त 'रिकार्डिंग रूम' तथा 'लैंग्वेज लैब' की अपनी विशिष्टता है। हाइटेक कम्प्यूटर सेंटर तथा योग केंद्र की भी महती भूमिका है। देशी–विदेशी विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिए सुविधायुक्त कई महिला एवं पुरुष छात्रावास हैं। साथ ही बाहर से आने वाले अतिथियों के ठहरने के लिए अतिथिगृह की भी उत्तम व्यवस्था है। इतना ही नहीं, यहाँ का हरा–भरा परिसर कलासाधकों की साधना के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करता है।

इस उत्सवधर्मी विश्वविद्यालय में वर्षभर राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, उत्सव, प्रदर्शनियाँ आयोजित होती हैं। देश–विदेश के ख्यातिलब्ध कलाकार, साहित्यकार, नाटककार इस कलातीर्थ में आकर गौरव का अनुभव करते हैं। महान नृत्य गुरु पं. लच्छू महाराज, संगीत मर्मज्ञ ठाकुर जयदेव सिंह, प्रसिद्ध नृत्यांगना सितारा देवी, विश्व प्रसिद्ध सितार वादक पं. रविशंकर, भारत रत्न लता मंगेशकर, छत्तीसगढ़ माटी के विश्वविख्यात रंग निदेशक हबीब तनवीर, प्रख्यात कला विदुषी डॉ. कपिला वात्स्यायन, चित्रकला के पुरोधा सैयद हैदर रज़ा, विश्व प्रसिद्ध कलाकार जोहरा सहगल सदृश अनेक विभूतियाँ इस विश्वविद्यालय में मानद डी. लिट्. से सम्मानित हुई हैं।

इस कलातीर्थ में भारत के कई प्रांतों तथा श्रीलंका, पोलैण्ड, थाईलैण्ड, ऑस्ट्रिया, फिज़ी, तुर्की, मॉरिशस, नेपाल, अफगानिस्तान, मलेशिया आदि देशों से विद्यार्थी–शोधार्थी श्रद्धाभाव से आते हैं। अलग–अलग स्थानों से आए, भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम एवं शोध आवश्यकताओं की अपेक्षाएँ पूरी होती हैं। यहाँ की अनूठी प्रकृति विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध पारंपरिक भारतीयता के ज्ञानार्जन की अनुभूति कराती है।

कलाकार को मनोनुकूल परिवेश के लिए ऐसे समाज की तलाश होती है जिससे बेगानेपन का भाव न हो और वह पड़ोस के समुदाय से भावनात्मक रूप से जुड़ सके। महात्मा गाँधी ने 23 नवम्बर 1924 में प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री दिलीपकुमार राय से कला के संबंध में बातें करते हुए कहा था–''कलाकार जब कला को कल्याणकारी बनाएँगे

और जनसाधारण के लिए सुलभ कर देंगे, तभी उस कला को जीवन में स्थान मिलेगा। जब कला लोक की न रहकर थोड़े लोगों की रह जाती है, तब मैं मानता हूँ कि उसका महत्व कम हो गया।''

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की भावना के अनुरूप इस कलातीर्थ के प्रथम कुलपति रातंजनकर हों या प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्रजी या रामकथा गायक व विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार सेन हों, अब तक कार्यरत विश्वविद्यालय के समस्त कुलपतियों, शिक्षकों, संगीतकारों व कर्मचारियों ने इसके संरक्षण और संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उत्थान से लेकर अब तक के 20वें कुलपति प्रो. डॉ. माण्डवी सिंह ने ललितकला को समर्पित इस विश्वविद्यालय के विकास में प्रभावी भूमिका का निर्वाह किया है। यहां राज्य सरकार के सहयोग से हर वर्ष 'खैरागढ़ महोत्सव' का भव्य आयोजन होता है जिसमें देश–विदेश के स्वनामधन्य कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय आज प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नेशनल एसेसमेंट एण्ड एक्रीडिटेशन काउंसिल) द्वारा 24 सितम्बर 2014 को विश्वविद्यालय को प्रत्यायित कर 'ए' दर्जा प्राप्त हुआ है। देश के प्रतिष्ठित संस्थान, रिक्रूटमेंट के लिए विश्वविद्यालय आते हैं जिसमें यहाँ के विद्यार्थी चयनित होते हैं। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार व फैलोशिप प्राप्त शिक्षक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी यहाँ की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए क्रियाशील हैं।

यहाँ से दीक्षित कलाकार देश–विदेश में भारतीय कला संस्कृति के ध्वजवाहक बने हुए हैं। क्योंकि कला राष्ट्र के जीवन का एक मुख्य अंग है, उससे ही हमारे जीवन को रस, सुकुमारता और सहृदयता का आहार मिलता है। आज अन्य देशों के लोगों ने अपनी जिस संस्कृति के आधार पर अपने आचार–विचार और समस्त जीवन को कार्यान्वित किया है, उससे वे ऊब रहे हैं, वे भारतीय जीवन की सरलता, मधुरता व उपयोगिता को अपनाने में सुख शांति का अनुभव कर रहे हैं। भारतीय कृतियों में आनंद को समस्त कलाओं का एकमात्र लक्ष्य माना गया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'समस्त काव्य, चित्रकला और संगीत, शब्द, रंग और ध्वनि के द्वारा भावना की ही अभिव्यक्ति है।' हमारी अवधारणा में मनुष्य कोई पदार्थ नहीं, पूर्ण चेतन है, जो परमेश्वर का ही सांस्कृतिक प्रतिनिधि माना गया है। यहाँ के कला साधक यही बोध कराने के लिए क्रियाशील हैं। गायन विभाग के पूर्व प्रवक्ता डॉ. अनिता सेन द्वारा रचित एवं स्वरबद्ध विश्वविद्यालय के कुलगीत में भी जनकल्याणकारी भावना प्रतिबिंबित होती है–

प्रतिपल जीवन नव कोणों में, विकसित होता जाए।
धन्य विश्वविद्यालय पावन, स्वर्ग धरा पर लाए।।

इस कलातीर्थ का ध्येय वाक्य है– ''सुस्वराः संतु सर्वेऽपि'' अर्थात् ''सभी सुन्दर स्वर वाले हों।'' कला के पथ पर निरंतर अग्रसर होते हुए हमारी समृद्ध संस्कृति का वाहक यह विश्वविद्यालय अपने ध्येय वाक्य की सार्थकता को सिद्ध कर रहा है।

शब्दार्थ

प्रांजल – खरा; सरल या शुद्ध, ईमानदार, समतल; **संरक्षण** – सहेजना; **संवर्धन** – समुचित रूप से बनना; **आलोकित** – प्रकाशित; **आविर्भाव** – उत्पन्न; **फल लगना** – फूलना; **कला वीथिका** – कला गलियारा; **पुरोधा** – आदिपुरुष।

अभ्यास

पाठ से

1. भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ क्यों माना गया है?
2. पाठ के आधार पर खैरागढ़ राज्य के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
3. खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना किस तरह हुई?
4. विश्वविद्यालय के कुलपति पं. एस.एन. रातंजनकर के योगदान को लिखिए।
5. खैरागढ़ विश्वविद्यालय में कौन–कौन से शिक्षण विषय उपलब्ध हैं?
6. टिप्पणी लिखिए–

   (क) ग्रंथालय (ख) ललितकला
7. इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय को कलातीर्थ क्यों कहा गया है?

BCUEBF

पाठ से आगे

1. कलाएँ हमारे जीवन को किस तरह खुशहाल व परिपूर्ण बनाती हैं?
2. ललितकलाएँ कौन–सी हैं और उन्हें ललितकलाएँ क्यों कहा गया है?
3. कलाकार क्या विशिष्ट व्यक्ति होते हैं या आप और हम भी कलाकार हो सकते हैं? आपस में विचारकर लिखिए।
4. विभिन्न कलाओं की शिक्षा प्राप्त कर आप किस तरह के रोजगार चुन सकते हैं? तालिका में लिखिए–

कला	व्यवसाय के क्षेत्र
उदाहरण– तबला–वादन	तबला वादक, तबला शिक्षक आदि।

5. कला 'स्वांतः सुखाय' भी होती है। कैसे? शिक्षक से पूछकर लिखिए।

भाषा के बारे में

1. 'भावना' स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है इसमें जब 'आत्मक' प्रत्यय जुड़ेगा तो प्राप्त शब्द 'भावनात्मक' एक विशेषण शब्द होगा। इसी प्रकार निम्नांकित शब्दों में 'आत्मक' प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाइए–

   कला, व्याख्या, तुलना, रचना।

2. निम्नांकित शब्दों में कुछ अन्य शब्द जोड़कर नए शब्द बनाइए– जैसे साहित्य से साहित्य सम्मेलन

   (क) गायन (ख) परंपरा (ग) कला

3. पाठ के चौथे अनुच्छेद में दी गई जानकारी के आधार पर राजा वीरेन्द्र बहादुर और रानी पद्मावती के बीच एक संवाद लिखिए।

4. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें खैरागढ़ के संगीत विश्वविद्यालय की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

BD4AD3

(क) 'भावनात्मक' शब्द में 'आत्मक' प्रत्यय है ऐसे ही दस शब्द और बनाइए।

(ख) कल्याणकारी शब्द में 'कारी' प्रत्यय 'करने वाला' या करने वाली का बोध कराता है ऐसे ही आप 'कारी' प्रत्यय लगाकर दस नए शब्द बनाइए।

(ग) संस्कृत से मूल रूप में बिना परिवर्तित हुए हिंदी में लिए गए शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे– कर्ण, अग्नि, इत्यादि। इस पाठ में आए तत्सम शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. संगीत में कितने स्वर होते हैं, उनके क्या–क्या नाम हैं पता लगाकर लिखिए।
2. पता लगाकर लिखिए कि एक गायक अन्य भाषा के गीतों को किस प्रकार आसानी से गा लेता है?
3. छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों एवं लोकगायकों की सूची बनाकर उनकी गायन शैली/विधा लिखिए।
4. रायगढ़ के चक्रधर समारोह के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए और शाला की भित्ति पत्रिका में लगाइए।

BDD6EQ

इकाई 3 : समसामयिक मुद्दे

पाठ 3.1 : बच्चे काम पर जा रहे हैं

पाठ 3.2 : अकेली

पाठ 3.3 : जामुन का पेड़

पाठ 3.4 : रीढ़ की हड्डी

इकाई 3

समसामयिक मुद्दे

हमारे संविधान में सबके लिए समता और समानता के अधिकार का प्रावधान है। लेकिन आस–पास नजर डालें तो ऐसी कई स्थितियाँ देखने को मिलती हैं, जहाँ कई क्षेत्रों में असमानताएं हैं। साहित्य में अक्सर ऐसी असमानतापूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों की झलक मिलती है। इस इकाई में उन्हीं परिस्थितियों को केंद्र में रख कर कुछ रचनाओं को शामिल किया गया है।

राजेश जोशी की कविता **बच्चे काम पर जा रहे हैं** आर्थिक विषमता, अधिकारों के उल्लंघन और बाल श्रम के प्रति असंवेदनशीलता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इसी तरह मन्नू भंडारी की कहानी **अकेली** में सोमा बुआ के युवा पुत्र की मृत्यु से पनपे एकाकीपन और अपनों द्वारा भावात्मक अस्वीकार्यता का मार्मिक चित्रण किया गया है। दोनों रचनाएँ वृद्धों और बच्चों के प्रति समाज के असहज व्यवहार को रेखांकित करती हैं, जबकि हमारा दायित्व है कि हम बुज़ुर्गों और बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

कृश्न चंदर की कहानी **जामुन का पेड़** संवेदनशून्य व्यवस्था और उसमें फँसे आम आदमी के जीवन की विडंबना को व्यंग्यात्मक व हास्यपरक रूप में प्रस्तुत करती है। इस हास्यपरकता को बनाने के लिए कहानी में व्यवस्था पर अतिश्योक्तिपूर्ण व्यंग्य भी किया गया है।

जगदीश चंद्र माथुर की प्रसिद्ध एकांकी **रीढ़ की हड्डी** समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता पर प्रहार करते हुए, स्त्रियों में शिक्षा से उत्पन्न आत्मविश्वास, साहस व स्वयं निर्णय लेने की क्षमता को प्रस्तुत करती है।

इस इकाई में समाज में मौजूदा समस्याओं की एक बानगी भर मिलती है, जबकि ऐसे अनेक मुद्दे हैं, जिन पर विचार किए जाने की जरूरत है। हम आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़ते हुए आप और आपके साथी अपने आस–पास की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार कर पाएंगे।

पाठ 3.1 : बच्चे काम पर जा रहे हैं

राजेश जोशी

BDM2GD

राजेश जोशी *का जन्म 18 जुलाई 1946 को नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश में हुआ। वे हिंदी के प्रमुख प्रगतिशील कवि माने जाते हैं। उन्हें वर्ष 2002 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके प्रमुख कविता संग्रह* ***दो पंक्तियों के बीच, नेपथ्य में हँसी, एक दिन बोलेंगे पेड़*** *और* ***मिट्टी का चेहरा*** *हैं। यह कविता उनके संग्रह* ***नेपथ्य में हँसी*** *से ली गई है।*

कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह–सुबह।

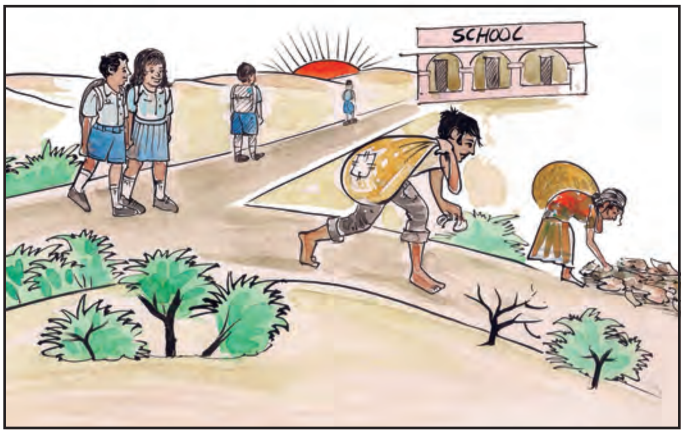

बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह,
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें?
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग–बिरंगी किताबों को?
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने?
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें?

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक?

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनियाँ में?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है, लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्ब–ए–मामूल
पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे–छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

शब्दार्थ

विवरण – ब्यौरा देना, तथ्य की तरह बताना; **हस्ब–ए–मामूल** – ज्यों–की–त्यों उपलब्ध होना, यथावत; **मदरसा** – विद्यालय।

अभ्यास

पाठ से

1. ''बच्चे काम पर जा रहे हैं।'' इस पंक्ति को हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति क्यों कहा गया है?
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा है– ''भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना, लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह।''
3. कविता में आईं इन चीज़ों के साथ क्या हो जाने का अंदेशा व्यक्त किया गया है?

चीज़ों के नाम	अंदेशा
गेंदें	
किताबें	
खिलौने	
मदरसों की इमारतें	
मैदान	
बगीचे	
घरों के आँगन	

पाठ से आगे

1. बच्चों के काम पर जाने से उनका बचपन किस तरह प्रभावित होता है?
2. बच्चों को काम पर जाना पड़ता है। आपकी समझ से इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं?
3. यदि सारे मैदान, बगीचे और घरों के आँगन सचमुच खत्म हो जाएँ तो इससे हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
4. (क) सुबह–सुबह उठकर आप क्या–क्या करते हैं?

   (ख) जो बच्चे स्कूल नहीं जा पाते, वे क्या–क्या करते होंगे?

भाषा के बारे में

1. (क) 'पेड़ काटे जा रहे हैं।' यह विवरण की तरह लिखा गया है। इसी बात को सवाल की तरह हम लिख सकते हैं– "पेड़ क्यों काटे जा रहे हैं?"

   आप भी किन्हीं पाँच पंक्तियों को विवरण की तरह लिखिए और उन्हें सवाल के रूप में बदलिए।

   (ख) सवाल और विवरण में क्या अंतर है?
2. 'चाहिए' के बारे में–

   (क) मुझे केला चाहिए।

   (ख) तुम्हें स्कूल जाना चाहिए।

   उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'चाहिए' के अर्थ में क्या अंतर है? बताइए और ऐसे ही दो और वाक्य लिखिए।
3. प्रायः **क्या, कब, कहाँ, कैसे** और **कौन** आदि प्रश्नसूचक शब्दों की मदद से प्रश्नों का निर्माण किया जाता है। निम्नांकित वाक्य में उत्तर सूचक शब्द के स्थान पर उपर्युक्त प्रश्नसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए प्रश्नों का निर्माण कीजिए।

   "सुबह–सुबह कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे पैदल काम पर जा रहे हैं"

   जैसे– प्रश्न : सुबह–सुबह कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे पैदल <u>कहाँ</u> जा रहे हैं?

   उत्तर : सुबह–सुबह कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे पैदल <u>काम पर</u> जा रहे हैं।

योग्यता विस्तार

1. समूह कार्य –

   (क) पता करें कि आपके गाँव/मोहल्ले में आपके हमउम्र कितने बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं?

BQJ318

(ख) वे जब स्कूल नहीं जाते, तब क्या–क्या करते हैं? उनमें लड़कियों और लड़कों की संख्या कितनी है? उनका शैक्षिक स्तर क्या है?

(ग) पता लगाने की कोशिश कीजिए कि बच्चों के स्कूल ना जाने या छोड़ने के क्या कारण हो सकते हैं?

2. बाल मजदूरी को रोकने के लिए हमारे संविधान में कुछ प्रावधान किए गए हैं। नीचे दिए गए इन संवैधानिक प्रावधानों को पढ़कर समूह में चर्चा कीजिए।

संवैधानिक प्रावधान

संविधान के कुछ प्रावधान ऐसे हैं जो सीधे तौर पर "बालश्रम" के लिए संबोधित हैं।

अनुच्छेद–24

फैक्टरियों आदि में बाल श्रमिकों पर प्रतिबंध।

"चौदह वर्ष से कम आयु का कोई भी बच्चा फैक्टरी, खदान या अन्य खतरनाक कार्यस्थलों पर काम में नहीं लगाया जाएगा।"

5. आपने ''बच्चे काम पर जा रहे हैं'' कविता पढ़ी। ऐसी ही एक रचना है, नरेश सक्सेना की कविता 'अच्छे बच्चे'। शिक्षकों की मदद से इसे खोजिए और पढ़िए।

बालश्रम निषेध अधिनियम

बालश्रम का मतलब ऐसे कार्य से है, जिसमें कार्य करने वाला व्यक्ति कानून द्वारा निर्धारित आयु–सीमा से छोटा है। इस प्रथा को कई देशों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने शोषित करने वाली प्रथा मना है। इन्हीं बातों से संबंधित बालश्रम (निषेध एवं विनियम) अधिनियम 1986 लागू हुआ। संविधान का अनुच्छेद 24 इससे संबंधित है। यह अधिनियम 14 साल की आयु से कम के बच्चों से काम कराना गैरकानूनी मानता है साथ ही 18 साल से कम उम्र के बच्चों को कारखानो/खदानों में काम करने का निधेष करता है। इस नियम की कुछ सीमाएँ भी निर्धारित की गयी है– जैसे–पारिवारिक व्यवसायों में बच्चे स्कूल से वापस आकर या गर्मी की छुट्टियों में काम कर सकते हैं। इसी तरह फिल्मों मे बाल कलाकारों को काम करने की अनुमति है। खेल से जुड़ी गतिविधियों में भी वे सहभागिता निभा सकते हैं। इसी प्रकार 14–18 वर्ष की आयु के बच्चों को काम पर रखा जा सकता है, बशर्ते वह कार्य/कार्यस्थल सूची में शामिल खतरनाक व्यवसाय या प्रक्रिया से न जुड़ा हो। इस नियम का उल्लंघन करने पर दण्ड का भी प्रावधान है। यदि कोई नागरिक इस कानून की अवमानना होते हुए देखता है तो वह इसकी शिकायत पुलिस/मजिस्ट्रेट से कर सकता है, या बच्चों के अधिकारों पर काम करने वाली सामाजिक संस्थाओं की संज्ञान में ला सकता है।

उक्त कानून का उल्लंघन करते हुए पकड़े जाने पर वारंट की गैर–मौजूदगी में गिरफ्तारी या जाँच की जा सकती है। अपराध सिद्ध होने पर संबंधित व्यक्ति/मालिक को माह 6 माह 2 साल की जेल और 20,000/– 50,000/– रूपये तक जुर्माना हो सकता है। यदि बच्चों के माता पिता भी व्यावसायिक उद्देश्य से निर्धारित से कम उम्र के बच्चों द्वारा काम कारवाते हैं या इसकी अनुमति देते हैं तो उन्हें सजा दी जा सकती है। कानून उन्हें अपनी मूल सुधारने का एक अवसर देता है और इसे समाधान/समझौते की प्रक्रिया से सुलझाया जा सकता है पर यदि वे (माता–पिता) पुनः अपने बच्वें को निर्धारित आयु सीमा से पूर्व काम करवाते है तो उन्हें 10,000/– तक का जुर्माना हो सकता है।

पाठ 3.2 : अकेली

मन्नू भण्डारी

BQSY2V

*हिंदी की चर्चित कहानीकार **मन्नू भंडारी** का जन्म सन् 1931 ई. में भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ। चर्चित स्त्री रचनाकार के रूप में इन्होंने बहुत सी कहानियाँ लिखी हैं, जो आठ संग्रहों में संकलित हैं। उनकी एक कहानी **'यही सच है'** पर हिंदी में फिल्म भी बनी, जो बहुत लोकप्रिय हुई थी। उन्होंने कई उपन्यास भी लिखे हैं जिनमें **'महाभोज'** एवं **'आपका बंटी'** विशेष उल्लेखनीय है।*

सोमा बुआ बुढ़िया हैं।

सोमा बुआ परित्यक्ता हैं।

सोमा बुआ अकेली हैं।

सोमा बुआ का जवान बेटा क्या जाता रहा, उनकी अपनी जवानी चली गई। पति को पुत्र–वियोग का ऐसा सदमा लगा कि वे पत्नी, घर–बार तजकर तीरथवासी हुए और परिवार में कोई ऐसा सदस्य था नहीं जो उनके एकाकीपन को दूर करता। पिछले बीस वर्षों से उनके जीवन की इस एकरसता में किसी प्रकार का कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ, कोई परिवर्तन नहीं आया। यों हर साल एक महीने के लिए उनके पति उनके पास आकर रहते थे। पर कभी उन्होंने पति की प्रतीक्षा नहीं की, उनकी राह में आँखें नहीं बिछाईं। जब तक पति रहते उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छंद धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घूमना–फिरना, मिलना–जुलना बंद हो जाता है और संन्यासीजी महाराज से तो यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल–बोलकर सोमा बुआ को एक ऐसा संबल ही पकड़ा दें, जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दें। इस स्थिति में बुआ को अपनी ज़िंदगी पास–पड़ोसवालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या ग़मी, बुआ पहुँच जातीं और फिर छाती फाड़कर काम करतीं, मानो वे दूसरे के घर नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों।

आजकल सोमा बुआ के पति आए हुए हैं और अभी–अभी कुछ कहा–सुनी हो चुकी है। बुआ आँगन में बैठी धूप खा रही हैं, पास रखी कटोरी से तेल लेकर हाथों में मल रही हैं, और बड़बड़ा रही हैं। इस एक महीने में अन्य अवयवों के शिथिल हो जाने के कारण उनकी जीभ ही सबसे अधिक सजीव और सक्रिय हो उठती है। तभी हाथ में एक फटी साड़ी और पापड़ लेकर ऊपर से राधा भाभी उतरीं।

''क्या हो गया बुआ, क्यों बड़बड़ा रही हो, फिर संन्यासीजी महाराज ने कुछ कह दिया क्या?''

''अरे, मैं कहीं चली जाऊँ सो भी इन्हें नहीं सुहाता। कल चौकवाले किशोरीलाल के बेटे का मुंडन था, सारी बिरादरी का न्यौता था। मैं तो जानती थी कि ये पैसे का ही गुरूर है, जो मुंडन पर भी सारी बिरादरी को न्यौता है, पर काम उन नई–नवेली बहुओं से सँभलेगा नहीं, सो जल्दी ही चली गई। हुआ भी वही. . .'' और सरककर बुआ ने राधा के हाथ से पापड़ लेकर सुखाने शुरू कर दिए। ''एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा–बूढ़ा हो तो बतावे या कभी किया हो तो जानें। गीतवाली औरतें मुंडन पर बन्ना–बन्नी गा रही थीं, मेरा तो हँसते–हँसते पेट फूल गया।'' और उसकी याद से ही कुछ देर पहले का दुःख और आक्रोश धुल गया। अपने सहज स्वाभाविक रूप में वे कहने लगीं– ''भट्‌टी पर देखा तो अजब तमाशा . . . समोसे कच्चे ही उतार दिए और इतने बना दिए कि दो बार खिला दो और गुलाबजामुन इतने कम कि एक पंगत में भी पूरे न पड़ें। उसी समय खोया मँगवाकर नए गुलाबजामुन बनाए। दोनों बहुएँ और किशोरीलाल तो बिचारे इतना जस मान रहे थे कि क्या बताऊँ? कहने लगे– ''अम्मा! तुम न होती तो आज भद्द उड़ जाती। अम्मा! तुमने लाज रख ली!'' मैंने तो कह दिया कि ''अरे, अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं। ये तो आजकल इनका रोटी–पानी का काम रहता है, नहीं तो मैं तो सवेरे से ही चली आती!''

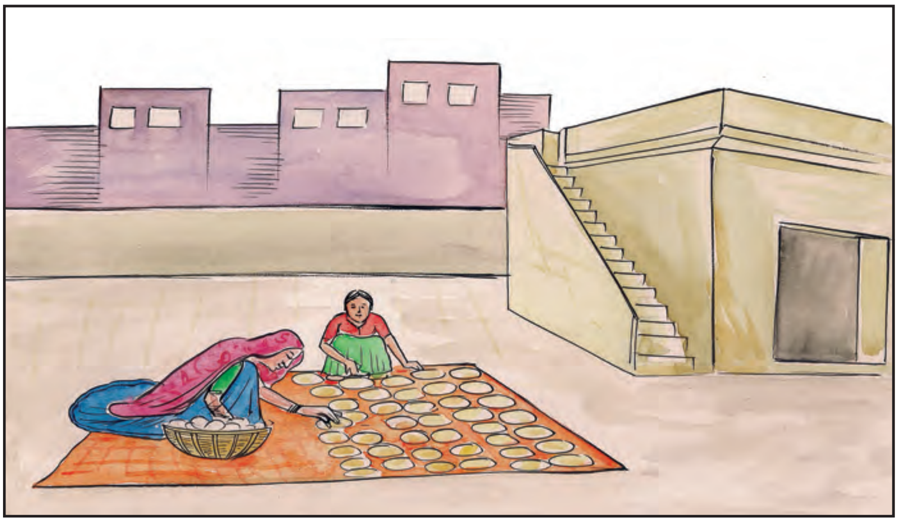

''तो संन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? उन्हें तुम्हारा आना–जाना अच्छा नहीं लगता बुआ?''

''यों तो मैं कहीं आऊँ–जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता और फिर कल किशोरी के यहाँ से बुलावा नहीं आया। अरे, मैं तो कहूँ कि घरवालों को कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्‌ठी और भंडार–घर सौंप दे? पर इन्हें अब कौन समझावे। कहने लगे, तू ज़बरदस्ती दूसरों के घर में टाँग अड़ाती फिरती है।'' और एकाएक उन्हें उस क्रोध–भरी वाणी और कटुवचनों का स्मरण हो आया जिनकी बौछार कुछ देर पहले ही उन पर होकर गुजर चुकी थी। याद आते ही फिर उनके आँसू बह चले।

''अरे, रोती क्या हो बुआ! कहना–सुनना तो चलता रहता है। संन्यासीजी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो, और क्या?''

''सुनने को तो सुनती ही हूँ, पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना–जाना इन्हें सुहाता नहीं, सो तू ही बता राधा, ये तो साल में ग्यारह महीने हरिद्वार रहते

हैं। इन्हें तो नाते–रिश्तेवालों से कुछ लेना–देना नहीं, पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है। मैं भी सबसे तोड़–ताड़ कर बैठ जाऊँ तो कैसे चले? मैं तो इनसे कहती हूँ कि जब पल्ला पकड़ा है तो अंत समय में भी साथ ही रखो, सो तो इनसे होता नहीं। सारा धरम–करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी–पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ। उस पर से कहीं आऊँ–जाऊँ, वह भी इनसे बर्दाश्त नहीं होता!'' और बुआ फूट–फूटकर रो पड़ीं। राधा ने आश्वासन देते हुए कहा–''रोओ नहीं बुआ, अरे वे तो इसलिए नाराज हुए कि बिना बुलाए तुम चली गईं।''

''बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? फिर घरवालों को कैसा बुलाना? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर नहीं जाऊँ और प्रेम रखे तो बिना बुलाए भी सिर के बल जाऊँ। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती? मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है इसी से दूसरों को देखकर मन भरमाती रहती हूँ।'' और वे हिचकियाँ लेने लगीं।

पापड़ों को फैलाकर स्वर को भरसक कोमल बनाकर राधा ने कहा– ''तुम भी बुआ बात को कहाँ–से–कहाँ ले गईं? अब चुप भी होओ! अच्छा देखो, तुम्हारे लिए एक पापड़ भूनकर लाती हूँ, खाकर बताना कैसा है?'' और वह पापड़ लेकर ऊपर चढ़ गई।

कोई सप्ताह–भर बाद बुआ बड़े प्रसन्न मन से आईं और संन्यासीजी से बोलीं– ''सुनते हो, देवरजी के ससुरालवालों की किसी लड़की का संबंध भागीरथी के यहाँ हुआ है। वे सब लोग यहीं आकर ब्याह कर रहे हैं। देवरजी के बाद तो उन लोगों से कोई संबंध ही नहीं रहा, फिर भी हैं तो समधी ही। वे तो तुमको भी बुलाए बिना नहीं मानेंगे। समधी को आखिर कैसे छोड़ सकते हैं?'' और बुआ पुलकित होकर हँस पड़ीं। संन्यासीजी की मौन उपेक्षा से उनके मन को ठेस पहुँची, फिर भी वे प्रसन्न थीं। इधर–उधर जाकर वे इस विवाह की प्रगति की खबरें लातीं! आखिर एक दिन वे यह भी सुन आईं कि उनके समधी यहाँ आ गए हैं और जोर–शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। सारी बिरादरी को दावत दी जाएगी–खूब रौनक होनेवाली है। दोनों ही पैसेवाले ठहरे।

''क्या जानें! हमारे घर तो बुलावा भी आएगा या नहीं, देवरजी को मरे पच्चीस बरस हो गए, उसके बाद से तो कोई संबंध ही नहीं रखा। रखे भी कौन, यह काम तो मर्दों का होता है, मैं तो मरदवाली होकर भी बेमरद की हूँ।'' और एक ठंडी साँस उनके दिल से निकल गई।

''अरे वाह बुआ! तुम्हारा नाम कैसे नहीं होगा। तुम तो समधिन ठहरीं। देवर चाहे न रहे पर कोई रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है!'' दाल पीसती हुई घर की बड़ी बहू बोली।

''है बुआ, नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' विधवा ननद बोली। बैठे–ही–बैठे दो कदम आगे सरककर बुआ ने बड़े उत्साह से पूछा–''तू अपनी आँखों से देखकर आई है नाम? नाम तो होना ही चाहिए। पर मैंने सोचा कि क्या जाने आजकल के फैशन में पुराने संबंधियों को बुलाना हो, न हो।'' और बुआ बिना दो पल भी रुके वहाँ से चल पड़ीं। अपने घर जाकर सीधे राधा भाभी के कमरे में चढ़ीं–''क्यों री राधा! तू तो जानती है

कि नई फैशन में लड़की की शादी में क्या दिया जावे है? समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले। खाली हाथ जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो पुराने ज़माने की ठहरी, तू ही बता दे क्या दूँ? अब कुछ बनाने का समय तो रहा नहीं, दो दिन बाकी हैं, सो कुछ बना–बनाया ही खरीद लाना।''

''क्या देना चाहती हो अम्मा? ज़ेवर, कपड़ा, शृंगारदान या कोई और चाँदी की चीज़?''

''मैं तो कुछ भी नहीं समझूँ री। जो कुछ पास है तुझे लाकर दे देती हूँ, जो तू ठीक समझे ले आना। बस, भद्द नहीं उड़नी चाहिए! अच्छा देखूँ पहले कि रुपये कितने हैं?'' और वे डगमगाते कदमों से नीचे आईं। दो–तीन कपड़ों की गठरियाँ हटाकर एक छोटा–सा बक्सा निकाला। उसका ताला खोला। इधर–उधर करके एक छोटी–सी डिबिया निकाली। बड़े जतन से उसे खोला–उसमें सात रुपए की कुछ रेजगारी पड़ी थी और एक अँगूठी। बुआ का अनुमान था कि रुपए कुछ ज्यादा होंगे, पर जब सात ही रुपए निकले तो सोच में पड़ गईं। रईस समधियों के घर में इतने से रुपयों से बिंदी भी नहीं लगेगी। उनकी नज़र अँगूठी पर गई। यह उनके मृतपुत्र की एक मात्र निशानी उनके पास रह गई थी। बड़े–बड़े आर्थिक संकटों के समय भी वे उस अँगूठी का मोह नहीं छोड़ सकी थीं। आज भी एक बार उसे उठाते समय उनका दिल धड़क गया, फिर भी उन्होंने पाँच रुपए और वह अँगूठी आँचल से बाँध ली। बक्से को बंद किया और फिर ऊपर को चलीं, पर इस बार उनके मन का उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया था और पैरों की गति शिथिल। राधा के पास जाकर बोलीं– ''रुपए तो नहीं निकले बहू। आएँ भी कहाँ से, मेरे कौन कमानेवाला बैठा है? उस कोठरी का किराया आता है, उसमें दो समय की रोटी निकल जाती है जैसे–तैसे!'' और वे रो पड़ीं। राधा ने कहा–''क्या करुँ बुआ, आजकल मेरा भी हाथ तंग है, नहीं तो मैं ही दे देती। अरे, पर तुम देने के चक्कर में पड़ती ही क्यों हो? आजकल तो लेन–देन का रिवाज़ ही उठ गया है।''

''नहीं रे राधा, समधियों का मामला ठहरा! पच्चीस बरस हो गए तो भी वे नहीं भूले और मैं खाली हाथ जाऊँ? नहीं–नहीं, इससे तो न जाऊँ सो ही अच्छा!''

''तो जाओ ही मत। चलो छुट्टी हुई, इतने लोगों में किसे पता लगेगा कि आईं या नहीं।'' राधा ने सारी समस्या का सीधा–सा हल बताते हुए कहा।

''बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जावेंगे और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी, तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो संबंध भी तोड़ लिया। नहीं–नहीं, तू यह अँगूठी बेच ही दे।'' और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने ज़माने की अँगूठी राधा के हाथ पर रख दी। फिर बड़े मिन्नत भरे स्वर में बोलीं, ''तू तो बाज़ार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना। बस, शोभा रह जावे इतना ख़याल रखना।''

गली में बुआ ने चूड़ी वाले की आवाज़ सुनी तो एकाएक ही उनकी नज़र अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर जाकर टिक गई। कल समधियों के यहाँ जाना है, ज़ेवर नहीं है तो कम–से–कम काँच की चूड़ी तो अच्छी पहन लें, पर एक अव्यक्त लाज ने उनके कदमों को रोक दिया, कोई देख लेगा तो! लेकिन दूसरे ही क्षण अपनी इस कमज़ोरी पर विजय पाती–सी वे पीछे के दरवाज़े पर पहुँच गईं और एक रुपया कलदार खर्च करके लाल–हरी चूड़ियों के बंद पहन लिए। पर सारे दिन हाथों को साड़ी के आँचल से ढँके–ढँके फिरीं।

शाम को राधा भाभी ने बुआ को चाँदी की एक सिंदूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर दे दिया। सब कुछ देख–पाकर बुआ बड़ी प्रसन्न हुईं और यह सोच–सोचकर कि जब वे ये सब दे देंगी तो उनकी समधिन पुरानी बातों की दुहाई दे–देकर उनकी मिलनसारिता की कितनी प्रशंसा करेंगी, उनका मन पुलकित होने लगा। अँगूठी बेचने का ग़म भी जाता रहा। पासवाले बनिए के यहाँ से एक आने का पीला रंग लाकर रात में उन्होंने साड़ी रँगी। शादी में सफेद साड़ी पहनकर जाना क्या अच्छा लगेगा? रात में सोईं तो मन कल की ओर दौड़ रहा था।

दूसरे दिन नौ बजते–बजते खाने का काम समाप्त कर डाला। अपनी रँगी हुई साड़ी देखी तो कुछ जँची नहीं। फिर ऊपर राधा के पास पहुँची–''क्यों राधा! तू तो रँगी साड़ी पहिनती है तो बड़ी आब रहती है, चमक रहती है, इसमें तो चमक आई नहीं?''

''तुमने कलफ जो नहीं लगाया अम्मा, थोड़ा–सा माँड़ दे देतीं तो अच्छा रहता। अभी दे लो, ठीक हो जाएगी। बुलावा कब का है?''

''अरे नए फैशनवालों की मत पूछो, ऐन मौकों पर बुलावा आता है। पाँच बजे का मुहरत है, दिन में कभी भी आ जावेगा।''

राधा भाभी मन–ही–मन मुस्करा उठीं।

बुआ ने साड़ी में माँड़ लगाकर सुखा दिया। फिर एक नई थाली निकाली, अपनी जवानी के दिनों में बुना हुआ क्रोशिए का एक छोटा सा मेज़पोश निकाला। थाली में साड़ी, सिंदूरदानी, एक नारियल और थोड़े–से बताशे सजाए, फिर जाकर राधा को दिखाया। संन्यासी महाराज सवेरे से इस आयोजन को देख रहे थे। उन्होंने कल से लेकर आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दे दी थी कि यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। हर बार बुआ ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा–''मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाए चली जाऊँगी?

अरे, वह पड़ोसवालों की नंदा अपनी आँखों से बुलावे की लिस्ट में नाम देखकर आई है, और बुलावेंगे क्यों नहीं? शहरवालों को बुलावेंगे और समधियों को नहीं बुलावेंगे क्या?''

तीन बजे के क़रीब बुआ को अनमने भाव से छत पर इधर–उधर घूमते देख राधा भाभी ने आवाज़ लगाई– ''गईं नहीं बुआ?''

एकाएक चौंकते हुए बुआ ने पूछा– ''कितने बज गए राधा? क्या कहा, तीन? सरदी में तो दिन का पता ही नहीं लगता है। बजे तीन ही हैं और धूप सारी छत पर से ऐसे सिमट गई मानो शाम हो गई हो।'' फिर एकाएक जैसे ख़याल आया कि यह तो भाभी के प्रश्न का उत्तर नहीं हुआ तो ज़रा ठंडे स्वर में बोलीं– ''मुहरत तो पाँच बजे का है, जाऊँगी तो चार बजे तक जाऊँगी, अभी तो तीन ही बजे हैं।'' बड़ी सावधानी से उन्होंने स्वर में लापरवाही का पुट दिया। बुआ छत पर से गली में नज़र फैलाए खड़ी थीं, उनके पीछे ही रस्सी पर धोती फैली

हुई थी, उसमें कलफ लगा था और अबरक छिड़का हुआ था। अबरक के बिखरे हुए कण रह–रहकर धूप में चमक जाते थे, ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता था।

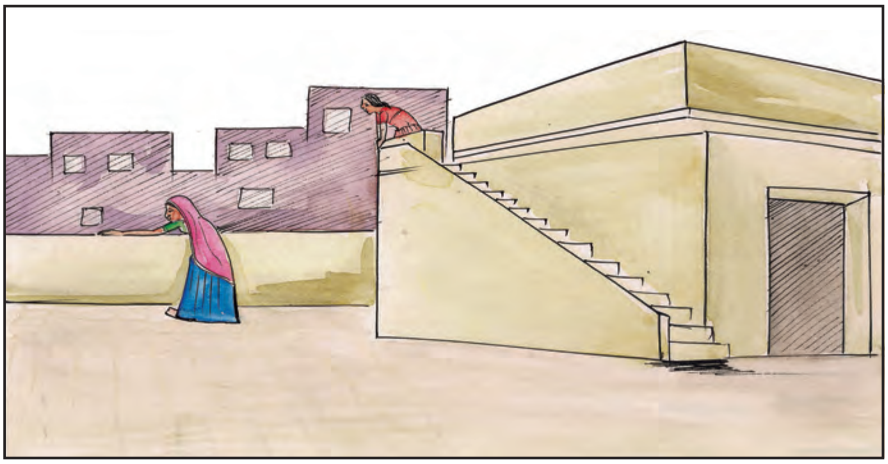

सात बजे के धुँधलके में राधा ने ऊपर से देखा की दीवार से सटी गली की ओर मुँह किए एक छाया–मूर्ति दिखाई दी। उसका मन भर आया। बिना कुछ पूछे इतना ही कहा, "बुआ! सर्दी में खड़ी–खड़ी यहाँ क्या कर रही हो? आज खाना नहीं बनेगा क्या? सात तो बज गए।"

"जैसे एकाएक नींद में से जागते हुए बुआ ने पूछा– "क्या कहा! सात बज गए?" फिर जैसे अपने से ही बोलते हुए पूछा, "पर सात कैसे बज सकते हैं, मुहरत तो पाँच बजे का था।" और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए, स्वर को भरसक संयत बनाकर बोलीं–"अरे, खाने का क्या है, अभी बना लूँगी। दो जनों का तो खाना है, क्या खाना और क्या पकाना।"

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे–धीरे हाथों से चूड़ियाँ खोलीं, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीज़ें बड़े जतन से अपने एकमात्र संदूक में रख दीं।

और फिर बड़े ही बुझे दिल से अँगीठी जलाने बैठीं।

शब्दार्थ

परित्यक्ता – त्यागी हुई स्त्री; **तजकर** – छोड़कर, त्यागकर; **अबाध** – बिना किसी रोक–टोक के; **शिथिल** – सुस्त; **गुरूर**– घमंड; **भरमाना** – भ्रम में डालना; **भरसक** – यथा संभव, जहाँ तक हो सके; **पुलकित** – खुश होते हुए; **कलदार** – सरकारी टकसाल में बना हुआ नया रूपया; **अबरक** – एक तरह का चमकदार पदार्थ।

अभ्यास

पाठ से

1. पाँच रुपए और अँगूठी को आँचल में बाँधते समय बुआ के मन में क्या विचार चल रहे थे?
2. सोमा बुआ अपने पति की प्रतीक्षा क्यों नहीं करती थीं?
3. सोमा बुआ किशोरी लाल के घर मुंडन के कार्यक्रम में पहुँची तो उन्होंने वहाँ क्या हालात देखे? अपने शब्दों में लिखिए।
4. बुआ की सोच और नए फैशनवाली सोच में आप किस तरह का अंतर पाते हैं?
5. ''मानो वे दूसरे के घर में नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों'' इस पंक्ति के माध्यम से सोमा बुआ के व्यक्तित्व के बारे में कौन–कौन सी बातें सामने आती हैं?
6. कहानी में आए पात्र सोमा बुआ के पति, राधा भाभी और विधवा ननद के व्यक्तित्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. आपके अनुसार कहानी का शीर्षक 'अकेली' क्यों है?

पाठ से आगे

BR2U4I

1. समधी के यहाँ से बुआ को बुलावा क्यों नहीं आया होगा? आपके अनुसार इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।
2. यदि समधी के यहाँ से बुलावा आ जाता तो कहानी क्या होती?
3. ''नई लाल–हरी चूड़ियाँ पहनने के बाद बुआ सारे दिन हाथ को साड़ी के आँचल से ढँके–ढँके फिरीं।'' बुआ ने ऐसा क्यों किया होगा?
4. शादी–विवाह जैसे सामाजिक समारोहों में अक्सर व्यक्ति अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता है और आर्थिक बोझ में दब जाता है। आपके अनुसार यह कहाँ तक उचित है?

भाषा के बारे में

अनुनासिक (ँ) : स्वरों का उच्चारण करते समय वायु को केवल मुख से ही बाहर निकाला जाता है। उच्चारण करते समय जब वायु को मुख के साथ–साथ नाक से भी बाहर निकाला जाए तो वहाँ अनुनासिक स्वर हो जाता है। अनुनासिकता का हिंदी में चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है। मानक वर्तनी में इसके लेखन सम्बन्धी नियम इस प्रकार हैं–

(क) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का कोई भी हिस्सा यदि शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता है तो अनुनासिकता के लिए चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाया जाना चाहिए; जैसे साँस, चाँद, गाँव, कुआँ, उँगली, पूँछ आदि।

(ख) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का यदि कोई भी हिस्सा शिरोरेखा के ऊपर निकला रहता है तो वहाँ अनुनासिकता को भी बिंदु से ही लिखना चाहिए; जैसे चोंच, कोंपल, मैं, में, केंचुआ, गेंद, सौंफ आदि।

अनुस्वार (ं) : हिंदी में अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है, जिसे (ं) से लिखा जाता है। इसे प्रायः स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। अनुस्वार का अपना कोई विशेष स्वरूप नहीं होता, बल्कि इसका उच्चारण इसके आगे आनेवाले व्यंजन से प्रभावित होता है। जैसे कि–

कवर्ग के पूर्व (ड्.) – पड्.कज – पंकज, गड्.गा – गंगा

चवर्ग के पूर्व (ञ्) – चञ्चल – चंचल, पञ्छी – पंछी

टवर्ग के पूर्व (ण्) – डण्डा – डंडा, कण्ठी – कंठी

तवर्ग के पूर्व (न्) – पन्त – पंत, अन्धा – अंधा

पवर्ग के पूर्व (म्) – चम्पक – चंपक, खम्भा – खंभा

BRBQ66

इसके अतिरिक्त सभी वर्णों के पहले आने पर अनुस्वार का उच्चारण पंचम वर्ण में से **न्** या **म्** किसी एक वर्ण की भाँति हो सकता है। जैसे संवाद में 'म्' की तरह और संसार में 'न्' की तरह। अनुस्वार के विपरीत आप पाएँगे कि अनुनासिक का स्वरूप स्थिर रहता है।

1. इस पाठ में अनुनासिक ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए दो तरह के संकेतों चन्द्र बिंदु (ँ) और बिंदु (ं) का उपयोग हुआ है और अनुस्वार को व्यक्त करने के लिए बिंदु (ं) का उपयोग कई जगह हुआ है। कक्षा में समूह बनाकर नीचे दी गई सारणी में ऐसे शब्दों को खोज कर लिखिए।

अनुनासिक (ँ)	अनुनासिक (ं)	अनुस्वार (ं)
पाँच	पापड़ों	पंकज

2. पाठ में आए अनुनासिक और अनुस्वार के उपयोग वाले शब्दों के अलावा ऐसे शब्दों का चयन कर एक सूची बनाइए, जिसमें अनुनासिक और अनुस्वार का प्रयोग हुआ हो।

अनुनासिक (ँ)	**अनुस्वार (ं)**

3. घर–बार, मिलना–जुलना, आस–पास, अभी–अभी आदि इस तरह के शब्द अक्सर प्रयोग में आते हैं, इस कहानी में भी आए हैं। कक्षा में समूह बनाकर इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़कर सूची बनाइए एवं उन्हें निम्नांकित सारणी के अनुसार वर्गीकृत कीजिए।

दोनों समान शब्द	**परस्पर विरोधी शब्द**	**विपरित लिंगी शब्द**	**पहला सार्थक दूसरा निरर्थक शब्द**	**दोनों निरर्थक शब्द**
धीरे–धीरे	आना–जाना	पति–पत्नी	चाय–वाय	आँय–बाँय

4. ''समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले''।

(क) यहाँ 'ठहरा' शब्द से क्या आशय है?

(ख) ''ठहरा'' शब्द के अलग–अलग अर्थ बताने वाले वाक्य लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. कहानी के अंत को दर्शाते हुए चित्र बनाइए और उस पर अपने विचार लिखिए।
2. विवाह के अवसर पर गीत गाए जाते हैं। इसी तरह से विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों का अपना एक संकलन तैयार कीजिए। घर के बड़ों से बातचीत करके अपने पसंद के किसी एक गीत को सीखकर समूह में गाइए।
3. आपने 'अकेली' कहानी पढ़ी। इस कहानी में निहित मूल भावों से मिलती–जुलती और भी कई कहानियाँ हैं, यथा– प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी', भीष्म साहनी की 'चीफ़ की दावत' आदि। शिक्षक की सहायता से इन कहानियों को पढ़कर निम्न आधारों पर चर्चा कीजिए–

   (क) पात्र
   (ख) सामाजिक स्थिति
   (ग) शब्दों का चयन
   (घ) भाषा आदि।

BRKL7T

पाठ 3.3 : जामुन का पेड़

कृश्न चंदर

__कृश्न चंदर__ का जन्म वर्तमान पाकिस्तान में स्थित वजीराबाद, गुजराँवाला में 23 नवंबर सन् 1914 ई. को हुआ। उर्दू और हिंदी के मशहूर कहानीकार के रूप में उनके कई उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास __एक गधे की आत्मकथा__ का सोलह से ज्यादा भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। लघुकथा __अन्नदाता__ पर ख़्वाजा अहमद अब्बास ने __'धरती के लाल'__ नाम से फिल्म भी बनाई है। इनके द्वारा लिखी गई कई कहानियों पर फिल्मों का निर्माण भी हुआ है। 1969 में उन्हें पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया। 8 मार्च सन् 1977 ई. को उनका देहावसान हो गया। संकलित कहानी उनके कहानी संग्रह __फूल और पत्थर__ से ली गई है।

रात को बड़े ज़ोर का झक्कड़ चला। सेक्रेटेरियेट के लॉन में जामुन का एक दरख़्त गिर पड़ा। सवेरे जब माली ने देखा तो उसे मालूम हुआ कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।

माली दौड़ा–दौड़ा चपरासी के पास गया, चपरासी दौड़ा–दौड़ा क्लर्क के पास गया, क्लर्क दौड़ा–दौड़ा सुपरिटेंडेंट के पास गया। सुपरिटेंडेंट दौड़ा–दौड़ा बाहर लॉन में आया। मिनटों में गिरे हुए पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई।

''बेचारा, जामुन का पेड़! कितना फलदार था।'' एक क्लर्क बोला।

''और इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं,'' दूसरा क्लर्क याद करते हुए बोला ।

''मैं फलों के मौसम में झोली भरकर ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुनें कितनी खुशी से खाते थे!'' तीसरा क्लर्क लगभग रुआँसा होकर बोला।

''मगर यह आदमी?'' माली ने दबे हुए आदमी की तरफ़ इशारा किया।

''हाँ, यह आदमी!'' सुपरिटेंडेंट सोच में पड़ गया।

''पता नहीं ज़िंदा है कि मर गया?'' एक चपरासी ने पूछा।

''मर गया होगा, इतना भारी पेड़ जिसकी पीठ पर गिरे, वह बच कैसे सकता है ?'' दूसरा चपरासी बोला।

''नहीं मैं ज़िंदा हूँ।'' दबे हुए आदमी ने बड़ी मुश्किल से कराहते हुए कहा।

''ज़िंदा है।'' एक क्लर्क ने आश्चर्य से कहा।

''दरख़्त को हटाकर इसे जल्दी से निकाल लेना चाहिए,'' माली ने सुझाव दिया।

''मुश्किल मालूम होता है।'' एक कामचोर और मोटा चपरासी बोला, ''पेड़ का तना बहुत भारी और वज़नी है।''

''मुश्किल क्या है,'' माली बोला, ''अगर सुपरिटेंडेंट साहब हुक्म दें, तो पन्द्रह–बीस माली, चपरासी और क्लर्क लगाकर पेड़ के नीचे से दबे हुए आदमी को निकाला जा सकता है।''

''माली ठीक कहता है'', बहुत से क्लर्क एक साथ बोल पड़े, ''लगाओ ज़ोर हम तैयार हैं।''

एकदम बहुत से लोग पेड़ को उठाने को तैयार हो गए।

''ठहरो!'' सुपरिटेंडेंट बोला, ''मैं अंडर सेक्रेटरी से पूछ लूँ।''

सुपरिटेंडेंट अंडर सेक्रेटरी के पास गया। अंडर सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी के पास गया। डिप्टी सेक्रेटरी ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास गया। ज्वाइंट सेक्रेटरी चीफ़ सेक्रेटरी के पास गया। चीफ़ सेक्रेटरी मिनिस्टर के पास गया। मिनिस्टर ने चीफ़ सेक्रेटरी से कुछ कहा। चीफ़ सेक्रेटरी ने ज्वाइंट सेक्रेटरी से कुछ कहा। ज्वाइंट सेक्रेटरी ने डिप्टी सेक्रेटरी से कहा, डिप्टी सेक्रेटरी ने अंडर सेक्रेटरी से कहा। फ़ाइल चलती रही– इसी में आधा दिन बीत गया।

दोपहर के खाने पर दबे हुए आदमी के चारों ओर बहुत भीड़ हो गई थी। लोग तरह–तरह की बातें कर रहे थे। कुछ मनचले क्लर्कों ने समस्या को खुद ही सुलझाना चाहा। वे हुकूमत के फ़ैसले का इंतजार किए बिना पेड़ को अपने आप ही हटा देने का निश्चय कर रहे थे कि इतने में सुपरिटेंडेंट फ़ाइल लिए भागा–भागा आया। बोला :

''हम लोग खुद इस पेड़ को यहाँ से नहीं हटा सकते। हम लोग व्यापार विभाग से संबंधित हैं, और यह पेड़ की समस्या है, जो कृषि विभाग के अधीन है। मैं इस फ़ाइल को अर्जेंट मार्क करके कृषि विभाग में भेज रहा हूँ। वहाँ से उत्तर आते ही इस पेड़ को हटवा दिया जाएगा।''

दूसरे दिन कृषि विभाग से उत्तर आया कि पेड़ व्यापार विभाग के लॉन में गिरा है, इसलिए इस पेड़ को हटवाने की ज़िम्मेदारी व्यापार विभाग की है।

यह उत्तर पढ़ कर व्यापार विभाग को गुस्सा आ गया। उसने फ़ौरन लिखा कि पेड़ों को हटवाने या न हटवाने की ज़िम्मेदारी कृषि विभाग पर लागू होती है, व्यापार विभाग का इससे कोई संबंध नहीं।

दूसरे दिन भी फ़ाइल चलती रही। शाम को जवाब आया। हम मामले को हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले कर रहे हैं, क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट केवल अनाज और खेतीबाड़ी के मामलों में फ़ैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ एक फलदार पेड़ है, इसलिए यह पेड़ हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।

रात को माली ने दबे हुए आदमी को दाल–भात खिलाया। यद्यपि लॉन के चारों तरफ़ पुलिस का पहरा था कि कहीं लोग कानून को अपने हाथ में लेकर पेड़ को खुद ही हटवाने की कोशिश न करें। मगर एक पुलिस कॉन्स्टेबल को दया आ गई और उसने माली को दबे हुए आदमी को खाना खिलाने की इजाजत दे दी।

माली ने दबे हुए आदमी से कहा, "तुम्हारी फ़ाइल चल रही है। आशा है कल तक फ़ैसला हो जाएगा।"

दबा हुआ आदमी कुछ नहीं बोला।

माली ने पेड़ के तने को ध्यान से देखकर कहा, "अच्छा हुआ कि तना तुम्हारे कूल्हे पर गिरा, अगर कमर पर गिरता तो रीढ़ की हड्डी टूट जाती।"

दबा हुआ आदमी फिर भी कुछ नहीं बोला।

माली ने फिर कहा, "तुम्हारा यहाँ कोई वारिस है तो मुझे उसका अता–पता बताओ, मैं उन्हें खबर देने की कोशिश करूँगा।"

"मैं लावारिस हूँ" दबे हुए आदमी ने बड़ी मुश्किल से कहा।

माली खेद करते हुए वहाँ से हट गया।

तीसरे दिन हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट का जवाब आ गया। बड़ा कड़ा जवाब था, और व्यंग्यपूर्ण।

हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी साहित्य प्रेमी आदमी जान पड़ता था। उसने लिखा था, "आश्चर्य है, इस समय जब हम 'पेड़ लगाओ स्कीम' ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं, और वह भी एक फलदार पेड़ को, और वह भी जामुन के पेड़ को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है? हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाज़त नहीं दे सकता।"

"अब क्या किया जाए?" इस पर एक मनचले ने कहा, "अगर पेड़ काटा नहीं जा सकता तो इस आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए।"

''यह देखिए''– उस आदमी ने इशारे से बताया, ''अगर इस आदमी को बिल्कुल बीच में से अर्थात् धड़ से काटा जाए तो आधा आदमी इधर से निकल जाएगा और आधा उधर से बाहर आ जाएगा और पेड़ वहीं का वहीं रहेगा।''

''मगर इस तरह से तो मैं मर जाऊँगा।'' दबे हुए आदमी ने आपत्ति प्रकट की।

''यह भी ठीक कहता है'' एक क्लर्क बोला।

आदमी को काटने वाली युक्ति प्रस्तुत करने वाले ने भरपूर विरोध किया, ''आप जानते नहीं हैं? आजकल प्लास्टिक सर्जरी कितनी उन्नति कर चुकी है। मैं समझता हूँ– अगर इस आदमी को बीच में से काटकर निकाल लिया तो प्लास्टिक सर्जरी से धड़ के स्थान पर इस आदमी को फिर से जोड़ा जा सकता है।''

इस बार फ़ाइल को मेडिकल डिपार्टमेंट में भेजा गया। मेडिकल डिपार्टमेंट ने फ़ौरन एक्शन लिया, और जिस दिन फाइल उनके विभाग में पहुँची उसके दूसरे ही दिन उन्होंने अपने विभाग का सबसे योग्य प्लास्टिक सर्जन छानबीन के लिए भेज दिया। सर्जन ने दबे हुए आदमी को अच्छी तरह टटोलकर, उसका स्वास्थ्य देखकर खून का दबाव देखा, नाड़ी की गति को परखा, दिल और फेफड़ों की जाँच करके रिपोर्ट भेज दी कि इस आदमी का प्लास्टिक ऑपरेशन तो हो सकता है और ऑपरेशन सफल भी होगा, मगर आदमी मर जाएगा।

इसलिए यह फ़ैसला भी रद्द कर दिया गया।

रात को माली ने दबे हुए आदमी के मुँह में खिचड़ी डालते हुए उसे बताया कि अब मामला ऊपर चला गया है, सुना है कि कल सेक्रेटेरिएट के सारे सेक्रेटरियों की मीटिंग होगी। उसमें तुम्हारा केस भी रखा जाएगा। उम्मीद है, सब काम ठीक हो जाएगा।

दबा हुआ आदमी एक आह भरकर धीरे से बोला :

''ये तो माना कि तग़ाफ़ुल न करोगे,
लेकिन ख़ाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक।''

माली ने अचंभे से मुँह में उँगली दबा ली, और चकित भाव से बोला, ''क्या तुम शायर हो?''

दबे हुए आदमी ने धीरे से सिर हिला दिया।

दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हेड–क्लर्क को, थोड़ी ही देर में सेक्रिटेरिएट में यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है बस, फिर क्या था, लोगों का झुंड का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली–गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रिटेरिएट का लॉन भाँति–भाँति के शायरों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों ओर मुशायरे का सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरिएट के कई क्लर्क और अंडर सेक्रेटरी तक, जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी ग़ज़लें और नज़्में सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी ग़ज़लों को दुरस्त करने पर मजबूर करने लगे।

जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी एक शायर है, तो सेक्रेटेरिएट की सब–कमेटी ने फैसला किया कि चूँकि दबा हुआ आदमी एक शायर है, इसलिए इस फ़ाइल का संबंध न एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट से है, न हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट से, बल्कि सिर्फ कल्चरल डिपार्टमेंट से है। कल्चरल डिपार्टमेंट से अनुरोध किया गया कि जल्द से जल्द मामले का फ़ैसला करके अभागे शायर को इस फलदार पेड़ से छुटकारा दिलाया जाए।

फ़ाइल कल्चरल डिपार्टमेंट के अनेक विभागों से गुज़रती हुई साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी के पास पहुँची। बेचारा सेक्रेटरी उसी समय अपनी गाड़ी में सवार होकर सेक्रेटेरिएट पहुँचा और दबे हुए आदमी से इंटरव्यू लेने लगा।

''तुम शायर हो?'' उसने पूछा।

''जी हाँ !'' दबे आदमी ने जवाब दिया।

''क्या उपनाम रखते हो?''

''ओस!''

''ओस?'' सेक्रेटरी ज़ोर से चीखा, ''क्या तुम वही ''ओस'' हो जिसका कविता संग्रह ''ओस के फूल'' अभी हाल में प्रकाशित हुआ है?''

दबे हुए शायर ने इक़रार में सिर हलाया।

''क्या तुम हमारी अकादमी के मेंबर हो?'' सेक्रेटरी ने पूछा।

''नहीं।''

''आश्चर्य है,'' सेक्रेटरी ज़ोर से चीखा, ''इतना बड़ा शायर– 'ओस के फूल' का लेखक और हमारी अकादमी का मेंबर नहीं है। उफ़–उफ़, कैसी भूल हो गई हमसे, कितना बड़ा शायर और कैसी अँधेरी गुमनामी में दबा पड़ा है।''

''गुमनामी नहीं– एक दरख़्त के नीचे दबा पड़ा हूँ, कृपया मुझे इस पेड़ के नीचे से निकालिए।''

''अभी बंदोबस्त करता हूँ।'' सेक्रेटरी फौरन बोला और फौरन उसने अपने विभाग में रिपोर्ट की।

दूसरे दिन सेक्रेटरी भागा–भागा शायर के पास आया और बोला, ''मुबारक हो, मिठाई खिलाओ, हमारी सरकारी साहित्य अकादमी ने तुम्हें अपनी केंद्रीय शाखा का मेंबर चुन लिया है, यह लो चुनाव पत्र।''

''मगर मुझे इस पेड़ के नीचे से तो निकालो'', दबे हुए आदमी ने कराहकर कहा। उसकी साँस बड़ी

मुश्किल से चल रही थी और उसकी आँखों से मालूम होता था कि वह घोर पीड़ा और यातना में पड़ा है।

''यह हम नहीं कर सकते।'' सेक्रेटरी ने कहा, ''और जो हम कर सकते थे, वह हमने कर दिया। बल्कि हम यहाँ तक तो कर सकते हैं कि अगर तुम मर जाओ तो तुम्हारी बीवी को वज़ीफा दे सकते हैं, अगर तुम दरख्वास्त दो तो हम वह भी कर सकते हैं।''

''मैं अभी जीवित हूँ।'', शायर रुक–रुक कर बोला, ''मुझे ज़िंदा रखो।''

''मुसीबत यह है'', सरकारी साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी हाथ मलते हुए बोला, ''हमारा विभाग सिर्फ कल्चर से संबंधित है। उसके लिए हमने फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया और अर्जेंट लिखा है।

शाम को माली ने आकर दबे हुए आदमी को बताया, ''कल फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आकर इस पेड़ को काट देंगे और तुम्हारी जान बच जाएगी।''

माली बहुत खुश था। दबे हुए आदमी का स्वास्थ्य जबाव दे रहा था, मगर वह किसी न किसी तरह अपने जीवन के लिए लड़े जा रहा था। कल तक....... सवेरे तक....... किसी न किसी तरह उसे जीवित रहना है।

दूसरे दिन जब फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आरी, कुल्हाड़ी लेकर पहुँचे तो उनको पेड़ काटने से रोक दिया गया। मालूम हुआ कि विदेश–विभाग से हुक्म आया था कि इस पेड़ को न काटा जाए। कारण यह था कि इस पेड़ को दस साल पहले पिटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरिएट के लॉन में लगाया था। अब अगर यह पेड़ काटा गया तो इस बात का काफ़ी अंदेशा था कि पिटोनिया सरकार से हमारे संबंध सदा के लिए बिगड़ जाएँगे।''

''मगर एक आदमी की जान का सवाल है'', एक क्लर्क चिल्लाया।

''दूसरी ओर दो राज्यों के संबंधों का सवाल है'', दूसरे क्लर्क ने पहले क्लर्क को समझाया, ''और यह भी तो समझो कि पिटोनिया सरकार हमारे राज्य को कितनी सहायता देती है– क्या उनकी मित्रता की ख़ातिर एक आदमी के जीवन का भी बलिदान नहीं कर सकते?''

''शायर को मर जाना चाहिए?''

''निःसंदेह।''

अंडर सेक्रेटरी ने सुपरिटेंडेंट को बताया, ''आज सवेरे प्रधानमंत्री दौरे से वापस आ गए हैं। आज चार बजे विदेश विभाग इस पेड़ की फ़ाइल उनके सामने पेश करेगा, जो वे फ़ैसला लेंगे वही सबको स्वीकार होगा।''

शाम के पाँच बजे स्वयं सुपरिटेंडेंट शायर की फ़ाइल लेकर उसके पास गया, ''सुनते हो?'', आते ही वह खुशी से फ़ाइल को हिलाते हुए चिल्लाया, ''प्रधानमंत्री ने इस पेड़ को काटने का हुक्म दे दिया है और इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली है कल यह पेड़ काट दिया जाएगा और तुम इस संकट से छुटकारा हासिल कर लोगे। सुनते हो, आज तुम्हारी फ़ाइल मुकम्मल हो गई।''

मगर शायर का हाथ ठंडा था। आँखों की पुतलियाँ निर्जीव थीं और चींटियों की एक लंबी पंक्ति उसके मुँह में जा रही थी......।

उसके जीवन की फ़ाइल मुकम्मल हो चुकी थी।

शब्दार्थ

झक्कड़ – आँधी; **दरख़्त** – पेड़; **हुकूमत** – शासन; **इजाज़त** – अनुमति; **लावारिस** – अनाथ; **तग़ाफ़ुल** – धोखा करना; **ख़ाक हो जाना** – राख हो जाना, नष्ट हो जाना; **गुमनामी** – जिसकी कोई पहचान न हो; **दरख़्वास्त** – निवेदन, अर्जी; मुक़म्मल – पूर्ण, पूरा।

अभ्यास

पाठ से

1. जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी को आधा दिन बीत जाने तक भी क्यों नहीं निकाला जा सका?
2. आदमी को पेड़ के नीचे से निकालने के लिए फ़ाइल किन–किन विभागों में घूमती रही?
3. कृषि विभाग ने पेड़ हटाने का मामला हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिए?
4. पेड़ के नीचे दबे आदमी ने ग़ालिब का एक शे'र कहा। पाठ में खोजिए कि
   (क) वह शे'र क्या है?
   (ख) उसका क्या अर्थ है?
   (ग) उसने यह शे'र क्यों कहा?
5. ''उसके जीवन की फ़ाइल मुकम्मल हो चुकी थी।'' पंक्ति का क्या आशय है?
6. जामुन का पेड़ गिरने पर जब भीड़ इकट्ठी हुई तब क्लर्कों व माली की बातचीत में आप किस प्रकार का अंतर देखते हैं? उनकी बातचीत से उनके व्यक्तित्व के बारे में क्या पता चलता है?
7. प्रधानमंत्री ने इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली।'' इस पंक्ति में क्या व्यंग्य किया गया है?

पाठ से आगे

BS4DB4

1. जामुन के पेड़ को हटाने की जिम्मेदारी सभी विभाग एक दूसरे पर डालते रहे और किसी को भी आदमी को बचाने की चिंता नहीं थी। यह स्थिति हमारे व्यवस्था की कार्यप्रणाली के किस चरित्र को उजागर करती है?
2. आपके घर के सामने यदि पेड़ गिर जाए तो उसे हटाने के लिए आप क्या–क्या करेंगे?
3. यदि आप माली की जगह होते तो ऊपर के फैसले का इंतज़ार करते या नहीं? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों?
4. यदि पेड़ हटाने की फाइल को पर्यावरण विभाग, जल विभाग व शिक्षा विभाग को भेजना पड़े, तो वे विभाग पेड़ न हटाने के क्या तर्क देंगे?
5. आपके विचार से कहानी में मूल समस्या क्या है, पेड़ को हटाना या आदमी को निकालना? तर्क सहित अपना जवाब दीजिए।

भाषा के बारे में

BSD9CR

1. किसी भी भाषा में उसके संपर्क में आने वाली अन्य भाषाओं के शब्द सहज रूप से घुल–मिल जाते हैं। इस पाठ में ऐसे शब्दों का बहुतायत में प्रयोग हुआ है, जैसे– केस, क्लर्क, हुकूमत आदि। पाठ में ऐसे शब्दों को पहचानने का प्रयास करें जो आपको दूसरी भाषाओं के जान पड़ते हों। साथ ही यह भी लिखिए कि वे किस भाषा से लिए गए हैं?
2. इस कहानी में कई प्रशासनिक विभागों और पदानुक्रमों का जिक्र हुआ है, उन्हें छाँटकर उनके हिंदी नाम लिखिए।
3. किसी भी भाषा में संज्ञा के बहुवचन बनाने के अपने नियम होते हैं। हिंदी भाषा में किसी भी शब्द को बहुवचन में बदलने के भी कुछ नियम हैं। जैसे कि–

   (क) संज्ञा को कर्ता के स्थान पर बहुवचन में बदलने के नियम

   (ख) संज्ञा का संबोधन के रूप में उपयोग पर बहुवचन के नियम

   (ग) संज्ञा के अन्यत्र, जैसे कि विभक्ति के साथ प्रयोग में बहुवचन के नियम

   इसी तरह संज्ञा में लिंग और अंतिम ध्वनि भी उसे बहुवचन में परिवर्तित करने को प्रभावित करती है। इस आधार पर विभिन्न ध्वनियों से समाप्त होने वाले तथा विभिन्न लिंग वाले शब्दों की कल्पना कर उनके बहुवचन रूपों को लिखिए। इस आधार पर संज्ञा को बहुवचन में बदलने के नियम बताइए।

संज्ञा को बहुवचन में बदलने के आधार

वचन बदलने का आधार	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	लड़का	लड़के
विभक्ति के साथ	लड़के ने	लड़कों ने
संबोधन के साथ	ए लड़के!	ए लड़को!

योग्यता विस्तार

1. हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित व्यंग्य ''भोलाराम का जीव'' में भी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है। इसे पुस्तकालय से या अपने शिक्षकों की मदद से पढ़िए एवं कक्षा में चर्चा कीजिए।

2. प्रोजेक्ट कार्य–

   पाठ में कई प्रशासनिक कार्यालयों के नामों का उल्लेख हुआ है। इसी तरह–

   (क) आपके आसपास कौन–कौन से प्रशासनिक कार्यालय हैं? इनकी सूची तैयार कीजिए।

   (ख) अपने द्वारा बताए गए कार्यालयों में से किन्हीं तीन कार्यालयों में कौन–कौन से पद हैं, उनके हिंदी व अंग्रेजी (दोनों भाषाओं) में नाम लिखिए। अपने इस प्रोजेक्ट कार्य को विद्यालय/कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

BSH5EE

पाठ 3.4 : रीढ़ की हड्डी

BSH1G2

जगदीश चंद्र माथुर

*सुपरिचित नाटककार **जगदीश चंद्र माथुर** का जन्म सन् 16 जुलाई 1917 ई. को उत्तर प्रदेश के खुर्जा, ज़िला बुलंदशहर में हुआ। उन्होंने ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक लिखे हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ **भोर का तारा, ओ मेरे सपने** (एकांकी), **शारदीया कोणार्क, पहला राजा** (नाटक), **जिन्होंने जीना सीखा** तथा **दस तस्वीरें** (रेखाचित्र) आदि हैं। जगदीश चंद्र माथुर का निधन सन् 14 मई 1978 ई. को हुआ।*

पात्र परिचय

उमा	:	लड़की
रामस्वरूप	:	लड़की का पिता
प्रेमा	:	लड़की की माता
शंकर	:	लड़का
गोपाल प्रसाद	:	लड़के का बाप
रतन	:	रामस्वरूप का नौकर

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे में आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आती है वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते–चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।)

रामस्वरूप : अबे, धीरे–धीरे चल। . . . अबे, तख्त को उधर मोड़ दे . . उधर।

. . . बस । (तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।)

नौकर : बिछा दूँ साहब?

रामस्वरूप : (जरा तेज आवाज़) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ जब अक्ल बँट रही थी, तो तू देर से पहुँचा था क्या? ....बिछा दूँ साब.....और ये पसीना किसलिए बहाया है?

नौकर : (तख्ता बिछाता है।) ही – ही –ही।

रामस्वरूप : हँसता क्यों है? . . . अबे, हमने भी जवानी में कसरत की है। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। तख्त क्या चीज़ है?. . . उसे सीधा कर . . . यों बस। और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। . . . चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही। (नौकर जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ता साफ करते कुर्सियों पर भी दो–चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा का आना। गंदुमी रंग, छोटा कद, चेहरे की आवाज़ से ज़ाहिर होता है कि किसी काम में बहुत व्यस्त है। उनके पीछे–पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है।. . . खाली हाथ। बाबू रामस्वरूप दोनों की तरफ देखने लगते हैं।)

प्रेमा : मैं कहती हूँ, तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरुरत पड़ गई? एक तो वैसे ही जल्दी–जल्दी में . . .

रामस्वरूप : धोती?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो और फिर न जाने किसलिए . . .

रामस्वरूप : लेकिन धोती माँगी किसने?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन?

रामस्वरूप : क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है? मैंने कहा था– धोबी के यहाँ से जो चादर आई है, उसे माँग ला। . . . अब तेरे लिए दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का!

प्रेमा : अच्छा जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बाक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं न, उन्हीं में से चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

प्रेमा : दरी तो यहीं रखी है कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए।) और बीबी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी। . . . जल्दी जा। (रतन जाता है। पति–पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए?. . . और तुम उसकी माँ किस मर्ज़ की दवा हो? जैसे–तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाए, तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करुँ? सारे जतन करके हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा–लिखाकर इतना सर चढ़ा कर रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई–लिखाई का जंजाल आता नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ' 'ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो स्त्री–सुबोधिनी पढ़ ली। सच पूछो तो स्त्री–सुबोधिनी में ऐसी–ऐसी बातें लिखी हैं. . . ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए, एम.ए की पढ़ाई में होगी और आजकल के लच्छन ही अनोखे हैं. . .

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर चाहे रोक लो और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी! तुम्हें ठिठोली सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में?

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि जरा ठीक–ठीक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीम–टाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर–वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफरत है। मेरा कहना था कि आँचल से मुँह लपेट लेट गई; भई मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से।

रामस्वरूप : न जाने कैसे इसका दिमाग है। वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारोबार चलता है।

प्रेमा : अरे, मैंने तो पहले ही कहा था इंट्रेंस ही पास करा लेते– लड़की अपने हाथ रहती और उतनी परेशानी उठानी न पड़ती। पर तुम तो . . .

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप , चुप . . . (दरवाजे में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी जुबान पर काबू नहीं है। कल ही बता दिया था कि उन लोगों के सामने जिक्र और ही ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी।

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी, जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना । बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : तो उमा को जैसे–तैसे तैयार कर दो। न सही पाउडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे और नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन ! . . . इधर ला, इधर बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल। पकड़ तो जरा उधर से। (चद्दर बिछाते हैं।)

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीज़ें बना दी हैं। फल रखे हैं ही। चाय तैयार है और टोस्ट भी। मगर हाँ मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खनवाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सुझती ही नहीं। अब बताओ रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए सो नखरों के मारे . . .

प्रेमा : यहाँ का काम कौन–सा ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक–ठाक है ही, बाजा–सितार आ ही गया।

नाश्ता यहाँ बराबरवाले कमरे में करना है– ट्रे में रखा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर से रतन मक्खन ले ही आएगा। दो आदमी ही तो हैं।

रामस्वरूप : हाँ, एक तो बाबू गोपाल प्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। ये लोग जरा ऐसे ही हैं। गुस्सा तो मुझे बहुत आता है, इनके दकियानूसी ख्यालों पर। खुद पढ़े–लिखे हैं, सभा–सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी–लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है, तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है, मेडिकल कॉलेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है तालीम का दूसरा। क्या करूँ मजबूरी है। मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और बापों को ऐसी कोरी–कोरी सुनाता कि ये भी . . .

रतन : (जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी–जल्दी) बाबूजी, बाबूजी!

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आए हैं।

रामस्वरूप : (दरवाजे से बाहर झाँककर, जल्दी से मुँह अंदर करते हुए) अरे, ऐ प्रेमा, वे आ भी गए (नौकर पर नजर पड़ते ही) और तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ! गया नहीं मक्खन लाने? सब चौपट कर दिया। . . . अबे, उधर से, अंदर के दरवाजे से जा (नौकर अंदर जाता है) . . . और तुम जल्दी करो। प्रेमा, उमा को समझा देना थोड़ा–सा गा देगी। (प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ जाती है। उसकी धोती जमीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)

प्रेमा : उँह! यह बाजा नीचे ही रख गया है। कम्बख्त।

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ . . . . .जल्दी। (प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ । आइए, आइए। . . .हँ–हँ–हँ।

(बाबू गोपाल प्रसाद और उसके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक–चतुराई टपकती है। आवाज से मालूम होता है काफी अनुभवी और फितरती महाशय है। उनका लड़का कुछ खीसे निपोरनेवाले नौजवानों में से है, आवाज पतली है और खिसियाहट भरी। झुकी कमर इसकी खासियत है।)

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए) हँ. . . हँ इधर तशरीफ लाइए, इधर . . .। (बाबूगोपाल प्रसाद बैठते हैं मगर बेंत गिर पड़ता है।)

रामस्वरूप : यह बेंत! लाइए मुझे दीजिए कोने में रख देता हूँ। (सब बैठते हैं।) हँ–हँ! . . . मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

गो. प्रसाद : (खँखारकर) नहीं, तांगेवाला जानता था। . . . और फिर हमें तो यहाँ आना ही था, रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ, यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी।

गो. प्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम, वैसा आपका काम, आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ–हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके हँ–हँ सेवक ही हैं। हँ–हँ (थोड़ी देर बाद लड़के की तरफ मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालेज की छुट्टियाँ नहीं हैं। वीक एंड में चला आया था।

रामस्वरूप : आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल भर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल दो साल।

रामस्वरूप : साल दो साल?

शंकर : हँ–हँ–हँ! . . . जी, एकाध साल का मार्जिन रखता हूँ. . . . . .

गो. प्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा ज़माना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते, तो वैसे–की–वैसी ही भूख।

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गो. प्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर–सी मलाई आती थी और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह होते हैं स्कूलों में। तब न वॉलीबॉल जानता था, न टेनिस, न बैडमिंटन। बस, कभी हॉकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है। (शंकर और रामस्वरूप खीसे निपोरते हैं।)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! उस जमाने की बात ही दूसरी थी। हँ–हँ . . .

गो. प्रसाद : (जोशीली आवाज में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की सिटिंग हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की, कि आजकल के एम. ए. भी मुकाबला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गो. प्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस ज़माने की जब याद आती है, अपने को ज़ब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ–हँ–हँ ! . . जी हाँ, वह तो रंगीन ज़माना था, रंगीन जमाना! हँ–हँ–हँ . . . (शंकर भी ही ही करता है।)

गो. प्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर बिजिनेस की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (चौंककर) बिजिनेस? बिजि. . . (समझकर) आह! . . .अच्छा–अच्छा! लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए। (उठते हैं।)

गो. प्रसाद : यह सब आप क्यों तकल्लुफ करते हैं?

रामस्वरूप : हँ–हँ तकल्लुफ किस बात का है? हँ–हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ–हाँ– माफ कीजिएगा जरा। अभी हाजिर हुआ। (अंदर जाते हैं।)

गो. प्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज़ में) आदमी तो भला है। मकान–वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है?

शंकर : जी . . .

(कुछ खँखारकर इधर–उधर देखता है।)

गो. प्रसाद : क्यों क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गो. प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए, तो कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की बैक बोन . .. .

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए। मेज पर रख देते हैं।)

गो. प्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ–हँ–हँ? आपको विलायती चाय पसंद है या हिन्दुस्तानी?

गो. प्रसाद : नहीं–नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और चीनी भी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भाई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए, तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ–हँ। कहते तो आप सही हैं। (प्याला पकड़ाते हुए)

शंकर : (खँखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेनेवालों पर टैक्स लगाएगी।

गो. प्रसाद : (चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे, सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है, तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गो. प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।)

मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाली भी चूँ न करेंगी। बस शर्त यह है कि औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के स्टैंडर्ड के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले, फिर देखिए सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

रामस्वरूप : (जोर से हँसते हुए) वाह—वाह! खूब सोचा आपने। वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल प्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं।) लीजिए।

गो. प्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या ख्याल है, शंकर बाबू?

रामस्वरूप : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए?

गो. प्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है कि बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले ही कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पौडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो आप देख लीजिएगा।

गो. प्रसाद : देखना क्या! जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ—हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ—हँ।

गो. प्रसाद : और जायचा (जन्मपत्री) तो मिल ही गया होगा?

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस खुद—ब—खुद मिला हुआ समझिए।

गो. प्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों को भनक पड़ी है, यह गलत है न?

रामस्वरूप : (चौंककर) क्या?

गो. प्रसाद : यह पढ़ाई–लिखाई के बारे में! जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस, हद–से–हद मैट्रिक पास होनी चाहिए।

क्यों शंकर?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करनी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गो. प्रसाद : और क्या साहब! देखिए, कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़के को बी. ए, एम. ए. तक पढ़ाया है, तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और पॉलिटिक्स वगैरह पर बहस करने लगीं, तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द की दाढ़ी होती है, औरतों की नहीं।

हँ–हँ–हँ

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

गो. प्रसाद : हाँ, हाँ वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं, जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद, पी चुका।

रामस्वरूप : (गोपाल प्रसाद से) आप?

गो. प्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ टोस्ट नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन . . .

गो. प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट वोस्ट मैं खाता ही नहीं।

रामस्वरूप : हँ–हँ (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना . . . सिगरेट मँगवाऊँ?

गो. प्रसाद : जी नहीं।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर छिपकर उसे ताक रहे हैं।)

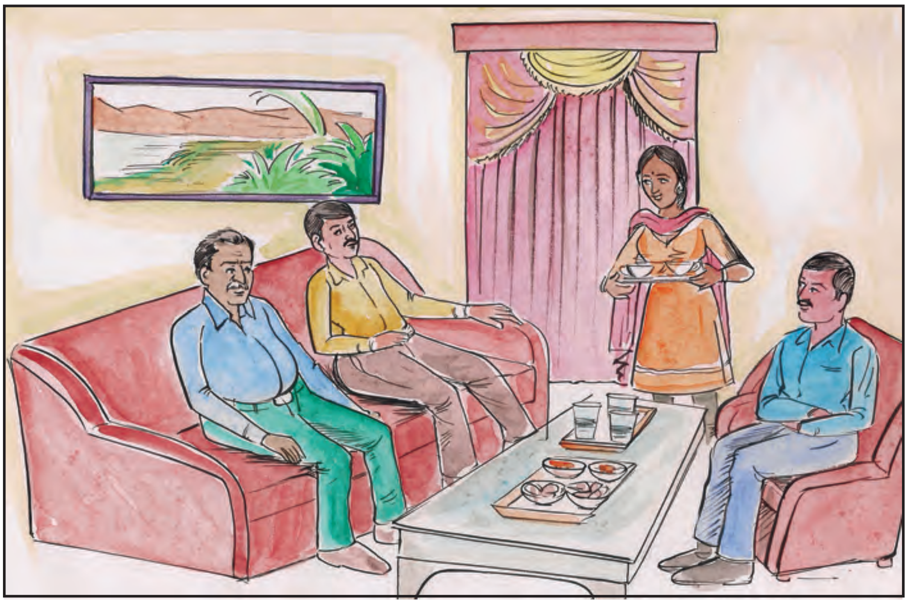

रामस्वरूप : हँ–हँ . . . हँ–हँ, आपकी लड़की है? लाओ बेटी, पान मुझे दो।

(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को दे देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है, नाक पर रखा हुआ सोने की रिमवाला चश्मा दिखता है। बाप–बेटे चौंक उठते हैं।)

रामस्वरूप : (जरा सकपकाकर) जी, वह तो वह पिछले महीने में इसकी आँखें आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गो. प्रसाद : पढ़ाई लिखाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

गो. प्रसाद : हूँ। (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी!

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे के पास (उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छबि है. . . हाँ, कुछ गाना–बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत, 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती–सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते–गाते एकदम रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा!

गो. प्रसाद : नहीं–नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटी।

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा।

(उमा बैठती है।)

गो. प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग भी सीखी है . . .

उमा : (चुप)।

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गो. प्रसाद : हूँ। यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी, हँ–हँ–हँ।

गो. प्रसाद : ठीक है। . . . लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम जीते हैं?

(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं, लेकिन उमा चुप है, उस तरह गर्दन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप : जवाब दो उमा। (गो. प्रसाद से) हँ– हँ जरा शरमाती है। इनाम तो इसने . . .

गो. प्रसाद : (जरा रुखी आवाज में) जरा मुँह भी तो खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो आप क्या कह रहे हैं? जवाब दो न।

उमा : (हल्की, लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी, मेज बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी, मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है, पसंद आ गई तो अच्छा है वरना. . .

रामस्वरूप : (चौककर खड़े हो जाते हैं) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दो बाबू जी! ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आए हैं, उनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती है? क्या वे बेबस भेड़–बकरियाँ हैं? जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर.......?

गो. प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : (तेज आवाज में) हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती, जो आप इतनी देर से नाप तौल कर रहे हैं? और जरा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछले फरवरी में ये लड़कियों के हॉस्टल के इर्द–गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से क्यों भगाए गए थे?

शंकर : बाबू जी चलिए।

गो. प्रसाद : लड़कियों के हॉस्टल में? क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो?

(रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह ताक–झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का ख्याल तो है, लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा?

गो. प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है, आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए . . . मेरी छड़ी कहाँ है? मैं चलता हूँ! (बेंत ढूँढ़कर उठाते हैं।) बी. ए. पास! उफ्फोह! गजब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है, आओ, बेटे, चलो. . . . (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं– यानी बैकबोन, बैकबोन।

(बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है। उनके लड़के के रुआँसापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है, लेकिन उसकी हँसी सिसकियों में तब्दील हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।)

प्रेमा : उमा, उमा . . . रो रही है।

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।)

रतन : बाबू जी मक्खन।

(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

मर्ज़ – बीमारी/रोग; **ग्रामोफोन** – एक तरह का यंत्र जिससे संगीत सुना जाता था; **इंट्रेंस** – प्रवेश; **दकियानूसी** – पुरातन पंथी, रुढ़िवादी; **तकल्लुफ** – शिष्टाचार, औपचारिकता; **बेबसी** – लाचारी।

अभ्यास

पाठ से

1. लड़केवालों के स्वागत में रामस्वरूप के घर में हो रही तैयारियों का वर्णन कीजिए।
2. पुराने ज़माने की लड़कियों और उमा के बीच क्या अंतर है?
3. उमा गोपाल प्रसाद से यह क्यों कहती है, ''घर जाकर यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी है भी या नहीं?''
4. पाठ के आधार पर उमा का चरित्र–चित्रण कीजिए।
5. लड़केवालों के लौटने के बाद उमा की हँसी सिसकियों में क्यों तब्दील हो गई?
6. उमा के पिता द्वारा अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के समय उसे छिपाना। यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को दिखाता है?

पाठ से आगे

BT5WHP

1. पढ़ी–लिखी लड़की के घर में आ जाने से स्थितियाँ किस प्रकार बदलती हैं? अपना उत्तर तर्क सहित लिखिए।
2. क्या लड़के और लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था अलग–अलग तरह की होनी चाहिए? कारण बताते हुए अपना उत्तर लिखिए।
3. ''अब मुझे कह लेने दो बाबूजी! ये जो महाशय खरीददार बनकर आए हैं। उनसे ज़रा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती है? क्या वे बेबस भेड़–बकरियाँ हैं जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर . . .?''

   (क) इस वक्तव्य में उमा ने किन प्रवृत्तियों पर चोट की है?

   (ख) वक्तव्य के अंत में अधूरे छोड़े गए वाक्य को पूरा कीजिए।
4. रामस्वरूप अपनी बेटी की पढ़ाई–लिखाई छुपाते हैं और गोपाल प्रसाद अपने बेटे की कमज़ोरियों पर पर्दा डालते हैं। क्या आपको उन दोनों का यह व्यवहार उचित लगता है? अपने पक्ष के समर्थन में तर्क दीजिए।

भाषा के बारे में

BTESJC

1. पाठ में आए इन मुहावरों और लोकोक्ति के अर्थ लिखकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए–

   (क) बाप सेर है तो बेटा सवा सेर

   (ख) खींसे निपोरना

(ग) काँटों में घसीटना

(घ) चूँ न करना

(ङ) कानों में भनक पड़ना

(च) आँखें गड़ाकर देखना

2. इन वाक्यों के रेखांकित शब्दों को उनके हिंदी पर्यायवाची शब्दों से इस तरह बदलिए कि वाक्य का अर्थ न बदले–

(क) तुम्हारी <u>बेवकूफ़ी</u> से सारी मेहनत बेकार न हो जाए।

(ख) लड़कियों के <u>दिल</u> नहीं होते।

(ग) उनके <u>दकियानूसी</u> खयालों पर मुझे गुस्सा आता है।

(घ) उसकी हँसी सिसकियों में <u>तब्दील</u> हो जाती है।

(ङ) चीनी नाम के लिए डाली जाए तो <u>ज़ायका</u> क्या रहेगा?

3. हिंदी में कुछ शब्द पुल्लिंग रूप में प्रयोग किए जाते हैं किंतु उनके पर्यायवाची उर्दू शब्द स्त्रीलिंग रूप में है।
(क) उदाहरणों को समझते हुए तालिका पूरी कीजिए–

	हिंदी पुल्लिंग	उर्दू स्त्रीलिंग
उदाहरण–	मार्ग	राह
	विलंब	देर
	रोग	–––––––––
	स्वर	–––––––––
	व्यायाम	–––––––––
	चित्र	–––––––––

(ख) परिवर्तित उर्दू स्त्रीलिंग शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

4. पाठ में आए इन शब्दों को देखिए–

'टोस्ट–वोस्ट', पेंटिंग–वेंटिंग, पढ़ाई–वढ़ाई

शब्दों के इस तरह के युग्म में पहला शब्द सार्थक होता है और दूसरा निरर्थक। इन शब्दों में निरर्थक शब्द

के स्थान पर 'आदि' या 'वगैरह' लिखने से भी शब्दों के अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता है। जैसे– 'टोस्ट–वगैरह' को 'टोस्ट–आदि' भी लिखा जा सकता है।

अपनी बातचीत में आमतौर पर प्रयोग में आने वाले 20 ऐसे ही शब्दों को लिखिए।

5. नीचे एक बाल नाटिका के कुछ संवाद दिए गए हैं। खिलाड़ियों के दो दलों के बीच संवाद हो रहा है। दल एक के कथन पूरे–पूरे दिए गए हैं, किंतु दल दो के कथन नहीं दिए गए हैं। आप अपनी समझ के अनुसार दल दो के कथनों को लिखिए।

दल एक – अरे, तुम लोग कहाँ जा रहे हो?

दल दो – ——————————————————

दल एक – क्या? तिकोने मैदान में? किसलिए?

दल दो – ——————————————————

दल एक – नहीं, तुम वहाँ नहीं खेल सकते। वह हमारा मैदान है, क्योंकि हमने उसे पहले ढूँढ़ा है।

दल दो – ——————————————————

दल एक – नहीं, तुम कोई और जगह ढूँढ़ो।

दल दो – ——————————————————

दल एक – हम नहीं मानते। वह हमारा मैदान है।

दल दो – ——————————————————

दल एक – तुम झगड़ा करना चाहते हो?

दल दो – ——————————————————

दल एक – आओ, वहाँ खड़े मत रहो।

दल दो – ——————————————————

योग्यता विस्तार

1. महिलाएँ आजकल कई क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। क्षेत्र का नाम लिखकर उस क्षेत्र की सफल/प्रसिद्ध महिलाओं के नाम लिखिए–

क्षेत्र	कार्य/विधा	उल्लेखनीय महिला
उदाहरण– संगीत	वायलिन वादन	एन. राजम

BTNNKZ

2. दहेज–प्रथा पर लगभग 300 शब्दों में एक निबंध लिखिए।
3. समाचार पत्र–पत्रिकाओं से दहेज प्रताड़ना से संबद्ध खबरों की कतरन एकत्र कर विद्यालय की भित्ति–पत्रिका में लगाइए।

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार

बच्चे किसी भी देश के सर्वोच्च संपत्ति होने के साथ–साथ भविष्य के संभावित मानव संसाधन भी है इस बात को दृष्टिगत रखते हुए संविधान के 86वें संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा अनुच्छेद 21(A) जोड़ा गया, जो यह प्रावधान करता है कि राज्य कानून बनाकर 6 से 14 आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपबंध करायेगा।

इसी प्रकार अप्रैल 2002 में कश्मीर राज्य को छोड़कर संपूर्ण भारत में यह लागू हुआ। इस अधिकार को व्यवहारिक रूप देने के लिए संसद में अनुच्छेद 45 के तहत निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित हुआ तथा अप्रैल 2010 से यह लागू हुआ।

इकाई 4 : छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

पाठ 4.1 : सुरुज टघलत हे . . .

पाठ 4.2 : लोककथाएँ

पाठ 4.3 : नँदिया–नरवा मा तँउरत हे

इकाई 4

छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

शिक्षा और हमारे जीवन से भाषा का गहरा संबंध है। छत्तीसगढ़ की मुख्य भाषा छत्तीसगढ़ी है। इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। राज्य में आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति से संबंधित प्रश्न भी पूछे जाते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा का अपना समृद्ध साहित्य है, जिसमें यहाँ की संस्कृति व लोकजीवन की झलक मिलती है। छत्तीसगढ़ी के लोकसाहित्य और आधुनिक साहित्य की खूबसूरती से परिचय हो सके, आप छत्तीसगढ़ी साहित्य की खूबसूरती को महसूस कर सकें, पढ़कर भाषा की समझ विकसित कर सकें और पढ़ी हुई सामग्रियों में अपने विचारों, अनुभवों का समावेश कर अभिव्यक्त कर सकें, इन्हीं उद्देश्यों से इकाई में छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखे ये पाठ शामिल किए गए हैं–

लोकसाहित्य के अंतर्गत दो लोककथाएँ **साँच ल आँच का** एवं **हिरन अउ कोलिहा** दी गई हैं। पहली लोककथा जीवन में परिश्रम, साहस और सूझबूझ के महत्त्व को व्यक्त करती है। दूसरी लोककथा पंचतंत्र की कथाओं की तरह तात्कालिक बुद्धि और चतुराई के उदाहरण प्रस्तुत करती है।

वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ी में काफी रचनाएँ लिखी जा रही हैं। यहाँ दी गई **सुरुज टघलत हे...** ऐसी ही एक कविता है। इस कविता में ग्रीष्मऋतु के स्वरूप और मानव जीवन पर उसके प्रभाव को सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है। गज़ल छत्तीसगढ़ी साहित्य के लिए एक नई विधा है। इस विधा से बच्चों को परिचित कराने के लिए एक छत्तीसगढ़ी गज़ल **नँदिया–नरवा मा तँउरत हे** को इस इकाई में शामिल किया गया है। इस गज़ल में छत्तीसगढ़ की समरसता, संघर्षशीलता एवं ऐतिहासिकता का चित्रण है।

पाठ 4.1 : सुरुज टघलत हे . . .

पवन दीवान

C62X2J

*संत–कवि **पवन दीवान** का जन्म 01 जनवरी 1945 को ग्राम किरवई (राजिम) जिला गरियाबंद में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बासिन, राजिम एवं फिंगेश्वर में हुई। उन्होंने हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। श्री दीवान प्रख्यात वक्ता और सहृदय साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ **अंबर का आशीष, मेरा हर स्वर इसका पूजन, फूल, छत्तीसगढ़ महतारी, मर–मर कर जीता है मेरा देश, मेरे देश की माटी, याद आते हैं गाँधी** आदि हैं।*

टघल–टघल के सुरुज
झरत हे धरती ऊपर
डबकत गिरे पसीना
माथा छिपिर–छापर।

झाँझ चलत हे चारो कोती
तिपगे कान, झँवागे चेथी
सुलगत हे आँखी म आगी
पाँव परत हे ऐती–तेती।

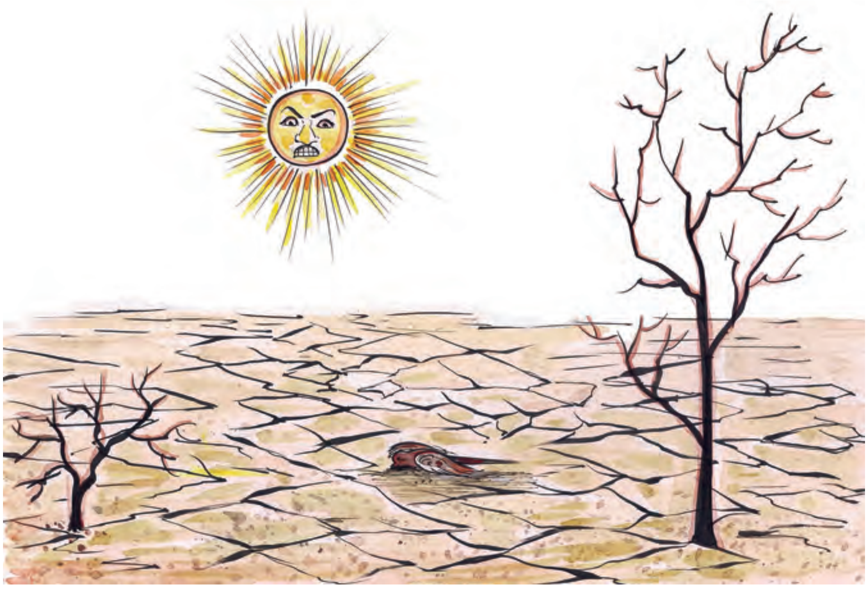

भरे पलपला, जरे भोंभरा
फोरा परगे गोड़ म
फिनगेसर ले रेंगत–रेंगत
पानी मिलिस पोंड़ म।

नदिया पातर–पातर होगे
तरिया रोज अँटावत हे
खँड म रुखवा खड़े उमर के
टँगिया ताल कटावत हे।

चट–चट जरथे अँगना बैरी
तावा बनगे छानी
टप–टप टपके कारी पसीना
नोहर होगे पानी।

साँय–साँय सोखत हे पानी
अड़बड़ मुँह चोपियावै
कुँवर ओठ म पपड़ी परगे
सिट्ठा–सिट्ठा खावै।

चारो कोती फूँके आगी
तन म बरगे भुर्रा
खड़े मँझनिया बैरी लागे
सबके छाँड़िस धुर्रा।

डामर लक–लक ले तीपे हे
लस–लस लस–लस बइठत हे
नस–नस बिजली तार बने हे
अँगरी–अँगरी अँइठत हे।

लकर–लकर मैं कइसे रेंगव
धकर–धकर जी लागे
हँकर–हँकर के पथरा फोरँव
हरहर के दिन आगे।

लहर–तहर सबके परान हे
केती साँस उड़ाही
बुड़बे जब मन के दहरा म
तलफत जीव जुड़ाही।

शब्दार्थ

डबकत – उबलता हुआ; **झँवागे** – झुलस गया; **नोहर** – दुर्लभ; **अँइठत** – ऐंठता हुआ, अकड़ता हुआ; **दहरा** – गहरा भाग; **तलफत** – तड़पता हुआ; **अँटावत** – सूखता हुआ; **चोपियावै** – प्यास लगने पर मुँह सूखना; **कुँवर** – कोमल, नरम; **लक–लक ले तीपना** – अत्यधिक गर्म होना; **फिनगेसर** – फिंगेश्वर (एक गाँव का नाम); **पोंड़** – एक गाँव का नाम।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. ''टघल–टघल के सुरुज झरत हे'' इस पंक्ति का क्या आशय है?
2. कविता में तेज गर्मी के एहसास का भाव निहित है। इसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. ग्रीष्मकाल में झाँझ के चलने से मनुष्य किस प्रकार प्रभावित होता है?
4. इन पंक्तियों का अर्थ लिखिए–

   ''चट–चट जरथे अँगना बैरी
   तावा बनगे छानी
   टप–टप टपके कारी पसीना
   नोहर होगे पानी।''
5. ग्रीष्मकाल में पानी का अभाव हो जाता है। कवि ने किन पंक्तियों में इस बात का उल्लेख किया है?
6. 'पलपला' और 'भोंभरा' शब्द के अर्थ में क्या अंतर है?
7. 'हर–हर के दिन आगे' ले आप का समझथव?

पाठ से आगे

1. ग्रीष्मऋतु में तालाब/नदी के सूख जाने पर जल–जीवों पर क्या प्रभाव पड़ता है? लिखिए।
2. गर्मी के दिनों में पानी की समस्या पर अपने आस–पास के अनुभवों को लिखिए।
3. नगरीकरण के कारण लगातार वृक्ष काटे जा रहे हैं। वृक्षों के कटने से प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

C6BT47

4. टप–टप, रिमझिम, चम–चम, बिजली, घुमड़ते बादल, काली–घटा, साथ–साथ, हवा, उफनते नदी–नाले, झूमते पेड़ आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए वर्षा ऋतु पर एक कविता/लेख लिखिए।

भाषा के बारे में

C6KP5U

1. निम्नलिखित छत्तीसगढ़ी मुहावरों के हिंदी अर्थ लिखिए।

   नोहर होना, फोड़ा परना, कान तिपना, आँखी मा आगी जलना, आगी फूँकना, पथरा फोरना, साँस उड़ना।

2. कविता में आए युग्म शब्दों को छाँटकर लिखिए जैसे–टप–टप, चम–चम। इसी तरह पाठ्यपुस्तक में हिंदी के भी युग्म शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. प्रकृति वर्णन से संबंधित अन्य कवियों की छत्तीसगढ़ी कविताओं/गीतों का संकलन कीजिए।
2. पवन दीवान जी की अन्य हिंदी कविताओं का संकलन कीजिए।

C6UK7H

3. छत्तीसगढ़ से प्रकाशित होने वाले समाचार–पत्रों में छत्तीसगढ़ी की प्रकाशित कविताओं का संकलन करें और उन पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. छत्तीसगढ़ के अन्य रचनाकारों की कविताएं संकलित कर पढ़िए।
5. जब किसी कविता की पंक्ति में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन होता है तब वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। ''टघल–टघल के सुरुज, झरत हे धरती ऊपर'' में अतिशयोक्ति अलंकार है।

पाठ 4.2 : लोककथाएँ

संकलित

C74G95

आज भी वाचिक परंपरा में लोक साहित्य विद्यमान है। जिसे हम लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, कहावतें (हाना) मुहावरे, जनउला (पहेली) आदि के नाम से जानते हैं। ये लोक संपत्ति हैं। इनकी रचना किसने की यह अज्ञात है। लोक के इस ज्ञान को अब अनेक रचनाकारों द्वारा लिखा जा रहा है। इस पाठ में एक हल्बी और एक छत्तीसगढ़ी लोककथा दी जा रही है।

1. साँच ल आँच का (हल्बी लोककथा)

बहुत दिन पहिली के बात आय। एक झन किसान के बेटा हर एकेल्ला जंगल डहर जावत रहिस। सँगे–सँगवारी के बिना रद्दा कइसे रेंगे जाय, ये सोच के वोहर एकठन ठेंगा म तुमड़ी ल बाँध के जंगल के रद्दा रेंगे लागिस। रद्दा रेंगत–रेंगत ओला एकठन बड़का असन केकरा मिलिस। वोहर किसान के बेटा के सँगे–सँग कोरकिर–कोरकिर आए लागिस। तब किसान के बेटा हर ओला रद्दा ले दुरिहा मढ़ा के कहिस, ''तैं मोर सँग रेंगत–रेंगत कहाँ जाबे, इहिच्च करा रेहे राह, मोला अड़बड़ दुरिहा जाना हे, थक जाबे।'' ये कहि के वोहा अपन रद्दा रेंगे लागिस।

तब केकरा हर कहिस, भाई–ददा,
सँग म सँगवारी होही,
रद्दा थोकिन सरू होही।
मोला तैं सँग ले जाबे,
हरहिंछा तैं जिनगी पाबे।

केकरा के निक बात ल सुन के किसान के बेटा हर सोंचिस, चल आज इही ल सँगवारी मान लेथौं। अउ ओला तुमड़ी म धर के आगू डहर चल दिस।

कटकटाए जंगल। साँकुर रद्दा। काँटा–खूँटी ले बाँचत आगू रेंगे लागिस। रेंगत–रेंगत वो हर एकठन जंगल म पहुँच गिस, जिहाँ एकठन साँप अउ कउँवा के गजब दबदबा राहय, डर अउ तरास राहय। जउन ओ जंगल म जाय, वोहर कभू लहूट के नइ आय। साँप अउ कउँआ हर उनला मार के खा जाँय। उही पाय के ओ राज के राजा हर हाँका परवा दे रहिस,''जउन हर साँप अउ कउँआ ल मारही, वोकर सँग राजकुमारी के बिहाव कर दे जाही अउ ओला आधा राज के मालिक बना दे जाही।''

किसान के बेटा ल जब थकासी लागे लागिस, तब सोंचिस, रद्दा दुरिहा हे, चिटिक बिसराम कर ले जाय। ये सोंच के घमघमाए मउँहा के छइहाँ म सुरताये लागिस। सुग्घर हवा चलत रहिस। चिटिक बेरा म ओकर नींद परगे। उही मउँहा के रूख म साँप अउ कउँवा के बासा राहय। किसान के बेटा ल सुते देख के साँप हर अइस अउ ओला चाब दिस। साँप के चाबे ले तुरते वोकर मउत होगे। तब कउँवा हर रूख ले उतर के कहिस, ''तैं हर एकर पाँव ल चाबे हस, त पाँव डहर तोर अउ मूड़ डहर मोर।''

साँप अउ कउँवा के गोठ बात ल तुमड़ी म बइठे केकरा हर सुनत राहय। बेरा देख के धिरलगहा आइस अउ साँप के घेंच ल धर लिस अउ कहिस, ''तैं हर मोर सँगवारी ल जिया नहीं त तोरो परान नइ बाँचय।'' साँप छटपटाए लागिस, फेर वोकर छक्का–पंजा नइ चलिस। एला देख के कउँवा के टोंटा सुखाए लागिस। मउका देख के ठेंगा हर अइस अउ कउँवा ल ठठाये लागिस। कउँवा अधमरहा होगे। तब साँप अउ कउँवा हर किलोली करिन, ''हमला माफी दे दव सगा भाई, अब अइसन गलती कभू नइ करन।'' केकरा हर कहिस, ''जब परान संकट म हे, तब नत्ता–रिस्ता के सुरता आथे। माफी तभे मिलही जब हमर सँगवारी ल जियाबे। ''जब खुद के परान संकट म होथे, तब सब सरत मंजूर होथे। साँप तुरते किसान के बेटा के देह ले बिख ल तीर लिस।

साँप के बिख तीरे के बाद जब ओला होस अइस तब कहिस, ''अड़बड़ बेर ले सुत गेंव केकरा भाई, अब चलौ।'' केकरा हर सबो बात ल किसान के बेटा ल बताइस। किसान के बेटा हर कहिस, दुस्मन ल कइसे माफी केकरा भाई, ये कहि के साँप अउ कउँवा के मुड़ी ल काट के गमछा म गुरमेट के धर लिस।

ये सब ल उही लकठा म गाय चरावत धोरइ हर देखत रहिस। जइसे किसान के बेटा हर अपन रद्दा रेंगिस, धोरइ हर मरे साँप अउ कउँवा ल धर के राज–दरबार म पहुँच गे। राजा हर दरबार म बइठे राहय। राजा के आगू म जा के धोरइ हर कहिस, ''राजा साहब, मैं हर साँप अउ कउँवा ल मार डारेंव। ''ये कहिके मरे साँप अउ कउँवा के धड़ ल राजा के आगू म मढ़ा दिस।

धोरइ के बात ल सुन के राज–दरबार म उछाह के बादर छागे। आज अतियाचारी साँप अउ कउँवा ले मुक्ती मिलगे। राजा हर कहिस, ''हमर घोसना के पालन होना चाही। राजकुमारी के बिहाव धोरइ के सँग करे के तियारी करे जाय।'' राजा के हुकुम ले, चारों मुड़ा म राजकुमारी के बिहाव के तियारी होय लागिस। एक तो अतियाचारी साँप अउ कउँवा ले मुक्ती, दूसर तरफ राजकुमारी के बिहाव। ये खबर ह जंगल के आगी असन पूरा राज म बगरगे। परजा म दून खुसी छागे। राज भर म तिहार कस उछाह होगे। सबके मन म आनंद हमागे। चारों मुड़ा धोरइ के गुनगान होय लागिस। धोरइ खुस होगे। अब तो ओकर बिहाव राजकुमारी के सँग होही। अब वो राजा के दमाँद बन जाही। आधा राज के मालिक बन जाही। अब वोकर दुख के रात हर पहागे।

राज भर के छोटे–बड़े मनखे राजकुमारी के बिहाव म सामिल होए बर राज–दरबार पहुँचे लागिन। घूमत–घूमत किसान के बेटा घलो उही राज म पहुँचिस। राज म होवइया उछाह ल देख के वोहर दू–चार झन ल पूछिस, ये राज म अभी कउन तिहार मनावत हे भाई! सब झन एके बात कहिन, अतियाचारी साँप अउ कउँवा ल धोरइ हर मार डारिस। राजा साहब के घोसना के अधार म राजकुमारी के बिहाव धोरइ के सँग होए के तियारी हे।

ये बात ल सुन के किसान के बेटा अचरज म परगे। साँप अउ कउँवा ल तो मैं मारे हौं, ये धोरइ हर कइसे जान डारिस। वो हर कहिस, भाई, ''साँप अउ कउँवा ल तो मैं मारे हँव। धोरइ हर सच नइ कहत हे।''

ये बात हर ये कान ले वो कान होवत राज–दरबार म पहुँचगे। मंत्री हर राजा ल बताइस, एक झन परदेसी आए हे। वोहर कहिथे– ''साँप अउ कउँवा ल मैं मारे हौं।'' राजा कहिस– ''अइसे हे, त वो परदेसी ल राज–दरबार म हाजिर करे जाय। अउ धोरइ ला घलो बलाए जाय।''

राजा के आग्या ले किसान के बेटा अउ धोरइ ल राज–दरबार म पेस करे गिस। राजा हर किसान के बेटा ल कहिस, यदि साँप अउ कउँवा ल तैं मारे हस त सबूत पेस कर। किसान के बेटा हर अपन गमछा म बाँधे साँप अउ कउँवा के मुड़ी ल राजा साहब के आगू म रख दिस। राजा हर अचरज म परगे। साँप अउ कउँवा ल धोरइ मारे हे कि ये किसान के बेटा! राजा हर बिचार कर के कहिस, ''मैं कइसे मानँव, साँप अउ कउँवा ल तैं मारे हस।'' किसान के बेटा हर कहिस, मोर करा एकर गवाही हे। ये कहिके अपन तुमड़ी ले केकरा ल निकाल के एक तरफ राजा के आगू म मढ़ा दिस त दूसर तरफ ठेंगा ल धर दिस। वोकर गवाही ल देख के सबो दरबारी मन के मुँहू ले हाँसी फूटगे।

दरबारी मन ल हाँसत देख के केकरा हर सबो बात ल ओसरी–पारी बताए लागिस। केकरा के बात ल सुन के तो राजा के बिस्वास हर पक्का होगे। तब वोहर मंत्री ल कहिस, ''अब ये धोरइ बर का नियाव हे?'' मंत्री कहिस, ''धोरइ ल घलो अपन बात रखे के मउका दिए जाय।'' लेकिन धोरइ के मुँहू ले तो एको भाखा नइ फूटिस। वो का कही सकत हे? इहाँ तो दूध के दूध अउ पानी के पानी हो गे रहिस। धोरइ हर अपराधी कस मुड़ी गड़ियाये खड़े रहिस। त राजा सब बात ल बिन कहे समझगे। राजा हर कहिस, धोरइ ह हमर सँग धोखा करे हे। एकर सजा मिलना चाही। ये कहि के धोरइ ल जेल म धँधवा दिस अउ किसान के बेटा के सँग राजकुमारी के बिहाव कर दिस।

किसान के बेटा हर अब राजा के दमाँद बनके राजमहल म रहे लागिस। उहाँ सब सुख सुविधा होय के बाद वोकर मन ह उहाँ नइ लागत राहय। चोबीस घंटा बइठे–बइठे दिन हर घलो नइ पहाय। तब वोहर राजकुमारी ल कहिस, मोर ददा हर कहे रहिस, ''सदा मिहनत करके जिनगी बिताबे।'' ये बात सही आय, बिना मिहनत करे अनाज नइ खाना चाही। बिन मिहनत के भोजन खाना पाप बरोबर होथे। ये कहिके वोहर राजा के खेत म जाके काम–बूता करे लागिस।

किसान के बेटा ल खेत म काम करत देख के लोगन हाँसै। कतको मन तो वोकर खिल्ली उड़ाँय। ''हड़िया के मुँहू ल परई म ढाँकबे, मनखे के मुँहू म काला ढाँकबे।'' जे ठन मुँहू ते ठन बात। कोनो काहय, राजा के दमाँद होके मिहनत करथे, कतिक गुनिक मनखे हे। त कोनो काहय, मजूर के बेटा मजूरी नइ करही त अउ का करही। धीरे–धीरे ये बात राजा के कान म पहुँचगे।

राजा हर ओला दरबार म बला के कहिस, ''तैं हर अब किसान के बेटा नो हस, राजा के दमाँद आस। अब तोला ये तरह ले काम–बूता करना सोभा नइ देवय। परजा म बने बात नइ होवत हे।'' किसान के बेटा ह कहिस, ''महराज, मोला छीमा दूहू। काम करना कोनो अपराध नोहै। मैं अपन खेत म मिहनत करथँव। राजा के दमाँद होके जब मैं मिहनत करहूँ तब परजा के मन म मिहनत बर आदर के भाव जागही, अउ कोनो काम ल वोहर छोटे–बड़े नइ समझही। हमर राज म धन दिनदुनी रात चउगुनी बाढ़ही। जउन राज के राजा हर मिहनत करथे, ओ राज म कभू अकाल अउ भूखमरी नइ होवय।''

अपन दमाँद के बिचार ल सुन के राजा हर गदगद होगे। ओला अपन छाती ले लगा लिस। अब ओला बिस्वास होगे कि ये हर मिहनती के सँगे–सँग बिचारवान घलो हे। राजा हर दरबार म घोसना कर दिस, ''मोर इही दमाँद हर राज के उत्तराधिकारी होही।'' राजा के घोसना ल सुन के दरबार म उछाह छागे।

2. हिरन अउ कोलिहा (छत्तीसगढ़ी लोककथा)

एक बखत के बात आय। हिरन अउ कोलिहा पानी पीये बर जावत रहिन। कुँआ तीर जा के कोलिहा ह हिरन ले कहिस ''ये मितान! मैं हर पहिली खाल्हे डहर लटक के पानी पी लेथँव; पाछू तैं पानी पी लेबे।'' कोलिहा ह हिरन के पूछी ल धर के खाल्हे डहर लटक के पानी पीये लागिस। जब वो हर पानी पी डारिस तब हिरन के पारी आइस। जब कोलिहा हर हिरन के पूछी ल धरिस तब हिरन ह कुआँ डहर लटक के पानी पीये छपाक लागिस। आन देखिस न तान, कोलिहा हा हिरन ला कुआँ म ढकेल दिस। हिरन हर कुआँ म भदाक ले गिर गे। कुआँ ले थोरिक दुरिहा खेत म किसान मन बटुरा टोरत रहिन। कोलिहा हर किसान मन ला हूँत कराके बलाइस, अउ कहिस, ''एकठन हिरना हर ये कुआँ मा गिर गे हे।'' किसान मन कुआँ म गिरे हिरन ल अड़बड़ उदीम कर के बाहिर निकालिन। हिरन के तो परान निकल गे रहिस। ओला थोरिक दूरिहा म ले जा के नान–नान काटे लागिन। तब्भेच्च कोलिहा ह उँकर तीर म जाके कहिस, ''सँगवारी हो, एक भागा माँस महू ल नइ दुहू का?''

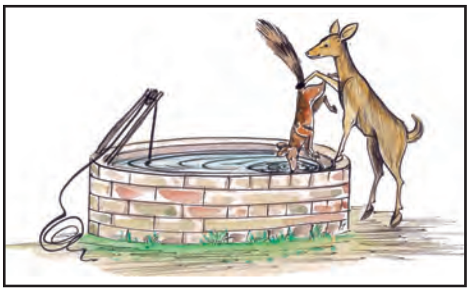

किसान मन कहिन, गजब मिहनत करके हमन हिरन ल कुआँ ले बाहिर निकाले हन, ये पाये के येमा पोगरी हिस्सा हमरे हे। कोलिहा हर कहिस, फेर हिरन के कुआँ म गिरे के खबर तो मैं हर दे हौं? वोकर ले का होथे, ''जे करे काम, ते खाये चाम।'' अइसे कहिके किसान मन इनकार कर दिन।

अब कोलिहा हा कहिस, ''ठीक हे भाई हो! जइसे तुँहर मरजी। तुमन मोला हिरन के माँस खाये बर नइ देना चाहौ त मत देवौ। फेर मोला नानकुन आगी तो दे दौ।''

किसान मन कोलिहा ल आगी दे दिन। कोलिहा हर आगी ल धरिस अउ किसान मन के बटुरा के खेत म फेंक दिस। बटुरा के खेत ह जरे लागिस। वोला देख के किसान मन अकबका गे। अउ आगी ल बुझाये बर खेत डहर दउँड़िन। जइसे किसान मन खेत डहर गइन कोलिहा हर हिरन के माँस ल पेट भर खाइस।

शब्दार्थ

एकेल्ला – अकेला; **डहर** – रास्ता; **सँगवारी** – साथी; **रद्दा** – रास्ता; **मढ़ा के** – रखकर; **अड़बड़** – बहुत; **तुमड़ी** – लौकी का सूखा खोल; **कटकटाए** – बहुत घना; **साँकुर** – सँकरा; **हाँका पारना** – मुनादी करना; **घमघमाए** – आच्छादित; **सुग्घर** – सुन्दर; **चिटिक बेरा** – थोड़ा समय; **रूख** – वृक्ष; **बासा** – निवास; **टोंटा** – गला; **मुड़ी** – सिर; **उछाह** – उत्साह; **धोरइ** – चरवाहा (एक तरह की जाति); **ओसरी–पारी** – एक के बाद एक, क्रमशः; **गुनिक** – गुणवान; **बिख** – विष, जहर; **कोलिहा** – सियार; **खाल्हे** – नीचे; **बटुरा** – मटर; **थोरिक** – थोड़ा; **तीर** – पास; **नानकुन** – छोटा–सा; **आगी** – आग; **तरास** – भय; **उदीम** – प्रयास।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. किसान के बेटे को साथ ले चलने के लिए केकड़े ने क्या तर्क दिया?
2. केकड़ा और ठेंगा ने किसान के बेटे की रक्षा किस तरह की?
3. साँप और कौए के आतंक से पूरा राज्य किस तरह प्रभावित था?
4. किसान के बेटे ने परिश्रम के महत्त्व को किस तरह परिभाषित किया?
5. हिरण और कोलिहा ने कुएँ से पानी पीने के लिए कौन सी तरकीब सोची?
6. हिरण को कुएँ में धकेलने के पीछे कोलिहा का क्या उद्देश्य रहा होगा?
7. कोलिहा के द्वारा माँस माँगने पर किसानों ने क्या कहा?
8. धोरइ अपन बात ल काबर नइ रखिस?
9. कोलिहा हर बटुरा के खेत म आगी काबर लगा दिस?

पाठ से आगे

C7DCAS

1. जनजाति समूह के व्यक्तियों में कौन–कौन सी विशेषताएँ होती है? बड़े–बुजुर्गों से चर्चा करके लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ में लोककथा कहने के साथ–साथ लोकगीत भी गाए जाते हैं। किन्हीं पाँच लोकगीतों के नाम लिखकर एक–एक उदाहरण भी दीजिए।
3. ''जो कोई साँप और कौए को मारेगा, उससे मैं राजकुमारी का विवाह कराऊँगा।'' क्या राजा की यह घोषणा उचित थी? अपने विचार दीजिए।
4. पानी पीये बर हिरन हर कोलिहा के सँग दिस, फेर कोलिहा के पारी आए ले वोहर हिरन ल कुँआ म ढकेल दिस। कोलिहा के अइसन आचरन के बारे म अपन बिचार लिखौ।

5. खेत की खड़ी फसल में आग लग जाने पर उसे बुझाने के कौन–कौन से तरीके हो सकते हैं? विस्तारपूर्वक लिखिए।

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित छत्तीसगढ़ी शब्दों को हिंदी में लिखिए?

   ओसरी–पारी, घटाटोप, नेकी–बदी, अधमरहा, घेंच, अचरज, ठट्ठा–दिल्लगी, डहर, हुरहा, मुड़ी, नजिक आदि।

2. अपने क्षेत्र में प्रचलित किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का संग्रह करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. अव्यय शब्द– संस्कृत भाषा में कुछ अव्यय शब्द होते हैं, जिन्हें प्रयोग में लाते समय उनके मूल स्वरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। ठीक उसी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा में भी अव्यय शब्द होते हैं, जिनके रूप नहीं बदलते, जैसे– डहर, तब्भे, सेती, बर, कनि आदि। इसी तरह छत्तीसगढ़ी के अन्य अव्यय युक्त शब्दों को ढूँढकर उनके अर्थ भी लिखिए।

C7H8CF

4. पाठ में आए क्रिया शब्दों को लिखकर उनका हिंदी में अनुवाद कीजिए।

   जैसे : कहिस – कहा; खइस – खाया; होइस – हुआ।

योग्यता विस्तार

C7H4E3

1. आप अपने क्षेत्र में प्रचलित दो लोककथाओं को अपनी मातृभाषा में लिखिए।
2. हिंदी भाषा में लिखी गई किन्हीं दो लोककथाओं का अनुवाद अपनी मातृभाषा में कीजिए।
3. लोककथा किसे कहते हैं? यह लोकगीतों से किस प्रकार भिन्न होती है? शिक्षक से चर्चा कीजिए।
4. छत्तीसगढ़ क्षेत्र में अनेक लोकगाथाएँ गाई जाती हैं। कुछ लोकगाथाओं एवं उनके प्रसिद्ध गायकों के नाम लिखिए।

क्र. सं.	लोकगाथा का नाम	लोकगाथा गायक/गायिका
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		

5. अपने पुस्तकालय से लोककथाओं की पुस्तकें लेकर उनमें दी गई लोककथाओं को पढ़िए।

छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल

पाठ 4.3 : नँदिया–नरवा मा तँउरत हे

C85ZFQ

मुकुंद कौशल

मुकुन्द कौशल *का जन्म 7 नवम्बर सन् 1947 को दुर्ग नगर में हुआ। कौशल जी, हिंदी और छत्तीसगढ़ी के कुशल कवि एवं सुपरिचित गीतकार हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ी ग़ज़लों को एक नई पहचान दी। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ* ***भिनसार*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह),* ***लालटेन जलने दो*** *(हिंदी काव्य संग्रह),* ***हमर भुइयाँ हमर अगास*** *(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)* ***मोर ग़ज़ल के उड़त परेवा*** *(छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल संग्रह),* ***केंरवस*** *(छत्तीसगढ़ी उपन्यास) हैं।*

नँदिया–नरवा मा तँउरत हे, मनखे के बिसवास इहाँ।
पथरा–पथरा मा लिक्खे हे, भुइयाँ के इतिहास इहाँ।।

तीपत भोंभरा, बरसत पानी के हम्मन टकराहा हन,
लइका मन सँग खुड़ुवा खेलत रहिथे बारामास इहाँ।

पूस–माघ मा जाड़ जनावै, अँगरा कस बइसाख तपै,
बइहा होके धमसा कूदै सावन मा चउमास इहाँ।

ये भुईयां के बात अलग हे, काए बतावौं गुन येकर,
बोहे रहिथें नान्हे–नान्हे, लइका मनन अगास इहाँ।

पीरा फीजे जिनगानी के, धुरघपटे अँधियारी मा,
हितवाई के दीया करथे, अंतस मा परकास इहाँ।

ये ममियारो राम–लखन के, बानासुर के राज इही,
राम लखन–सीता आइन हें, पहुना बन के खास इहाँ।

हर चौका ले कोन्टा तक मा, माढ़े हें देवता धामी,
'कौसल' इहँचे गंगा मैया, अउ पाबे कैलास इहाँ।

टिप्पणी

बाणासुर : पुराणों के अनुसार असुरराज बाणासुर बलि वैरोचन के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र था, जो पाताललोक का राजा था। शोणितपुर अथवा लोहितपुर उसकी राजधानी थी। कृष्ण के साथ बाणासुर का युद्ध हुआ था जिसमें कृष्ण ने बाणासुर के सहस्त्र हाथों में से दो को छोड़कर शेष काट डाले थे। उसे महाबलि सहस्त्रबाहु तथा भूतराज भी कहा जाता था।

शब्दार्थ

नरवा – नाला; **तँउरत हे** – तैर रहा है; **पथरा** – पत्थर; **भुइयाँ** – जमीन; **भोंभरा** – सूर्य के ताप से गर्म धूल; **टकराहा** – आदी, अभ्यस्त; **खुडुवा** – कबड्डी के समान एक खेल; **नान्हे–नान्हे** – छोटे–छोटे; **फींजे** – भीगा हुआ; **माढ़े हे** – रखे है; **पहुना** – मेहमान; **अगास** – आकाश, आसमान; **धुरघपटे** – अत्यंत घना।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. ''नँदिया–नरवा मा तँउरत हे, मनखे के बिसवास इहाँ'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।
2. ''तीपत भोंभरा बरसत पानी के हम्मन टकराहा हन'' में छत्तीसगढ़ के लोगों की कौन–सी विशेषता को दर्शाया गया है?
3. ''लइका मन अगास ला बोहे रहिथे'' के का मतलब हे?
4. कवि हर छत्तीसगढ़ ल राम–लखन के ममियारो कोन अधार म केहे हे?

पाठ से आगे

C8EVHD

1. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे स्थल हैं, जो देवस्थलों के रूप में जाने जाते हैं। अपने गाँव के किसी एक देवस्थल के संबंध में अपनी धारणाएँ लिखिए।
3. विपरीत परिस्थितियों में भी यहाँ के निवासियों का हृदय किन मानवीय गुणों से परिपूर्ण रहता है?
4. अपने क्षेत्र में खेले जाने वाले कुछ पारंपरिक खेलों के संबंध में आपको जानकारी होगी। उन खेलों के संबंध में निम्नानुसार जानकारी दीजिए–

क्र. सं.	खेल का नाम	खिलाड़ियों की संख्या	खेलने के तरीके	प्रमुख विशेषताएँ

भाषा के बारे में

1. छत्तीसगढ़ी के निम्नलिखित क्रियापदों को हिंदी में लिखिए—

जैसे ''बोहे रहिथे'' अर्थात्—धारण किया रहता है।

(क) माढ़े हे – ....

(ख) खेलत रहिथे – ....

(ग) धमसा कूदै – ....

(घ) लिक्खे हे – ....

(ङ) तउँरत हे – ....

C8NRJ1

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी और हिंदी में लिखी गई कुछ अन्य ग़ज़लों का संग्रह कीजिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।
2. आपके गाँव में विराजित लोक देवी—देवताओं के नाम लिखिए।
3. अपने आस—पास के ऐतिहासिक स्थलों के बारे में अपने बड़े—बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए।
4. यहाँ दिए गए अन्य रचनाकारों की ग़ज़ल भी पढ़िए—

C8XMKN

छत्तीसगढ़ी गज़ल

बार के दिया संगी, अँगना मा घरके
फेंकव अँधियारी ला, झउँहा मा भरके।

अलगू अउ जुम्मन कहाँ बइठे होंहीं।
खोजत हे प्रेमचंद गाँव मा उतर के।

कारखाना चर डारिस जंगल ला भइया।
दउँरत हे खेत डहर जंगल ला चरके।

फोटुच मा बड़ सुघ्घर दिखथे समारू।
माटी के भिथिया अउ छानी खदर के।

डॉ. जीवन यदु

हिंदी गज़ल

कैसे मंजर सामने आने लगे हैं,
गाते–गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।

अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।

वो सलीबों के करीब आए तो हमको
कायदे–कानून समझाने लगे हैं।

एक क़ब्रिस्तान में घर मिल रहा है
जिसमें तहख़ानों में तहख़ाने लगे हैं।

दुष्यन्त कुमार

शब्दार्थ

सलीब – सूली　　　　मंजर – दृश्य

इकाई 5 : पर्यावरण एवं प्रकृति

पाठ 5.1 : ग्राम्य जीवन

पाठ 5.2 : मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग

पाठ 5.3 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख

इकाई 5

पर्यावरण एवं प्रकृति

पेड़ों, नदियों, हवाओं, बादलों एवं पहाड़ों का मानव से सहज रिश्ता है और यह रिश्ता कायम रखना मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, परंतु विकास की दौड़ में हम इतने आत्मकेंद्रित हो गए हैं कि अपनी जरूरत की सारी चीज़ों को सहेज लेने की चाह में पर्यावरण के प्रति पूरी तरह लापरवाह होते जा रहे हैं। आधुनिक समाज का प्रकृति से जुड़ाव कम होता जा रहा है और जिन समाजों में यह अभी भी बरकरार है, जैसे वन–प्रांतर में निवासरत आदिवासी समुदाय, वहाँ भी आधुनिक बनाने या बनने की अंधी दौड़ में प्रकृति से दुराव अवश्यंभावी है। सभ्यता, समाज और प्रकृति का रिश्ता परस्पर विरोधाभासी बनता दिखाई देता है। प्रकृति, समृद्ध समाज और विकास जैसी अवधारणाओं पर प्रश्न उठाने और नए सिरे से सोचने की जरुरत है। इस इकाई में संकलित रचनाएँ आपको पर्यावरण एवं प्रकृति के अवलोकन का अवसर देती हैं साथ ही संस्कृति व परिवेश के विविध आयामों पर गर्व करने की प्रेरणा देती है एवं उनके प्रति संवेदनशीलता का अहसास कराती हैं। इतना ही नहीं अपनी आने वाली पीढ़ियों को हम विरासत में क्या देना चाहते हैं, इसके प्रति एक बार पुनः सोचने के लिए प्रेरित करती है।

डॉ. मुकुटधर पांडेय ने **ग्राम्य जीवन** कविता में गाँव के नैसर्गिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण किया है। इसमें बताया गया है कि सभी तरह की समृद्धियों से पूर्ण होते हुए भी ग्रामवासी सहज जीवन जीते हैं, उनकी इस सहजता को उनकी अज्ञानता और भोलापन समझने की भूल करना उचित नहीं है।

मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग एक रोचक यात्रा वृत्तांत है। चित्रात्मक शैली में लिखा गया यह यात्रावृत्त हमें अनेक छोटे–छोटे अनुभवों के जरिये एक ऐसे गांव का साक्षात्कार कराता है जिसे कि भारतवर्ष का सबसे स्वच्छ गांव घोषित किया गया है। अपने प्राकृतिक परिवेश से परिचित कराने के साथ यहां के निवासियों की साफ–सुथरी जीवन शैली से पाठकों को आकर्षित करना है।

बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में निर्मला पुतुल ने आधुनिक सभ्यता एवं विकासशीलता के दौर में धरती के बदलते स्वरूप एवं लगातार हो रहे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की समस्या को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। प्रकृति के दर्द को रेखांकित करती इस कविता में मानव के संवेदनहीन होने पर कटाक्ष किया गया है।

पाठ 5.1 : ग्राम्य जीवन

डॉ. मुकुटधर पांडेय

__मुकुटधर पांडेय__ का जन्म 30 नवम्बर सन् 1885 ई. को छत्तीसगढ़ के जांजगीर–चाँपा जिले के बालपुर नामक गाँव में हुआ था। छायावाद का आरंभ इनकी रचनाओं से माना जाता है। उनकी रचना __कुररी के प्रति__ प्रथम छायावादी रचना है। मानद डी. लिट् की उपाधि प्राप्त श्री पांडेय को भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया था। उनकी प्रमुख रचनाएँ __पूजा के फूल, शैलबाला, लच्छमा (अनूदित उपन्यास), परिश्रम (निबंध), मेघदूत (छतीसगढ़ी अनुवाद)__ हैं। __ग्राम्य जीवन__ कविता में कवि ने गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य एवं ग्रामवासियों की सहज जीवनशैली का जीवंत चित्रण किया है।

छोटे–छोटे भवन स्वच्छ अति दृष्टि मनोहर आते हैं,
रत्न–जड़ित प्रासादों से भी बढ़कर शोभा पाते हैं।
बट–पीपल की शीतल छाया फैली कैसी है चहुँ ओर,
द्विजगण सुन्दर गान सुनाते, नृत्य कहीं दिखलाते मोर।

शांति पूर्ण लघु ग्राम बड़ा ही सुखमय होता है भाई,
देखो नगरों से भी बढ़कर इनकी शोभा अधिकाई।
कपट, द्वेष, छलहीन यहाँ के रहने वाले चतुर किसान,
दिवस बिताते हैं प्रफुल्लित चित, करते हैं अतिथि का मान।

आस–पास में है फुलवारी, कहीं–कहीं पर बाग अनूप,
केले, नारंगी के तरुगण दिखलाते हैं सुन्दर रूप।
नूतन मीठे फल बागों से नित खाने को मिलते हैं,
देने को फुलेल–सा सौरभ पुष्प यहाँ नित खिलते हैं।

पास जलाशय के खेतों में ईख खड़ी लहराती है,
हरी–भरी यह फसल धान की कृषकों के मन भाती है।
खेतों में आते हैं ये हिरणों के बच्चे चुप–चाप,
यहाँ नहीं है छली शिकारी जो धरते सुख से पदचाप।
कभी–कभी कृषकों के बालक उन्हें पकड़ने जाते हैं,
दौड़–दौड़ के थक जाते वे कहाँ पकड़ में आते हैं।
बहता एक सुनिर्मल झरना कल–कल शब्द सुनाता है,
मानो कृषकों को उन्नति के लिए मार्ग बतलाता है।

गोधन चरते कैसे सुन्दर गलघंटी बजती सुख मूल,
चरवाहे फिरते हैं सुख से देखो ये तटनी के कूल।
ग्राम्य जनों को लभ्य सदा, सब प्रकार सुख शांति अपार,
झंझट हीन बिताते जीवन, करते दान धर्म सुखसार।

शब्दार्थ

प्रासाद – महल; **द्विजगण** – पक्षीगण; **फुलेल–सा** – इत्र के समान; **लभ्य** – प्राप्त, सुलभ; **तटनी** – नदी।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ने किसानों को छल–कपट और द्वेषहीन के साथ चतुर भी क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।
2. गाँव के लोग किस प्रकार से झंझटहीन जीवन बिताते हैं?
3. कविता में गाँव के बाग–बगीचों की सुन्दरता का चित्रण किन पंक्तियों में किया गया है?
4. बहता हुआ झरना हमें किस प्रकार से जीवन जीने का संदेश देता है?

पाठ से आगे

CKBH28

1. आपके गाँव/शहर की ऐसी कौन–कौन–सी खास बातें हैं, जिसे आप सभी को बताना पसंद करेंगे? लिखिए।
2. आपने या आपके मित्र ने ऐसे किसी गाँव का भ्रमण किया हो, जहाँ के प्राकृतिक परिवेश/सुंदरता ने आपको प्रभावित किया हो, तो उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. कविता में गाँव में पाए जाने वाले पेड़–पौधों, फलों एवं फसल की बात की गई है। आपके आसपास के क्षेत्रों में कौन–कौन से पेड़–पौधों, फलों व फसल की पैदावार होती है? वर्णन कीजिए।
4. आजकल जंगली जीव–जंतु शहरों व गाँवों में क्यों घुस आते हैं? विचार कर लिखिए।

भाषा के बारे में

CKKS3V

1. कविता में आए निम्नांकित शब्दों के क्या अर्थ हैं? कविता को ध्यानपूर्वक पढ़कर इन शब्दों के अर्थ पता करके लिखिए। आप इसमें शब्दकोश की मदद भी ले सकते हैं।

- प्रफुल्लित
- अनूप
- तरुगण
- जलाशय
- छली
- सुनिर्मल
- गोधन

2. हिन्दी भाषा की विशेषता है कि इसमें शब्दों की पुनरुक्ति की जा सकती है।

(क) 'कल–कल', 'छोटे–छोटे' जैसे कई शब्दों का कविता में प्रयोग हुआ है। यहाँ एक ही तरह के शब्दों का पूर्ण रूप से दुहराव हुआ है। पाठ में आए ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए।

(ख) शब्दों की पुनरुक्ति को कुछ उदाहरणों द्वारा और समझने का प्रयास करते हैं–

- 'घर–घर' शब्द का अर्थ हैं– हर घर। इसमें संज्ञा की पुनरुक्ति हुई है।
- 'जल्दी–जल्दी' शब्द में कोई क्रिया कैसे हो रही है, इसका पता चलता है। इसमें क्रियाविशेषण की पुनरुक्ति हुई है।
- 'काला–काला' शब्द में काले रंग की और अधिकता का आभास होता है। यहाँ विशेषण शब्द की पुनरुक्ति हुई है।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर दी गई तालिका में ऐसे अन्य शब्दों को सोचकर लिखिए (तालिका में एक उदाहरण दिया गया है।)

संज्ञा	क्रियाविशेषण	विशेषण
घर–घर	जल्दी–जल्दी	काला–काला

योग्यता विस्तार

1. समूह गतिविधि :–

   मनोहर, पीपल, शीतल, छाया, शोभा, मोटर, झरना, सुंदर, पुष्प, फसल।

   उपर्युक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए साथियों के समूह में मिलकर एक नई कविता बनाइए। आप इस कार्य में अपने शिक्षक की सहायता ले सकते हैं।

   इन कविताओं को कक्षा/प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें और कक्षा में चार्ट पेपर पर प्रदर्शित कीजिए।

2. सुमित्रानंदन पंत की कविता **'ग्राम श्री'** की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। यदि संभव हो तो पुस्तकालय से खोजकर पूरी कविता पढ़िए।

CKUN5I

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल सी कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की–सी उजली जाली।
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू–तल पर झुका हुआ
नभ का चिर–निर्मल नील फलक।

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ, गेहूँ में बाली,
अरहर, सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली।
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली–पीली,
लो, हरित–धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली।

पाठ 5.2 : मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग

CL4J76

अनीता सक्सेना

अनीता सक्सेना *का जन्म 7 नवम्बर सन् 1956 ई. को ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ। वे कला व साहित्य के क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में भोपाल में रहती हैं। उन्हें राज्यपाल द्वारा मध्य प्रदेश की स्टार यूनिसेफ वॉलंटियर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने देश–विदेश में कई जगहों की यात्राएँ की हैं। उनके यात्रावृत्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। टेलीविजन और आकाशवाणी के कार्यक्रमों में कहानी, कविता, पठन के माध्यम से सक्रिय हैं।*

हाल ही में मुझे मेघालय जाने का मौका मिला। मेघालय (यानी बादलों का घर) की राजधानी शिलांग है। वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि शिलांग से 75 किलोमीटर दूर घने जंगलों के बीच बसा है, एशिया का सबसे साफ–सुथरा गाँव कहा जानेवाला मायलिनोंग। और मैंने वहाँ जाने का मन बना लिया।

हमारी यात्रा शुरू हुई। जल्द ही हम पहाड़ों के ऊपर थे। कहीं पहाड़ी झरने गिर रहे थे तो कहीं घने जंगल थे। मैंने देखा कि लोगों ने बाँस को आधा काटकर उसकी नाली बना दी थी, इससे पहाड़ से तेज धार में गिरनेवाले पानी को उसका सहारा मिल गया था।

आसमान में रुई के फाहों जैसे बादल उड़ रहे थे। पहाड़ पर चढ़ते वक्त हमारी कार के काँच पर नन्हीं–नन्हीं बूँदें दिखने लगीं। मैंने कहा, ''अरे, बारिश आ गई!'' गोबिन कार रोककर बोला, ''नहीं मैडम जी, यह बारिश नहीं, बादल है। आप बाहर निकल कर देखिए जरा।'' और सच में बाहर बिलकुल बारिश न थी। कार के ऊपर से बूँद–बूँद मिलकर पानी की धारा बहने लगी थी लेकिन ऐसे बाहर हाथ फैलाओ तो कुछ हाथ नहीं आता था। अद्भुत नजारा था! चारों तरफ सफेद बादलों का समंदर लहरा रहा था। जहाँ हम खड़े थे वहाँ से दस मीटर की दूरी पर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। सड़क से गुजरती सारी गाड़ियों ने अपनी इमरजेंसी लाइट जलाई हुई थीं। सामने से भी गाड़ियाँ आ रही थीं। सभी बहुत ही धीमे और एक के पीछे एक चल रही थीं ताकि कोई दुर्घटना न घट जाए। पहाड़ी रास्ता था। एक तरफ हजारों मीटर गहरी खाई थी, दूसरी तरफ पहाड़।

धुंध में रास्ता कुछ समझ नहीं आ रहा था। एक छोटी–सी जगह पर गोबिन ने गाड़ी रोककर एक टैक्सीवाले से द्वाकी का रास्ता पूछा। द्वाकी मुख्य सड़क पर बसा एक छोटा सा शहर है। टैक्सीवाला बोला, ''मैं वहीं जा रहा हूँ। मेरे पीछे–पीछे चले आओ।'' सारी बातचीत गोबिन के माध्यम से असमी में ही हो रही थी। हिंदी यहाँ कम ही बोलते हैं। धुंध में हम उसके पीछे–पीछे चल दिए।

आगे जाकर पोनटोंग नाम की एक जगह आई जहाँ से एक रास्ता द्वाकी जा रहा था और दूसरा मायलिनोंग । वहाँ उस सूमो के ड्राइवर ने गाड़ी रोकी और काँच खोलकर इशारा किया कि इस तरफ चले जाइए और हमारी गाड़ी वहाँ से अठारह किमी दूर मायलिनोंग की तरफ बढ़ चली।

ट्रेवल मैगज़ीन "डिस्कवर इंडिया" द्वारा 2003 में मायलिनोंग को 'एशियाज क्लीनेस्ट विलेज' की उपाधि दी गई। इसके बाद 2005 में इसे भारत का सबसे साफ गाँव घोषित किया गया। यहाँ कचरा डालने के लिए जगह–जगह बाँस की टोकरियाँ लगाई गई हैं। इनमें इकट्ठे हुए कचरे से फिर खाद बनाई जाती है। आम जनता के लिए सड़क किनारे बने साफ़–सुथरे शौचालय हैं।

मायलिनोंग में हमारा गाइड हेनरी बना। हेनरी यहाँ घूमने आए लोगों को गाँव दिखाने और उनके रहने–खाने की व्यवस्था का काम करता है। वह अंग्रेजी और खासी दो भाषाएँ जानता है।

हेनरी सबसे पहले हमें ट्री हाउस और बाँस के कॉटेज दिखाने ले गया। वे बेहद खूबसूरत थे, उन्हें हेनरी के पिता ने बनाया था। ट्री हाउस बनाने के लिए सड़क के दोनों ओर के बड़े–बड़े पेड़ों को बाँस से जोड़ा गया था, उसके ऊपर मचान जैसा एक घर बना था। नीचे बाँसों की सीढ़ी से एक घुमावदार रास्ता बना था। सारा काम बाँस का ही था। यहाँ तक कि बाँधने के लिए भी बाँस की ही पतली छालें इस्तेमाल की गई थीं। मैं ट्री हाउस में एकदम ऊपर तक चढ़ गई। ट्री हाउस की छत से दूर तक एक समन्दर दिखा। यह बांग्लादेश में आई बाढ़ का पानी है। बांग्लादेश यहाँ से सिर्फ तीन किलोमीटर दूर है। लोग पैदल ही वहाँ आना–जाना कर सकते हैं।

लाइव रूट ब्रिज

हम लोग लाइव रूट ब्रिज के रास्ते की ओर चल दिए। गाँव के अन्दर से ही नीचे जंगल की तरफ उतरना था। शुरू में तो कोई दिक्कत नहीं हुई पर जब खड़ी चट्टानों से उतरना पड़ा तो फिसलने की चिन्ता हुई। मुझे यह ख्याल बार–बार सताने लगा कि चढ़ते समय क्या हाल होगा। खैर, हम धीरे–धीरे नीचे उतरते गए। कहीं–कहीं पर पक्की सीढ़ियाँ भी बनी थीं। चारों तरफ घना जंगल था। हमारे सिवा वहाँ और कोई नहीं दिख रहा था। शायद कम ही लोग आते होंगे यहाँ।

नदी के तेज बहाव की आवाज आ रही थी। जल्दी ही रूट ब्रिज हमें दिखाई दे गया। अद्भुत दृश्य था–नीचे तेज बहती वॉह थिलोंग नदी और उसके ऊपर लाइव रूट ब्रिज यानी रबर के पेड़ों की मोटी–मोटी जड़ों को जोड़–जोड़ कर बनाया गया पुल। ऐसी जड़ें जिन्हें कहीं से भी बाँधा नहीं गया था। जो स्वाभाविक रूप से

जुड़ी हुई थीं। पुल अच्छा–खासा चौड़ा था। उस पर बीच में मिट्टी बिछी हुई थी और गोल–गोल पत्थर रखे हुए थे।

हेनरी ने बताया कि यह पुल बहुत मज़बूत है। तीस लोग भी खड़े हो जाएँ तो इसका कुछ नहीं बिगड़ने वाला। हम लोग पुल पार कर उसके दूसरी तरफ पहुँचे। वहाँ दूसरे गाँव जाने के लिए पहाड़ काटकर सीढ़ियाँ बनाई गई थीं। हम लोगों ने चारों तरफ से पुल का मुआयना किया। हर तरफ से वह और ज्यादा सुंदर दिखता। यह कुदरत नहीं इंसान का करिश्मा था।

इस बीच हम हेनरी के पिता से मिले। मैंने उनको अभिवादन किया तो उनके चेहरे की झुर्रियों के बीच एक भोली–सी मुस्कान छा गई। उनकी उम्र करीब साठ–बासठ होगी। वे सिर्फ खासी भाषा जानते थे। हेनरी हमारा दुभाषिया बना।

मैंने पूछा, "आपका नाम क्या है?"

वे कुछ बोलते इससे पहले हेनरी बोल पड़ा– ''दिसम्बर।"

"हाँ, मैडम जी। इनका नाम दिसम्बर और मेरी माँ का नाम है फेस्टिवल। यहाँ ऐसे ही नाम रखे जाते हैं। आपको गाँव में वोडाफोन, आइडिया, एयरटेल जैसे नाम भी मिल जाएँगे। जो नाम सुने जाते हैं वही रख दिए जाते हैं। यहाँ महीनों के नाम पर, सप्ताह के दिनों के नाम पर भी लोगों के नाम हैं।"

दिसम्बर जी से मेरी बातचीत शुरू हुई। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने दादा से इस पुल के बारे में सुना था। खासी जनजाति के लोगों का मकसद, ऐसे पुल नोवेत गाँव से रिवाई गाँव को जोड़ना है।

पुल बनाने की इस परंपरा को एक विशेष जनजाति के लोगों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी जीवित रखा है। आज वे कहाँ पुल बना रहे होंगे कोई नहीं जानता। एक पुल बनाने में करीब सौ साल लग जाते हैं। लाइव रूट ब्रिज बनाने के लिए सबसे पहले रबर के पौधों को सोचे–समझे तरीके से लगाया जाता है। जब पौधे बड़े होने लगते हैं और उनकी हवाई जड़ें (सपोर्टिंग रूट्स) बाहर लटकने लगती हैं तब उनको बाँसों से चोटी की तरह गूँथते हुए चलते हैं। यह कोई एक दिन का काम नहीं होता, न ही एक महीने का, क्योंकि जीवित पेड़ों की जड़ें तब तक बढ़ नहीं जातीं तब तक उन्हें बाँधा नहीं जा सकता। रस्सी की तरह बढ़ती ये जड़ें चिपकती जाती हैं। एक–दूसरे से बँधती जाती हैं, धीरे–धीरे बाँसों की जगह बदलती जाती हैं। हमने जो पुल देखा वह करीब तीन सौ साल पुराना है।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा था। ''ऐसे पुल और कहाँ हैं?'' मैंने पूछा। उन्होंने बताया कि चेरापूँजी के पास डबल–डेकर पुल हैं, यानी एक पुल के ऊपर एक और पुल।

अचानक मुझे ट्री हाउस याद आया। मैंने उनसे इशारे में कहा कि आपने बहुत ही सुन्दर घर बनाया है तो वे मुस्कुरा उठे। ''कितने दिन लगे इसे बनाने में?'' मैंने पूछा।

हेनरी ने बताया, ''दो महीने।''

मैंने पूछा ''आपने ट्री–हाउस के सहारे के लिए जो बड़े–बड़े पेड़ों के तने लगाए हैं वे किस पेड़ के हैं?'' वे बोले ''कटहल के।''

दिसम्बर जी से बात करते–करते समय का पता ही नहीं चला। बाहर अँधेरा हो गया था और बारिश भी हो रही थी। वैसे भी यहाँ रात जल्दी हो जाती है। हेनरी ने जब कहा कि आप खाना खाकर सो जाइए तो हम फौरन मान गए। हम थक भी बहुत गए थे।

हेनरी की बहन सारा ने बहुत स्वादिष्ट दाल–चावल और परवल की सब्जी बनाई थी। उसे खाकर हम लोग गहरी नींद में सो गए।

सारी रात बारिश होती रही। सुबह उठे तो बिजली गायब थी। बाहर बादलों ने हमें चारों तरफ से घेरा हुआ था। अच्छा हुआ जो कल हम रूट ब्रिज देख आए थे। आज तो जाना संभव ही नहीं होता।

यहाँ चूँकि बारिश बहुत तेज होती है इसलिए हरियाली ज़्यादा और धूल कम है। यहाँ खासतौर पर सुपारी, काली मिर्च, तेज पत्ता, बाँस, फूल–झाड़ू, कटहल, लीची, अनन्नास, संतरा, केला आदि के पेड़ मिलते हैं। यहाँ मैंने पिचर प्लांट भी देखा। छोटे–छोटे कीड़े जब उसके पास पहुँचते हैं तो वह झट से ढक्कन बंद कर देता है। जब वे कीड़े मर जाते हैं तब उनको खा जाता है।

नीचे पहाड़ पर लकड़ी के बड़े–बड़े खम्बों के सहारे बनी कॉटेज में दो बड़े–बड़े कमरे, शौचालय और एक डायनिंग रूम था। सब कुछ बना था लकड़ी और बाँस का। बाँस की चटाइयों की दीवारें और छत सुपारी व झाडू के पत्तों से बनी है। छत इतनी मज़बूत और वाटर प्रूफ है कि लगातार होनेवाली बारिशों में भी एक भी बूँद पानी अन्दर नहीं टपकता।

घने जंगल और पहाड़ों के बीच बसा होने के कारण मायलिनोंग किसी भी कमी का एहसास नहीं कराता। यहाँ लोग पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करते। हेनरी ने बताया कि मायलिनोंग में 94 परिवार बसे हुए हैं। यहाँ कुल 506 लोग रहते हैं। साक्षरता की दर यहाँ सौ प्रतिशत है। गाँव में दो स्कूल हैं– एक खासी और एक अंग्रेजी माध्यम का। सभी बच्चे पढ़ने जाते हैं। आठवीं के बाद पढ़ाई के लिए बच्चे शिलांग जाते हैं।

यहाँ के लोग खाना मिट्टी के चूल्हे पर बनाते हैं। चूँकि यहाँ बारिश ज्यादा होती है इसलिए चूल्हे के ऊपर बने एक झूले में लकड़ियाँ सुखाने के लिए रख दी जाती हैं, गर्म धुएँ से लकड़ियाँ सूख जाती हैं। इनका कपड़े सुखाने का तरीका भी निराला है, इन्होंने बाँस का एक बड़ा–सा पिंजरा बनाया हुआ है, जिसके नीचे कोयले के जलते हुए अंगार रख देते हैं और ऊपर कपड़े फैला दिए जाते हैं, हल्की गर्मी के ताप से कपड़े सूख जाते हैं।

मायलिनोंग में एक छोटी–सी दुकान है जो साबुन, मोमबत्ती, माचिस वगैरह छोटी–मोटी जरुरतों को पूरा करती है। मायलिनोंग से दो टैक्सियाँ हर रोज सुबह शिलांग जाती हैं और शाम को वापस आती हैं। यहाँ के लोग आटा, दाल, चावल, हरी सब्जियाँ तथा खाने–पीने का हर सामान शिलांग से ही लाते हैं। यहाँ सब्जी, अनाज कुछ भी पैदा नहीं होता। हाँ मछली, सुअर, मुर्गियाँ जरुर पाली जाती हैं। हेनरी ने बताया कि शिलांग से मायलिनोंग के बीच सड़क बने बारह साल हुए हैं। इसके पहले आना–जाना और मुश्किल था। गाँव के मुखिया को सभी हेडमैन कहते हैं, उन्होंने गाँव को साफ़–सुथरा रखने के लिए नियमों को जगह–जगह लगा रखा है। जिसका सभी गाँववाले पालन करते हैं।

रूट ब्रिज के रास्ते में मैंने बड़े बच्चों को एक रोचक खेल खेलते देखा। केले के एक तने को उन्होंने जमीन में गाड़ दिया था। दूर एक रेखा खिंची हुई थी जिसके पीछे खड़े होकर वे नुकीले तीर से उस तने को भेदने की कोशिश कर रहे थे। आसपास खड़े बच्चे निशाना लगने पर तालियाँ बजा रहे थे।

हम भी इस अनूठी जगह के लिए मन ही मन तालियाँ बजाते हुए आगे बढ़ गए...........

शब्दार्थ

मुआयना – निरीक्षण; **दुभाषिया** – दो भाषा–भाषी लोगों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला; **मकसद** – उद्देश्य।

अभ्यास

पाठ से

1. मायलिनोंग गाँव में बने घरों व कॉटेज की क्या विशेषताएँ हैं?
2. पहाड़ पर चढ़ते हुए दृश्य को लेखिका ने अद्भुत क्यों कहा है?
3. गाँव के पुल का नाम "लाइव रूट ब्रिज" ही क्यों रखा गया होगा?
4. "यह कोई एक दिन का काम नहीं होता, न ही एक महीने का।" लाइव रूट ब्रिज के बारे में ऐसा क्यों कहा गया?
5. मायलिनोंग में किस प्रकार के पेड़–पौधे पाए जाते हैं? और स्थानीय लोग इनका किस–किस तरह से उपयोग करते हैं?
6. मायलिनोंग को एशिया और भारत का सबसे स्वच्छ गाँव घोषित किया गया। ऐसी कौन–कौन सी विशेष बातें हैं, जिनके कारण इसे यह सम्मान प्राप्त हुआ?

पाठ से आगे

CLDF8T

1. मायलिनोंग में लोगों के नाम हमारे और आपके नामों से भिन्न रखे जाते हैं, जैसे– फेस्टिवल, वोडाफोन, एयरटेल, दिसम्बर आदि।

(क) कल्पना करके लिखिए कि मायलिनोंग के लोगों ने और कौन–कौन से नए नाम रखे होंगे?

(ख) सुखिया की काकी का नाम 'बुधवारी बाई' है क्योंकि वह बुधवार के दिन पैदा हुई थी। इसी प्रकार आपके आसपास भी ऐसे लोग होंगे जिनके नाम से कोई न कोई रोचक बात जुड़ी होगी ।अपने साथियों व बड़ों से बातचीत करके ऐसे नामों व उसके बारे में पता कीजिए और लिखिए।

2. मायलिनोंग में कटहल के बड़े तनों पर ही ट्री हाउस बनाए जाते हैं तथा रबर के पेड़ों की जड़ों से ब्रिज तथा बाँस के पेड़ों से घर की नालियाँ, दीवारें आदि बनाई जाती हैं। यदि यही सब कुछ हमारे यहाँ बनाया जाए तो कौन–कौन से पेड़ों का उपयोग किया जाएगा और क्यों।

		पेड़	क्यों?
(क) ट्री हाउस	–	....	....
(ख) घर की दीवारें	–	....	....
(ग) घरों की छतें	–	....	....
(घ) यदि ब्रिज बनाना हो तो–		....	....

3 आपने किसी ऐसे प्राकृतिक स्थान का भ्रमण अपने परिवार या स्कूल के विद्यार्थियों के साथ किया होगा उसका वर्णन इस प्रकार कीजिए कि पढ़नेवाले उसे पढ़कर उस स्थान के बारे में अच्छे से समझ पाएँ।

4. लेखिका ने हेनरी के लिए एक शब्द का प्रयोग किया है 'दुभाषिया' अर्थात दो भाषा–भाषी लोगों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला।

(क) आपके आस–पास लोग कौन–कौनसी भाषाएँ/बोलियाँ बोलते हैं? लिखिए।

(ख) यदि आपको कोई अन्य भाषा–भाषी व्यक्ति से बात करना हो और आप एक–दूसरे की भाषा नहीं जानते हों तब आप एक दूसरे से कैसे बात करेंगे?

भाषा के बारे में

1. 'जड़' के लिए पाठ में कई विशेषण शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे– मजबूत, मोटी–मोटी, हवाई आदि। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के लिए कौन–कौनसे विशेषण शब्द प्रयुक्त किए जा सकते हैं? सोचकर लिखिए।

   बादल –
   रास्ता –
   बारिश –
   पुल –
   साड़ी –
   पेड़ –
   नदी –

   CLMBAG

2. पाठ में एक शब्द प्रयुक्त हुआ है– 'अद्‌भुत नज़ारा', इसमें से अद्‌भुत शब्द हिंदी का है और नज़ारा उर्दू का। हम बोल–चाल में इस तरह से भाषाओं का मिला–जुला प्रयोग करते हैं। आप इसी तरह के कुछ अन्य शब्द खोजकर लिखिए।

3. 'बाँस', व 'सड़क' दोनों संज्ञाएँ व्यंजनांत हैं। लेकिन 'बाँस' का बहुवचन 'बाँस' ही रहता है पर 'सड़क' का 'सड़कें' हो जाता है।

   जैसे– दस सड़कें, कई सड़कें

   दस बाँस, कई बाँस

   पाठ में अन्य संज्ञाएँ ढूँढ़िये और बहुवचन बनाने के नियमों पर चर्चा कीजिए।

योग्यता विस्तार

गतिविधि

1. इस यात्रा वृत्तांत की लेखिका को एक पत्र लिखिए, जिसमें आप निम्नांकित बिन्दुओं की मदद ले सकते हैं–
   - आपको उनका लेख कैसा लगा?
   - इस गाँव के बारे में आप और क्या–क्या जानना चाहते हैं?
   - अपनी किसी यात्रा से जुड़े अनुभव या घटना को भी साझा कर सकते हैं।
2. चेरापूँजी के डबल–डेकर रूट ब्रिज की कल्पना करके चित्र बनाइए।

CLM7C4

3. यदि आप अपने गाँव / शहर को सबसे स्वच्छ / सुन्दर बनाना चाहते हैं तो निम्नांकित स्तरों पर क्या–क्या कार्य करने की आवश्यकता है–

- स्वयं के स्तर पर
- प्रशासनिक स्तर पर
- पंचायत स्तर पर।

4. एक समाचार पत्र में प्रकाशित इस खबर को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

ये है एशिया का सबसे क्लीन गांव

503 लोगों की आबादी | 91 घर ही गांव में

2003 में इंडिया डिस्कवरी मैग्जीन ने गांव को दी थी 'एशियाज क्लीनेस्ट विलेज' की उपाधि।

स्वच्छ भारत अभियान से जुड़कर भले ही देश बाद में सफाई का महत्त्व समझें, पर मेघालय के एक गांव के लोग पहले ही इसे समझ चुके हैं। ये गांव है माव्ल्यनोंग। ये एशिया का सबसे साफ गांव है। गांव के हर घर में शौचालय हैं। चमचमाती सड़कों के अलावा और भी बहुत कुछ है यहां। साथ ही बच्चे से लेकर बड़े बुजुर्ग तक साफ-सफाई के प्रति गंभीर रहते हैं। 2007 में यहां के ग्रामीणों ने निर्मल भारत अभियान के तहत हर घर में शौचालय बनवा लिए थे।

इसी तरह आदर्श ग्रामपंचायत अथवा स्वच्छ ग्राम से संबंधित समाचारों को एकत्र करें?

पाठ 5.3 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख

निर्मला पुतुल

CM63DR

निर्मला पुतुल *का जन्म 6 मार्च सन् 1972 ई. को झारखंड के दुमका जिले में एक संथाली परिवार में हुआ। वे संथाली भाषा की प्रसिद्ध कवयित्री हैं और सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं। साथ ही विलुप्त होती आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, जो उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता हैं। प्रस्तुत कविता आधुनिक सभ्यता के संदर्भ में होने वाले विकास एवं प्रगति पर कई प्रश्न उठाती है।*

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हजारों–हजार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?
इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूसा है कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे
पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?

सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से
टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़?

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को,
अपने घर के पिछवाड़े में?

भाग–दौड़ की ज़िंदगी से
थोड़ा–सा वक्त चुराकर
बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं,
तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है।

शब्दार्थ

धमस – ऐसी आवाज़ जो आपको भीतर तक हिला दे, (दिल दहलाने वाली आवाज़); **अर्घ्य देना** – देवताओं को जल चढ़ाना; **गुमसुम** – चुपचाप।

अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ों के चित्कारने से आप क्या समझते हैं?
2. नदी मुँह ढाँप कर क्यों रो रही है?
3. गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी कभी किसी से कोई शिकायत नहीं करती। ऐसा क्यों कहा गया है?
4. ख़ून की उल्टियाँ करते देखा है कभी हवा को
   (क) इस पंक्ति में किस समस्या की ओर संकेत किया गया है?
   (ख) इस समस्या को कम करने के क्या–क्या उपाय किए जा सकते हैं?
5. कविता के अंत में कवयित्री ने आदमी के आदमी होने पर संदेह क्यों व्यक्त किया है?
6. पृथ्वी को बूढ़ी कहने का क्या तात्पर्य है?

पाठ से आगे

CHEYFE

1. कविता के माध्यम से प्रकृति को नुकसान पहुँचाने वाली किन–किन समस्याओं को उभारा गया है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. वर्तमान में पहाड़ों को लगातार तोड़ा जा रहा है या दोहन किया जा रहा है।
   (क) आपके अनुसार इसके क्या कारण हैं? लिखिए।
   (ख) इससे पर्यावरण में किस प्रकार का असंतुलन बढ़ रहा है? चर्चा कीजिए।
3. यदि सचमुच में पेड़, नदी और हवा बोल पाते तो वे अपनी पीड़ा किस प्रकार व्यक्त करते? अपने शब्दों में लिखिए।
4. हमारे आसपास किन–किन प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग हो रहा है? इन्हें रोकने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है? लिखिए।
5. हमारी संस्कृति व परंपराओं में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनमें पेड़ों को बचाने के प्रयास नज़र आते हैं, जैसे पेड़ों को राखी बाँधना, गोद लेना और किसी न किसी व्रत व पर्व में उसकी पूजा करना आदि।

   क्या आपके परिवेश में पेड़ों से जुड़े पर्व या व्रत हैं? इनके बारे में जानकारी इकट्ठा कर निम्नलिखित सारणी में लिखिए।

पेड़ का नाम	इनसे जुड़े व्रत, पर्व	जुड़ी मान्यताएँ	फलदार हैं या नहीं	पत्तियों के बारे में
उदाहरण– पीपल	पितृ– अमावस्या	पूजा करने से पूर्वजों की आत्मा को शांति मिलती है।	फलदार है परंतु खाने के लिए उपयोगी नहीं	गहरे हरे रंग की, दिल के आकार की, चिकनी एवं जालीदार

भाषा के बारे में

1. कविता में पेड़ों, नदियों, पहाड़ों आदि को मानव के समान व्यवहार करते बताया गया है, जैसे पेड़ चीत्कार कर रहे हैं, नदी रो रही है, आदि।

   इस प्रकार के प्रयोग को 'मानवीकरण अलंकार' कहा जाता है।

   मानवीकरण अलंकार का प्रयोग जिन–जिन पंक्तियों में हुआ है, उन्हें छाँटकर लिखिए।

2. कविता में ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनमें स्थानीय/बोलचाल की भाषा का प्रभाव झलकता है। जैसे 'महसूसा' अर्थात् 'महसूस किया', 'बतियाया' अर्थात् बात की।

   इसी प्रकार के अन्य शब्दों को स्वयं से ढूँढ़कर लिखिए।

CHNUH2

3. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए–

(क) किस **कदर** रोती हैं नदियाँ।

(ख) हम आपकी बहुत **कदर** करते हैं।

दोनों वाक्यों में 'कदर' शब्द के अर्थ अलग–अलग हैं। पहले वाक्य में इसका अर्थ 'के समान' और दूसरे वाक्य में 'सम्मान/आदर' है। ऐसे शब्द जिनके एक से ज्यादा अर्थ होते हैं, उन्हें हम अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

नीचे दिए गए शब्दों के अलग–अलग अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

सीना, जीना, उत्तर, अंक, चरण

4. 'क्या' शब्द का प्रयोग करके बनाए गए प्रश्नवाचक वाक्यों को पढ़िए–

(क) क्या आप घर जा रहे हैं?

(ख) आपने नाश्ते में क्या खाया?

भाषा में प्रश्नवाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं : "हाँ–ना" उत्तरवाले प्रश्नवाचक वाक्य और सूचनाओं की अपेक्षा रखनेवाले प्रश्नवाचक वाक्य। पहलेवाले प्रश्नवाचक वाक्य का उत्तर हाँ/नहीं में ही होगा। इसमें क्या का प्रयोग हमेशा वाक्य के शुरू में ही होगा।

(क) 'हाँ–ना' उत्तरवाले पाँच प्रश्नवाचक वाक्य सोचकर लिखिए।

दूसरेवाले प्रश्नवाचक वाक्य के उत्तर में आपको कुछ न कुछ बताना होगा। इनके उत्तर में हमेशा नई सूचनाओं की उम्मीद रहती है। इन्हें सूचनाओं की अपेक्षा रखनेवाला प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। इनसे प्राप्त होने वाला उत्तर वाक्य में उसी स्थान पर आएगा जिस स्थान पर क्या का प्रयोग हुआ है।

जैसे– आपने नाश्ते में **क्या** खाया?

उत्तर : मैंने नाश्ते में **सेब** खाया।

ऐसे प्रश्नवाचक वाक्यों में **'क्या'** के अतिरिक्त **'कौन', 'कहाँ', 'कब', 'कितने', 'किसने'** आदि शब्दों का इस्तेमाल भी वाक्य में ठीक उसी स्थान पर होता है, जहाँ उसका उत्तर होता है। इसे एक उदाहरण द्वारा समझते हैं–

वाक्य : राम ने कल शाम अपने कमरे में दो सेब खाए।

प्रश्नवाचक वाक्य–

प्रश्न : **किसने** कल शाम अपने कमरे में दो सेब खाए?

उत्तर : राम ने

प्रश्न : राम ने **कब** अपने कमरे में दो सेब खाए?

उत्तर : कल शाम

प्रश्न : राम ने कल शाम **कहाँ** दो सेब खाए?

उत्तर : अपने कमरे में

प्रश्न : राम ने कल शाम अपने कमरे में **क्या** खाया?

उत्तर : सेब

प्रश्न : राम ने कल शाम अपने कमरे में **कितने** सेब खाए?

उत्तर : दो

(ख) इसी तरह से आप भी निम्नलिखित वाक्य से सूचनात्मक/प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

वाक्य : हथौड़ों की चोट से भरी दुपहरिया में भी पत्थर चीख़ उठे।

योग्यता विस्तार

1. चिपको आंदोलन पर्यावरण रक्षा का आंदोलन है। इसे किसानों ने वृक्षों की कटाई का विरोध करने के लिए किया था। एक दशक से भी ज्यादा चले इस आंदोलन में भारी संख्या में स्त्रियों ने भाग लिया था। 'चिपको आंदोलन' के बारे में शिक्षकों से अथवा पुस्तकालय से और भी जानकारी इकट्ठा कीजिए तथा इस जानकारी को निम्न बिन्दुओं के अनुसार लिखिए—

   (क) यह आंदोलन कहाँ हुआ?

   (ख) इसके सूत्रधार कौन थे?

   (ग) इसके पीछे क्या सोच/विचार था?

   (घ) इसकी सफलता किस हद तक रही?

2. तेजी से बढ़ते शहरीकरण व औद्योगिकीकरण से किस प्रकार पर्यावरण प्रभावित हो रहा है? इस विषय पर समूह में चर्चा कीजिए।

इकाई 6 : विज्ञान एवं तकनीकी

पाठ 6.1 : सी. वी. रमन

पाठ 6.2 : प्लास्टिक : कल का खतरा, आज ही जागें

पाठ 6.3 : विकसित भारत का स्वप्न

इकाई 6

विज्ञान एवं तकनीकी

आज विज्ञान व तकनीकी हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। पिछली एक सदी में इंसान ने विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। आज हम अपनी दुनिया को पहले की तुलना में बेहतर रूप से जानते, समझते हैं। इसके साथ ही विज्ञान व तकनीकी ने हमारे जीवन को भी सुविधा–संपन्न बनाया है, जैसे– स्वास्थ्य, यातायात व संचार की सुविधाएँ। ऐसे में विज्ञान को इंसान के लिए वरदान की तरह देखा जा सकता है, लेकिन सुविधाओं के साथ कई समस्याएँ भी विज्ञान से हमारे जीवन में आई हैं। जैसे– तनाव, अवसाद व नई बीमारियाँ। विज्ञान व तकनीकी के इन्हीं दोनों पहलुओं को समझने का अवसर आपको इस इकाई में मिलेगा। साथ ही विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र की विशिष्ट वैज्ञानिक व पारिभाषिक शब्दावली युक्त भाषा से भी आपका परिचय होगा।

इस इकाई में कुल तीन अध्याय शामिल किए गए हैं। **डॉ. सी. वी. रमन** के संक्षिप्त जीवनवृत्त में आप देखेंगे कि सीमित संसाधनों में भी महानतम कार्य किए जा सकते हैं। अपने आसपास घटने वाली घटनाओं के प्रति जिज्ञासा व उनका गहराई से अवलोकन, विश्लेषण करना वैज्ञानिकता की आवश्यक शर्त है।

सुदिप्ता घोष का लेख **प्लास्टिक : कल का खतरा, आज ही जागें** हमें प्लास्टिक के उपयोग व उससे उपजे खतरों से अवगत कराता है। आज हम अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक से घिरे हुए हैं। पग–पग पर हमें प्लास्टिक की जरूरत पड़ती है। लेकिन फायदों के साथ ही यह सेहत व पर्यावरण के लिए घातक बन गया है।

चर्चित वैज्ञानिक एवं राष्ट्र के 11वें राष्ट्रपति **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम** के विचारों पर आधारित इस लेख में डॉ. कलाम द्वारा राष्ट्र को अपनी क्षमताओं के पहचानने की प्रक्रिया को रेखांकित किया गया है जिससे कि विकसित भारत स्वप्न के रूप में न होकर एक विकसित देश की वास्तविकता के स्वरूप में हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन सके।

पाठ 6.1 : सी. वी. रमन

अरविंद गुप्ता

CN7LKC

अरविंद गुप्ता *भारत में विज्ञान को लोकप्रिय बनाने और शैक्षिक खिलौने बनाने के लिए मशहूर हैं। वे लेखन व अनुवाद भी करते हैं। उनकी लोकप्रिय वेबसाइट arvindguptatoys.com पर खिलौनों और पुस्तकों का विशाल भंडार है। अपने काम के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें बच्चों में विज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार का पहला राष्ट्रीय पुरस्कार (1988) शामिल है।*

आज वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में अंधाधुंध पूँजी निवेश और परिष्कृत उपकरणों का बोलबाला है, परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रयोगशाला में सबसे महँगा और कीमती उपकरण आज भी मनुष्य का दिमाग है। इस बात की सच्चाई का प्रमाण हमें सी. वी. रमन के जीवन से मिलता है। वे अकेले ऐसे वैज्ञानिक हैं जिन्हें भारत में विज्ञान के क्षेत्र में किए गए शोधकार्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिन अल्प विकसित उपकरणों का उन्होंने अपने शोध में उपयोग किया उनकी कीमत 200 रुपए से भी कम थी।

इस विलक्षण वैज्ञानिक का जन्म 7 नवंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नगर में हुआ। उनके पिता भौतिक विज्ञान और गणित के व्याख्याता थे। रमन को बचपन से ही विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ने को मिलीं। उन्हें अपने पिता से संगीत का प्रेम भी मिला, जिसकी प्रकृति पर उन्होंने बाद में बुनियादी शोध किया।

रमन की प्रारंभिक शिक्षा विशाखापट्टनम में हुई। उन दिनों आयु की पाबंदी न होने के कारण उन्होंने 11 वर्ष की उम्र में ही हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। 1902 में रमन ने प्रेसिडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया और भौतिकी विज्ञान में प्रथम स्थान तथा स्वर्ण पदक के साथ 1904 में बी. ए. पास किया। 1907 में एम. ए. की परीक्षा में वे सर्वश्रेष्ठ छात्र घोषित किए गए। रमन का कद छोटा था, जिसने उनके लिए अनेक मुश्किलें खड़ी कीं। अक्सर उनके शिक्षक पूछते, ''क्या तुम सच में इस कक्षा के छात्र हो?'' महाविद्यालय की पढ़ाई समाप्त होने के बाद रमन को उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने की सलाह दी गई परंतु मद्रास में सिविल सर्जन ने जब उनकी जाँच की तो उन्हें लगा कि रमन का छोटा शरीर इंग्लैण्ड का कड़क मौसम बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। भारत में रहकर काम करने के लिए रमन सारी जिंदगी उस डॉक्टर के ऋणी रहे।

रमन ने भौतिक विज्ञान में एम. ए. किया। उन दिनों विज्ञान पढ़ने वालों के लिए बहुत कम नौकरियाँ थीं। अन्य विकल्प खुले न होने के कारण रमन को कलकत्ता में वित्त विभाग में शासकीय नौकरी करनी पड़ी।

वित्त विभाग में नौकरी करते हुए भी भौतिकी में रमन की रुचि लगातार बनी रही। उन्होंने घर में ही एक छोटी प्रयोगशाला बनाई और वहीं प्रयोग करने लगे। एक दिन काम से लौटते समय उन्हें एक साइनबोर्ड दिखाई दिया जिस पर इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टिवेशन आफ साइंस (Indian Association for Cultivation of Science) लिखा था। कहा जाता है कि रमन चलती ट्राम से कूदकर वहाँ पहुँचे जहाँ उनका स्वागत अमृतलाल सरकार ने किया। इनके पिता महेन्द्रलाल सरकार ने भारतीय विज्ञान का प्रसार करने के लिए 1876 में इस संस्था की स्थापना की थी। अब रमन शाम को अपने दफ्तर से लौटकर वहाँ की प्रयोगशाला में काम करने लगे। जल्द ही वे उच्च कोटि के वैज्ञानिक शोधपत्र लिखने लगे जिनकी ओर विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित हुआ।

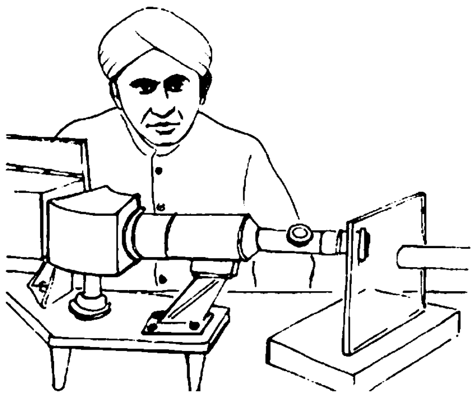

1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति आशुतोष मुखर्जी ने रमन को विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान की तारकनाथ पालित चेयर स्वीकार करने का निमंत्रण दिया। रमन फूले नहीं समाए। वित्त विभाग के बहीखातों से बरी होकर अब वे अपने प्रिय विषय पर शोध करने के लिए मुक्त थे।

1921 में एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए रमन विदेश गए। उनकी यह समुद्री यात्रा भौतिक विज्ञान के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। वे समुद्र के गहरे नीले पानी को निहारते रहते। सागर का पानी नीला क्यों दिखता है? क्या पानी आसमान के प्रतिबिंब के कारण नीला दिखता है? क्या कोई और कारण है? रमन को एहसास हुआ कि सागर का नीलापन पानी और सूर्य के प्रकाश के अंतर्संबंध के कारण है। इस तरह जब जहाज के अन्य मुसाफिर ताश और बिंगो के खेलों में मस्त थे, तब रमन वहाँ एक जेबी वर्णक्रममापी से प्रयोगों में मगन थे और उन्होंने अलग माध्यमों में प्रकाश के प्रकीर्णन पर एक शोधपत्र लिख डाला।

भारत लौटने के बाद रमन ने इस विषय पर गंभीरता से शोध शुरू किया। उन्होंने प्रकाश की किरणों को भिन्न–भिन्न द्रवों से गुजारा और उनके प्रभाव का अध्ययन किया। अंततः 1928 में उन्होंने सिद्ध किया कि जब किसी एक रंग का प्रकाश किसी द्रव से गुजरता है तो प्रकाश के कण और द्रव के परमाणु एक दूसरे पर क्रिया करते हैं और प्रकाश को बिखेर देते हैं। बाहर निकलने वाली प्रकाश किरण का रंग आने वाली किरण से भिन्न होता है। बाहर निकलने वाली यह किरण आने वाली किरण की तुलना में ऊँचे और नीचे दोनों स्तरों की ऊर्जा की ओर मुड़ती है। यही वह सुप्रसिद्ध 'रमन प्रभाव' है जिस पर आगे चलकर रमन को नोबेल पुरस्कार मिला। उनकी खोज से विश्व स्तर पर वैज्ञानिक शोध में तेजी आई। इससे अलग पदार्थों की संरचना के अध्ययन में बहुत मदद मिली।

इस बुनियादी शोध के बाद रमन पर सम्मानों की झड़ी लग गई। अरनेस्ट रदरफोर्ड ने 'रमन प्रभाव' की खोज की घोषणा रॉयल सोसाइटी में की, जिसके बाद ब्रिटिश सरकार ने रमन को नाइटहुड (Knighthood) के सम्मान से नवाजा। 10 दिसम्बर 1930 को उन्हें दुनिया के सर्वोच्च पुरस्कार नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया

गया। विज्ञान के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले रमन पहले एशियाई और पहले अश्वेत व्यक्ति थे। उनसे पहले रवीन्द्रनाथ ठाकुर को साहित्य के क्षेत्र में यह सम्मान मिला था। रमन के बाद उनके भांजे सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर को लगभग पचास वर्ष बाद 1983 में नोबेल पुरस्कार मिला।

सदियों तक विदेशी ताकतों द्वारा शासन किए जाने के बाद इस अंतर्राष्ट्रीय गौरव से भारतीय वैज्ञानिक समाज का आत्मसम्मान बुलंद हुआ। एक भारतीय वैज्ञानिक को, जिसने सारा शोध भारत में ही रहकर किया हो, दुनिया का सबसे बड़ा सम्मान मिलना सच में बहुत गर्व की बात थी।

जुलाई 1933 में रमन को टाटा विज्ञान संस्थान (वर्तमान में भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर) का प्रथम भारतीय निदेशक नियुक्त किया गया। अगले 15 वर्ष रमन ने इस संस्था में गुजारे और इस दौरान उन्होंने यहाँ विश्व स्तर का भौतिक विज्ञान विभाग स्थापित किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक वैज्ञानिकों को प्रेरणा और प्रशिक्षण दिया। उन्होंने क्ष–किरण विवर्तन (X-Ray Diffraction) और अपने प्रिय विषय प्रकाश एवं पदार्थ के बीच अंतर्संबंधों पर काम शुरु किया।

रमन की विज्ञान के प्रचार प्रसार में गहरी रुचि थी। वे एक ओजस्वी वक्ता थे और उन्होंने विज्ञान के भिन्न–भिन्न विषयों पर अनेक भाषण दिए। उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में काम करने के आनंद तथा समाज के उत्थान में उसकी मुख्य भूमिका पर बल दिया। अपने लोकप्रिय व्याख्यानों में वे गूढ़ विषयों को सरल और अत्यंत रोचक रुप में प्रस्तुत करते थे, जिसे वे 'प्रदर्शन' कहते थे। वे दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। अपने व्याख्यान में वे अक्सर कोई जीवंत वैज्ञानिक प्रयोग करके दिखाते थे। उनका व्याख्यान "आसमान नीला क्यों होता है?" आज भी वैज्ञानिक भावना को संप्रेषित करने और उसकी पद्धति की एक अनूठी मिसाल है। रूखे तथ्यों या सूत्रों को रटकर सीखने के विषय के रूप में प्रस्तुत न करके, वे विज्ञान को चरणबद्ध प्रश्नों की एक शृंखला के रुप में पेश करते थे। इस तरह से वे सुव्यवस्थित तार्किकता के माध्यम से प्रकृति की कार्यप्रणाली को समझाते थे।

वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के संस्थापक सदस्य थे।

रमन ने वाद्ययंत्रों के ध्वनि विज्ञान (Acoustics) पर भी काम किया। अध्यारोपण गतियों के आधार पर धनुष–डोर से बजने वाले वाद्ययंत्रों के तिर्यक कंपन (Transverse Vibration of Bowed Strings on the Basic of Superposition Velocities) का सिद्धांत भी उन्होंने विकसित किया। भारतीय तालवाद्य तबला और मृदंगम् की ध्वनि के समस्वरीय स्वभाव पर शोध करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। 1943 में उन्होंने एक कम्पनी शुरू की जिसका नाम था 'त्रावणकोर केमिकल एंड मेन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड।'

1948 में सेवानिवृत्ति से पहले रमन ने बैंगलोर में खुद अपने शोध संस्थान रमन शोध संस्थान (Raman Research Institute) की स्थापना की। इस संस्थान की विशेषता यह थी कि उसकी स्थापना के लिए सारी पूँजी व्यक्तिगत दाताओं से आई। उन्होंने 1970 तक अपना वैज्ञानिक शोधकार्य जारी रखा। हमेशा की तरह रमन शोध संस्थान में उन्होंने 2 अक्टूबर 1970 को महात्मा गाँधी मेमोरियल व्याख्यान दिया। इसके बाद वे बीमार पड़ गए और 21 नवंबर को उनका देहांत हो गया।

शब्दार्थ

परिष्कृत – शुद्ध; **प्रकीर्णन** – प्रकाश का सीधी रेखा से विचलन; **ट्राम** – एक छोटी रेलगाड़ी जिसकी पटरियाँ सड़क पर होती हैं; **अध्यारोपण** – एक के ऊपर दूसरे पदार्थ को बिठाने की क्रिया; **बिंगो** – अंकों व कार्ड से खेले जाने वाला एक खेल; **वर्णक्रममापी** – एक भौतिकीय उपकरण जो प्रकाश किरण को सात रंगों में विभक्त करता है।

अभ्यास

पाठ से

1. प्रयोगशाला का सबसे महँगा और कीमती उपकरण मनुष्य के दिमाग को क्यों कहा गया है?
2. वह कौन सी घटना थी जिसके कारण रमन ने सारी जिंदगी भारत में रहकर ही शोधकार्य किया?
3. 'रमन प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।
4. एक वैज्ञानिक होते हुए भी रमन को वित्त विभाग की नौकरी क्यों करनी पड़ी? इस नौकरी में रहते हुए भी उनका मन कहाँ लगा रहा?
5. रमन की व्याख्यात्मक शैली की विशेषता क्या थी?
6. अपने पिता का रमन के स्वभाव व रुचि पर कैसा प्रभाव पड़ा?
7. रमन की समुद्र यात्रा भौतिक विज्ञान के लिए लाभदायक सिद्ध हुई। ऐसा क्यों कहा गया है?
8. अपने पिता से मिले संगीत प्रेम के आधार पर रमन ने क्या शोध किया और कौन–सा सिद्धांत विकसित किया?

पाठ से आगे

CNGHLZ

1. निम्नलिखित दोनों घटनाएँ रमन के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को प्रकट करती हैं?

   घटना एक– "जब जहाज पर अन्य मुसाफिर ताश और बिंगो के खेलों में मस्त थे, तब रमन प्रयोगों में मगन थे।"

   घटना दो– "इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टिवेशन ऑफ साइंस का साइन बोर्ड देखकर रमन चलती ट्राम से कूदकर वहाँ पहुँच गए।"

2. सी. वी. रमन छोटे कद के थे, और इससे उन्हें कई मुश्किलों का सामना भी करना पड़ा, लेकिन यह उनकी सफलता में बाधक नहीं बना। क्या आप मानते हैं कि किसी प्रकार की शारीरिक चुनौती आगे बढ़ने में बाधक नहीं होती है। तर्क सहित अपनी बात रखिए।

3. वित्त विभाग में नौकरी करते हुए भी सी. वी. रमन विज्ञान के शोध पर कार्य करते रहे, जबकि आजकल ज्यादातर लोग अपनी रुचि के कार्यक्षेत्र में न जाकर केवल अच्छी नौकरी की ओर भागते हैं। इस संबंध में आपके क्या विचार हैं?

4. कुछ ऐसे भारतीय वैज्ञानिकों के बारे में बताइए जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है।

5. रमन की विज्ञान के प्रचार–प्रसार में गहरी रुचि थी। आपकी किस क्षेत्र में सबसे ज्यादा रुचि है, और उसके विकास में आप क्या योगदान दे सकते हैं?

भाषा के बारे में

1. जब हम किसी के बीते हुए कल के बारे में वर्णन करते हैं, तो सामान्यतः वाक्यों में भूतकालिक क्रियाओं, सहायक क्रियाओं का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए– 'रमन का कद छोटा था।' 'रमन की विज्ञान के प्रचार–प्रसार में गहरी रुचि थी।' आदि।

CZUR3J

अब आप अपने बचपन के किसी साथी या अध्यापक के बारे में लिखिए, जो अब आपके साथ नहीं हैं। देखिए कि उनके बारे में लिखते समय आप किस प्रकार की क्रियाओं, सहायक क्रियाओं का इस्तेमाल करते हैं।

2. (क) 'महा' शब्द का प्रयोग एक उपसर्ग के रूप में किया जाता हैं, जैसे महाराज, महाविद्यालय, महासागर आदि। ऐसे अन्य शब्दों की सूची बनाइए।

   (ख) इस तरह से सोचिए–

   'राज' शब्द का अर्थ है– शासन। पर जब इसमें 'महा' उपसर्ग जुड़ता है तो प्राप्त शब्द 'महाराज' का अर्थ एक ऐसा व्यक्ति जो उस पूरे शासन को चलाता है अर्थात् राजा। इसी तरह अपने बनाए गए शब्दों को देखिए और चर्चा कीजिए कि 'महा' के जुड़ने से क्या–क्या बदलाव होते हैं।

योग्यता विस्तार

1. 'नोबेल पुरस्कार' क्या है? इसकी विस्तृत जानकारी पुस्तकालय से खोजकर लाइये और कक्षा में चर्चा कीजिए।

2. अब तक किन–किन भारतीयों को 'नोबेल पुरस्कार' मिल चुका है। इन्हें कब व किस क्षेत्र में योगदान के लिए यह पुरस्कार मिला है? पुस्तकालय से जानकारी जुटाइए।

D14H57

पाठ 6.2 : प्लास्टिक : कल का खतरा, आज ही जागें

D1DI6U

सुदिप्त घोष

प्रशांत महासागर की गहराइयों में कैलिफोर्निया के तट से 800 कि.मी. और जापान के तट से 300 कि.मी. की दूरी पर एक ऐसी पट्‌टी है, जिसे आधुनिक सभ्यता का क्रूर प्रतीक माना जा सकता है। इसे 'द ग्रेट पैसिफिक गार्बेज पैच' (प्रशांत कचरा पट्‌टी) नाम दिया गया है। माना जाता है कि इसका आकार भारत से चार गुना बड़ा है। इसमें पूरा कूड़ा करकट भरा हुआ है, जिसमें सबसे ज्यादा प्लास्टिक का कचरा भरा हुआ है। यह वह प्लास्टिक है जिसे हम इधर–उधर ज़मीन पर फेंक देते हैं। फिर यह हवा और बारिश के पानी से होता हुआ नालियों में जाता है। नालियों से नदियों और नदियों से महासागरों में पहुँच जाता है। यह फिर सागर की लहरों पर सवार होकर प्रशांत महासागर की इस पट्‌टी में जमा हो जाता है।

प्लास्टिक जिसे 20 वीं सदी में 'चमत्कारिक पदार्थ' की उपाधि से नवाजा गया था, अब हमारी आधुनिक सभ्यता के निष्ठुर चेहरे के रुप में उभर रहा है। इसके जैसा लचकदार पदार्थ प्रकृति में और कोई नहीं है। यह टिकाऊ है, वाटरप्रूफ है, बहुत हल्का व सस्ता है और सबसे बड़ी बात, इसे किसी भी आकार में ढाला जा सकता है। हर दिन इसमें नए–नए गुण जोड़े जा रहे हैं, जिससे प्लास्टिक की उपयोगिता और भी बढ़ती जा रही है। प्लास्टिक के इन्हीं फायदों की वजह से अब यह सेहत और पर्यावरण के लिए घातक बनता जा रहा है। प्लास्टिक को प्रकृति में अपघटित (नष्ट) नहीं किया जा सकता। इसलिए अब तक हमने जो भी प्लास्टिक निर्मित किया है, उसका प्रत्येक अणु कहीं न कहीं पर्यावरण में मौजूद है और आने वाले सैकड़ों सालों तक यह वैसा ही रहेगा।

मनचाहा आकार देकर उसे ठोस रुप से परिवर्तित किया जा सके, ऐसे पदार्थ की चाहत ने ही मनुष्य को प्रकृति में उपस्थित प्लास्टिक के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया। लेकिन बढ़ती माँग की पूर्ति यह प्राकृतिक प्लास्टिक नहीं कर पाया तो कृत्रिम प्लास्टिक के निर्माण की ज़रूरत महसूस हुई। आज अधिकांशतः कृत्रिम प्लास्टिक का ही इस्तेमाल होता है जो कच्चे तेल, कोयले अथवा प्राकृतिक गैस से बनाया जाता है।

लोकप्रिय क्यों?

हमारी ज़िंदगी पर प्लास्टिक का गहरा असर है। अनेक प्लास्टिक तो हमारे घर के सदस्य जैसे हो गए हैं, जैसे– नायलॉन, पॉलिस्टर, पॉलीथिन, टेफलॉन। बहुउपयोगी और सस्ता होने के कारण प्लास्टिक इतना लोकप्रिय हुआ है। प्लास्टिक कृत्रिम रुप से बनाया जाता है और विभिन्न प्रकार के उपयोग के लिए अलग–अलग गुणों वाले प्लास्टिक का कोई भी मिश्रण तैयार किया जा सकता है। हमारे पास कई तरह के प्लास्टिक उपलब्ध हैं– कठोर प्लास्टिक, कम वजनी प्लास्टिक, पारदर्शी प्लास्टिक, ताप या बिजली का कुचालक इत्यादि। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्लास्टिक बहुपयोगी पदार्थ बन गया है। पैकेजिंग, भवन निर्माण, स्वास्थ्य–सुविधाओं, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि, खेल सामग्री और वस्त्र उद्योग में इसका व्यापक इस्तेमाल होता है। आज प्लास्टिक बड़ी तेजी से सभी पारंपरिक पदार्थों जैसे– जूट, कॉटन, चमड़ा, पेपर और रबर का स्थान लेता जा रहा है। अधिकांश प्लास्टिक पेट्रो रसायन खासकर तेल व प्राकृतिक गैस से बनाए जाते हैं, जो सस्ते होते हैं। प्लास्टिक उद्योग का काफी मशीनीकरण हो चुका है और उसमें मानव श्रम का इस्तेमाल कम से कम होता है इस वजह से भी प्लास्टिक सस्ता पड़ता है।

प्लास्टिक की समस्याएँ

इस चमत्कारिक पदार्थ के साथ अनेक समस्याएँ भी जुड़ी हुई हैं, खासकर इसके जहरीले प्रभाव और पर्यावरणीय खतरों को लेकर सर्वत्र चिंता जताई जा रही है।

ज़हरीले प्रभाव : विशुद्ध प्लास्टिक पानी में अघुलनशील और रसायनिक तौर पर अपेक्षाकृत निष्क्रिय होता है। इसलिए प्लास्टिक अपने शुद्ध रुप में कम जहरीला होता है। लेकिन हम विशुद्ध प्लास्टिक का बहुत कम इस्तेमाल करते हैं। मनचाहा प्लास्टिक हासिल करने के लिए उसमें विभिन्न तरह के ज़हरीले एडिटिव मिलाए जाते हैं। खाद्य पदार्थों, पानी आदि के प्लास्टिक के संपर्क में आने से ये ज़हरीले रसायन उसमें से बाहर आ सकते हैं। पीवीसी को लचीला बनाने के लिए उसमें जो रसायन मिलाए जाते हैं, उनके बारे में पाया गया कि वे हार्मोनल प्रक्रियाओं में बाधा पहुँचाते हैं और इस तरह कैंसर की आशंका पैदा करते हैं। शिशुओं की दूध की पारदर्शी बोतल जिस पॉलीकार्बोनेट से बनाई जाती है, उसमें बिस्फिनॉल–ए (बीपीए) होता है, जो हार्मोन में गड़बड़ियों के लिए जाना जाता है। इससे कैंसर, इंसुलिन में बाधा, जलन और दिल की बीमारियाँ हो सकती हैं। कुछ एडिटिव आनुवंशिकी क्षति भी पहुँचा सकते हैं।

दैनिक जीवन में प्लास्टिक के लगातार बढ़ते इस्तेमाल के कारण जहर का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। भारत जैसे देश में सस्ता प्लास्टिक, खासकर गरीब तबकों के बीच, तेजी से पैठ बनाता जा रहा है। साथ ही इसके गलत इस्तेमाल से भी स्वास्थ्य संबंधी बड़े खतरे पैदा हो रहे हैं। जागरुकता की कमी और प्लास्टिक के निस्तारण की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण कई बार प्लास्टिक को अन्य कूड़े–करकट के साथ जला दिया जाता है। प्लास्टिक को जलाने पर कार्बन मोनोऑक्साइड, डाइऑक्सीन और यूरॉन जैसी जहरीली गैसें हवा में फैल जाती हैं। डाईआक्सीन और यूरॉन से कैंसर व श्वास संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। इस तरह ये गैसें काफी खतरनाक होती हैं।

पर्यावरणीय खतरे : पर्यावरण के लिए प्लास्टिक लगातार घातक साबित हो रहा है। अधिकांश कृत्रिम प्लास्टिक जीवाश्म ईंधन से बनाया जाता है। जिन तकनीकों का इस्तेमाल इसमें किया जाता है, उसमें ऊर्जा की बहुत अधिक खपत होती है। एक अनुमान के अनुसार दुनिया में उत्पादित कुल कच्चे तेल में से 8 फीसदी का इस्तेमाल प्लास्टिक बनाने में किया जाता है। प्लास्टिक के निर्माण के दौरान भी बड़ी मात्रा में जहरीले रसायन उत्सर्जित होते हैं।

विश्व में प्लास्टिक की खपत करीब 20 करोड़ टन है और यह पाँच फीसदी की सालाना दर से बढ़ रही है। हर साल दुनिया भर में प्लास्टिक की 500 अरब थैलियों का इस्तेमाल किया जाता है और अंत में वे कचरे के ढेर में फेंक दी जाती हैं। वे नालियों और ड्रेनेज सिस्टम को अवरुद्ध करती हैं। इसी का नतीजा होता है कि बारिश में अनेक शहरों में बाढ़ जैसे नजारे देखने को मिलते हैं।

प्लास्टिक का जैव अपघटन नहीं होता और वह विघटन की प्राकृतिक प्रक्रिया का प्रतिरोधी होता है। इसलिए वह प्रकृति में हजारों–लाखों सालों तक ऐसे ही बना रहेगा। जब वह अपघटित होता भी है, तब अनेक जहरीले रसायन प्रकृति में छोड़ता है, जिससे हमारी ज़मीन, झीलें, नदियाँ प्रदूषित हो जाती हैं। यह ज़मीन के भीतर रिसकर भूमिगत पानी को भी खराब कर देता है।

समुद्र में पाई जाने वाली कम से कम 267 जीव प्रजातियों पर प्लास्टिक के कचरे का असर पड़ा है। प्लास्टिक अनेक पशुओं जैसे बकरियों, गायों, हिरणों की आँतों में भी पाया गया है और इस कारण वे बैमौत मारे भी जाते हैं। पानी में बहते, हवा में उड़ते और सूरज के ताप के असर से प्लास्टिक समय के साथ बहुत ही सूक्ष्म कणों में बँट जाता है। ये सूक्ष्म कण प्लवक और अन्य छोटे जीवों में पहुँच जाते हैं। इन्हें बड़े जीव निगल लेते हैं। ऐसे में निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि प्लास्टिक हमारी खाद्य श्रृंखला में शामिल होते जा रहे हैं जिसके बहुत ही घातक व दूरगामी परिणाम होंगे।

समस्या का समाधान

सबसे पहले तो हमें प्लास्टिक का अंधाधुंध इस्तेमाल बंद करना होगा। ऐसे कुछ क्षेत्र हैं, जहाँ प्लास्टिक वाकई बहुत जरुरी है। उदाहरण के लिए आधुनिक स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में जहाँ प्लास्टिक से डिस्पोजल सिरिंज, कैथेटर, कृत्रिम कॉर्निया, श्रवण यंत्र और कैप्स्यूल के आवरण बनाए जाते हैं। इनके लिए ऐसा कोई वैकल्पिक पदार्थ नहीं है, जो प्लास्टिक जितना ही सस्ता और प्रभावी हो। लेकिन ऐसे कई क्षेत्र हैं, जहाँ प्लास्टिक के इस्तेमाल को काफी हद तक कम किया जा सकता है। कुल खपत का 35 फीसदी प्लास्टिक पैकेजिंग उद्योग में इस्तेमाल किया जाता है। इसे काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। शैंपू के सैशे (छोटे पैकेट), दाल, चावल, बिस्कुट और अन्य पदार्थों की खुदरा पैकेजिंग में प्लास्टिक का बहुत इस्तेमाल होता है। इसे पूरी तरह से

टाला जा सकता है। इसके लिए हमें पारंपरिक पैकेजिंग सामग्री जैसे जूट, कपड़ा, कॉटन आदि को फिर से चलन में लाने की जरुरत है।

पौधों के अर्क से ऐसे प्लास्टिक के विकास पर काफी अनुसंधान किया जा रहा है, जो जैव–अपघटन योग्य हो। इस तरह के कुछ प्लास्टिक पहले से ही बाजार में उपलब्ध हैं। जैव–अपघटन योग्य प्लास्टिक मौजूदा कृत्रिम प्लास्टिक का अच्छा विकल्प हो सकता है हालाँकि अभी यह अपेक्षाकृत महँगा है। इसके अलावा प्लास्टिक का रिसाइक्लिंग भी एक विकल्प है। वर्तमान में हम हर साल जितना प्लास्टिक फेंक रहे हैं, उसका महज 10 फीसदी ही रिसाइकल हो पाता है। पेट्रो रसायनों के दामों में लगातार वृद्धि के चलते नए प्लास्टिक का उत्पादन महँगा होता जाएगा। ऐसे में भविष्य में प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग की बड़ी भूमिका होगी।

छँटाई और प्रक्रियागत जटिलताओं के कारण भी प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्लास्टिक में मिलाए जाने वाले एडिटिव और अन्य पदार्थों के साथ उनके मिश्रण के तरीकों के कारण भी कई बार वे रिसाइक्लिंग के लायक नहीं रहते हैं। उदाहरण के लिए पेय पदार्थों, दूध और तेल की पैकेजिंग में होने वाले टेट्रापैक में पतली पॉलीथीन के साथ पेपर बोर्ड का उपयोग किया जाता है। इससे उसका रिसाइक्लिंग मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा किसी प्लास्टिक को रिसाइकल करके उसी तरह का प्लास्टिक नहीं बनाया जा सकता। उदाहरण के लिए सॉफ्टड्रिंक की बोतल के प्लास्टिक को रिसाइकल करके प्लास्टिक की कुर्सियाँ ही बनाई जा सकती हैं, दुबारा बोतल नहीं बनाई जा सकती। और इससे भी बदतर, रिसाइकल किए गए प्लास्टिक से जो उत्पाद बनाए जाते हैं, उन्हें फिर से रिसाइकल नहीं किया जा सकता।

ऐसे में सबसे महत्त्वपूर्ण समाधान तो यह है कि हमें अपनी जीवन शैली में बदलाव लाना चाहिए। हमें प्लास्टिक का कम–से–कम इस्तेमाल करना चाहिए, वहीं करना चाहिए जहाँ वाकई इसके बगैर काम नहीं चल सकता। अगर हमारे पदार्थ कम दूरी तय करेंगे तो उनकी पैकेजिंग की जरुरत भी कम होगी। ऐसे में हमें स्थानीय स्तर पर उत्पन्न मौसमी पदार्थों का ही अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए, जिनके लिए पैकेजिंग की आवश्यकता कम रहेगी।

विश्व स्तर पर प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत 26 कि.ग्रा. सालाना है। प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत का सीधा संबंध प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय से है। जो देश जितना अधिक संपन्न है, वहाँ प्लास्टिक की खपत भी उतनी अधिक होती है। प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत उत्तरी अमेरीका में 90 कि.ग्रा., पश्चिमी यूरोप में 65 कि.ग्रा., चीन में 12 कि.ग्रा. और भारत में 5 कि.ग्रा. है। लेकिन भारत के संदर्भ में बुरी खबर यह है कि यहाँ खपत 15 फीसदी की दर से बढ़ रही है। इसलिए हमें प्लास्टिक के कम से कम इस्तेमाल और एक ही प्लास्टिक के दुबारा इस्तेमाल की ओर बढ़ना होगा।

आज ही करें शुरुआत

हम सभी व्यक्तिगत स्तर पर भी प्लास्टिक का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं। सबसे पहले हम इस बात पर विचार करें कि अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक का कितना उपयोग करते हैं। क्लास–रूम, स्कूल और घर में झाँके और चिह्नित करें कि कितनी चीजें प्लास्टिक से बनी हैं। इनमें से कितनी

चीजें हमारे भोजन या पेय पदार्थों से सीधे संपर्क में आती हैं? सोचें कि पिछली बार आपने बिस्कुट के जिस पैकेट को खोला था उसके रैपर का क्या किया? पिछले माह आपके परिवार ने कितने पॉलीथिन बैग्स का इस्तेमाल किया? पिछली यात्रा के दौरान आपने पानी की कितनी बोतलें खरीदीं? उन खाली बोतलों का क्या किया? आप जिस गद्दे पर सोते हैं वह किससे बना है? आप जो कपड़े पहनते हैं वे किस पदार्थ से बने हैं? क्या आप भोजन गर्म करने के लिए किसी प्लास्टिक के बर्तन का इस्तेमाल करते हैं?

इस तरह कहा जा सकता है कि प्लास्टिक हमारे पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है और हमारी सेहत पर इसका काफी नकारात्मक असर पड़ा है। प्लास्टिक से मुक्त दुनिया बनाने की दिशा में काम करने की महती जरूरत है। आइए, हम इस नजरिये के साथ शुरुआत करें कि अधिकांश मौकों पर प्लास्टिक के इस्तेमाल की कोई जरूरत नहीं है। एक बेहतर कल के लिए हम बेहतर आदत डालें।

शब्दार्थ

पट्टी – क्षेत्र विशेष; **क्रूर** – निर्दयी; **निष्ठुर** – कठोर हृदय; **जैव अपघटन** – स्वाभाविक रूप से सड़ना; **आनुवंशिकी** – जनन संबंधी; **निस्तारण** – निपटारा, निपटान।

अभ्यास

पाठ से

1. ''द ग्रेट पैसिफिक गार्बेज पैच'' क्या है? इसे आधुनिक सभ्यता का क्रूर प्रतीक क्यों माना जाता है?
2. प्लास्टिक आज हमारे दैनिक जीवन में इतना जरूरी और लोकप्रिय क्यों हो गया है?
3. 20 वीं सदी का सबसे चमत्कारिक पदार्थ आज आधुनिक सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। प्लास्टिक के बारे में यह कथन हमें क्या संकेत देता है?
4. लेखिका ने प्लास्टिक की समस्या से निपटने का सबसे उत्तम उपाय क्या बताया है?
5. विशुद्ध प्लास्टिक कम जहरीला क्यों होता है?
6. प्रति व्यक्ति प्लास्टिक खपत की दृष्टि से भारत की स्थिति चिंताजनक क्यों है?

पाठ से आगे

1. आज प्लास्टिक के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। आप बताएँ कि कब–कब हमारा प्लास्टिक के बिना काम चल सकता है और कब नहीं?
2. यदि प्लास्टिक का इस्तेमाल ही न करने दिया जाए तो आपको किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा?

3. प्लास्टिक के खतरों को देखते हुए यदि आपको प्लास्टिक के इस्तेमाल के बजाय कोई अन्य विकल्प सुझाने हों तो वे क्या होंगे?

D1ME8H

4. यदि प्लास्टिक के अंधाधुंध इस्तेमाल को नहीं रोका गया तो भविष्य में इंसान को इसके क्या दुष्परिणाम झेलने पड़ सकते हैं? अपने विचार लिखिए।
5. प्लास्टिक कचरे के सही निस्तारण के लिए आपके क्या सुझाव हैं?
6. इस पाठ के और क्या–क्या शीर्षक हो सकते हैं? चर्चा करके लिखिए।

भाषा के बारे में

1. इस पाठ में अनेक ऐसे शब्द आए हैं, जो शायद आपके लिए नए होंगे। बहुत से ऐसे शब्द भी हैं, जिन्हें आपने विज्ञान की किताबों में देखा होगा? ऐसे सभी शब्दों को पाठ से छाँटिए और इनके अर्थ भी पता कीजिए।
2. पाठ में अंग्रेजी भाषा के निम्नलिखित शब्द आए हैं। शब्दकोश में इसके अर्थ खोजिए।

   गार्बेज, रिसाइकल, वाटरप्रूफ, टेट्रापैक, पैकेजिंग, रैपर, एडिटिव, पीवीसी, ड्रेनेज सिस्टम

D1MAA5

3. इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए (शब्द सीमा लगभग 200)।
4. निम्नांकित अनुच्छेद महादेवी वर्मा द्वारा लिखित संस्मरण 'मेरे बचपन के दिन' से लिया गया है। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए और खाली छूटे स्थानों पर उचित सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कीजिए।

   बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र–सा आकर्षण होता है। कभी–कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं।

   अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर ––––– बाबा ने बहुत दुर्गा–पूजा की। ––––– कुल–देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

   मेरी माता जबलपुर से आईं तब ––––– अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा–पाठ भी बहुत करती थीं। पहले–पहल ––––– मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

   बाबा कहते थे, ––––– विदुषी बनाएँगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतंत्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। वे अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू–फ़रसी सीख लूँ, लेकिन ––––– मेरे वश की नहीं थी। ––––– जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन ––––– चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में ––––– विशेष रुचि थी।

योग्यता विस्तार

1. यहाँ भारत द्वारा 2012–13 में किए गए प्लास्टिक उत्पादों के निर्यात के आँकड़ों को निम्नांकित पाई चार्ट में दर्शाया गया है। आप इसे ध्यान से देखिए और बताइए।

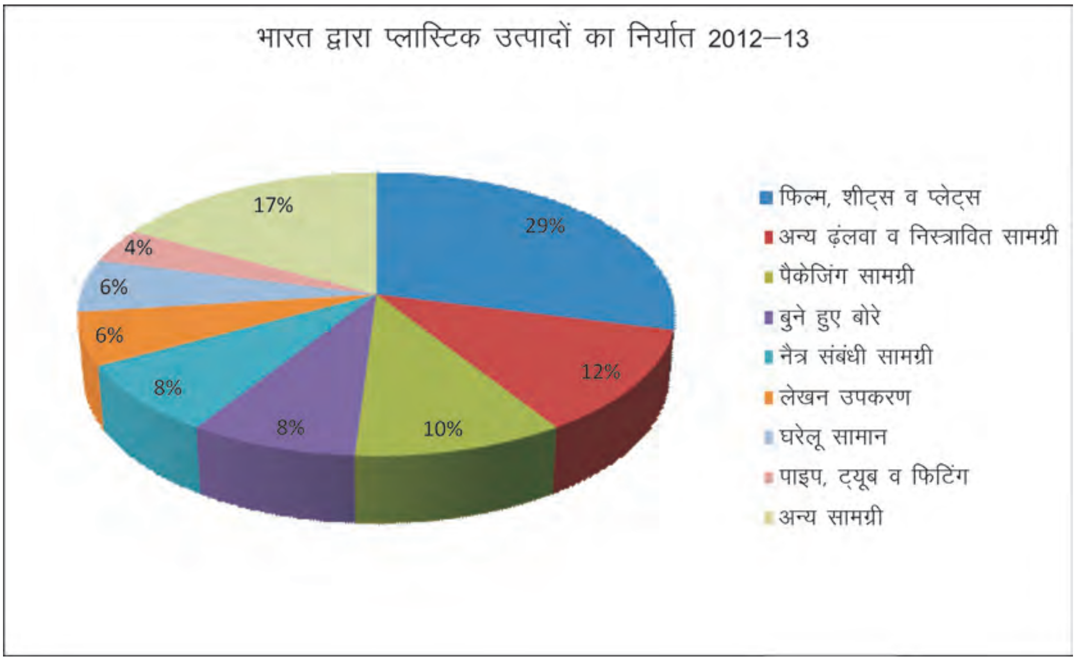

D266BS

(क) भारत ने सबसे अधिक प्लास्टिक की किस सामग्री का निर्यात किया है?

(ख) भारत ने सबसे कम प्लास्टिक की किस सामग्री का निर्यात किया है?

(ग) कौन से उत्पाद ऐसे हैं जो समान मात्रा में निर्यात किए गए?

(घ) कुल निर्यात का आधा निर्यात किन उत्पादों को मिलाकर होता है? यह काम आप आँकड़ों को जोड़े बिना केवल ग्राफ देखकर कीजिए।

2. विश्व पर्यावरण दिवस पर लोगों को प्लास्टिक के खतरों के प्रति जागरुक करने के लिए कुछ स्लोगन या एक लेख लिखिए।

3. जब प्लास्टिक नहीं था या सीमित था, तब माँ/दादी/दादा का इनके बिना काम कैसे चलता था? उनसे पूछकर लिखिए।

4. प्लास्टिक कचरा के निराकरण या पर्यावरणीय स्वच्छता से जुड़े समाचारों की कतरनों को एकत्र कर शाला की भित्ति पत्रिका में पढ़ने के लिए लगाइए।

पाठ 6.3 : विकसित भारत का स्वप्न

D2F2DF

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

*भारत रत्न **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम** भारतीय गणतंत्र के 11वें राष्ट्रपति रहे। डॉ. कलाम की मिसाइलमैन एवं पीपुल प्रेसिडेंट के रूप में पहचान रही है। बच्चों और युवाओं के अतिशय प्रिय डॉ. कलाम ने कई पुस्तकों का लेखन किया है जिनमें उनकी बहुचर्चित आत्मकथा– **अग्नि की उड़ान (विंग्स ऑफ फायर), इग्नाइटेड माइंड्स, इण्डिया 2020** चर्चित कृतियां रही हैं। प्रस्तुत लेख में डॉ. कलाम ने प्राचीन ज्ञानवान समाज से लेकर विकसित भारत के स्वरूप और चुनौतियों पर प्रकाश डाला है।*

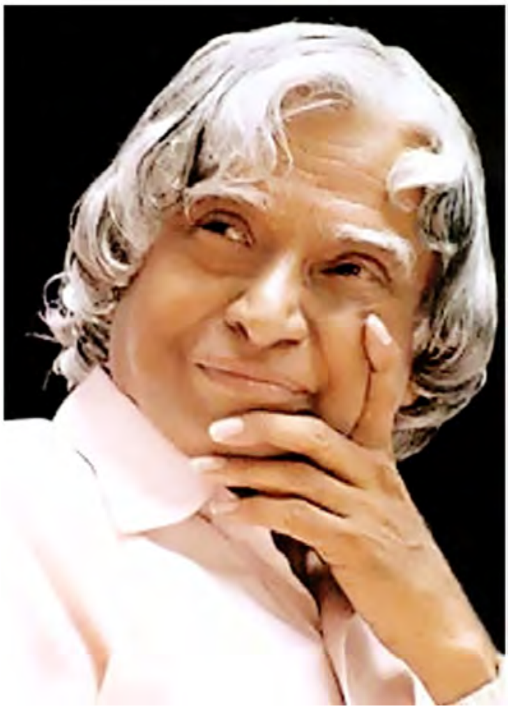

प्राचीन भारत एक ज्ञानवान समाज था। कालांतर में हमलों और औपनिवेशिक शासन ने इसकी संस्थाओं को नष्ट कर दिया तथा इसकी योग्यता को चौपट कर डाला। इसकी जनता का अस्तित्व निचले स्तरों तक सिमटकर रह गया। जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा तब तक हमारे युवाओं ने अपने लक्ष्य धूल–धुसरित कर लिए थे और वे साधारण जीवन से ही संतुष्ट हो जाया करते थे। भारत मूलतः ज्ञान की भूमि है और उसे अपने इस पहलू की नए सिरे से खोज करनी चाहिए। एक बार यह खोज कर ली गई तो जीवन की गुणवत्ता तथा विकसित राष्ट्र की ताकत और संप्रभुता को प्राप्त करने के लिए ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ेगा।

ज्ञान के कई रूप होते हैं और यह कई स्थानों पर उपलब्ध होता है। इसे शिक्षा, सूचना, बुद्धिमानी तथा अनुभव के जरिए प्राप्त किया जा सकता है। यह शैक्षिक संस्थानों में अध्यापकों के पास, पुस्तकालयों में, शोध पत्रों में, गोष्ठियों तथा विभिन्न संगठनों में और कार्यस्थलों में कर्मियों, प्रबंधकों, ड्राइंग, प्रक्रिया दस्तावेजों और यहां तक कि दुकानों तक में होता है। हालाँकि ज्ञान का शिक्षा से करीबी नाता है। लेकिन यह कलाकारों, दस्तकारों, हकीमों, वैद्यों, दार्शनिकों और संतों तथा यहां तक कि हमारी गृहणियों के पास मौजूद कौशलों से भी प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान इन सभी के प्रदर्शन तथा कार्य–उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारी विरासत और इतिहास, कर्मकांड, महाकांड और वे परंपराएं, जो हमारी चेतना का हिस्सा हैं, ये सब दरअसल, पुस्तकालयों तथा विश्वविद्यालयों की ही तरह ज्ञान के विशाल स्रोत हैं। हमारे गाँवों में

गैर–पुरातनपंथी और दुनियावी समझदारों की भरमार है। हमारे वातावरण में, महासागरों में, जैव–संरक्षण और रेगिस्तानों में तथा पेड़–पौधों और पशु–जीवन तक में ज्ञान भंडार छिपे हैं। हमारे देश के हर राज्य में ज्ञानवान् समाज के लिए उसकी अपनी अनूठी और अद्‌भुत क्षमता मौजूद है।

ज्ञान हमेशा से समृद्धि और ताकत का स्रोत रहा है। यही कारण है कि दुनिया भर में ज्ञान की प्राप्ति पर जोर दिया जाता रहा है। भारत में तो ज्ञान को आपस में बाँटने की संस्कृति रही है और इसके लिए गुरु–शिष्य परंपरा के अलावा पड़ोसी देशों से, नालंदा तथा ज्ञान के अन्य केंद्रों की ख्याति से प्रभावित होकर यहां आए यात्रियों के जरिए इसके प्रचार–प्रसार की भी परंपरा रही है। भारत कहीं–कहीं प्राकृतिक तथा प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टि से कई मायने में लाभ की स्थिति में है; लेकिन ऐसे क्षेत्र अलग–थलग हैं और उनके बारे में पर्याप्त जागरूकता भी नहीं है। पिछली शताब्दी के दौरान यह विश्व मानव श्रम–आधारित कृषि–समाज न रहकर औद्योगिक समाज बन गया, जिसमें प्रौद्योगिकी, पूंजी तथा श्रम का प्रबंध ही प्रतिस्पर्धात्मक लाभ दिला सकता है। इक्कीसवीं शताब्दी में एक नए समाज का उदय हो रहा है, जिसमें पूँजी और श्रम की बजाय ज्ञान ही प्राथमिक उत्पादन संसाधन है। पहले से मौजूद ज्ञान के इस आधार का कुशल इस्तेमाल हमारे लिए बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रगति के अन्य संकेतकों के रूप में पूँजी पैदा कर सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में हुई उन्नति का लाभ उठाते हुए कौशल और उत्पादकता को बढ़ाकर ज्ञान रूपी ढाँचागत तंत्र का निर्माण तथा उसका रख–रखाव ही इस समाज की समृद्धि बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। कोई देश ज्ञानवान् समाज की कसौटी पर खरा उतरता है या नहीं इसका पता इस प्रकार लगाया जा सकता है कि वह ज्ञान के सर्जन और उसके उचित इस्तेमाल के क्षेत्र में कैसा कार्य कर रहा है।

ज्ञानवान् समाज के दो महत्वपूर्ण अवयव सामाजिक बदलाव तथा धन निर्माण से प्रेरित होते हैं। सामाजिक बदलाव दरअसल, शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, कृषि और शासन के क्षेत्र में आते हैं। ये ही रोजगार सर्जन, उच्च उत्पादकता तथा ग्रामीण समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेंगे। देश के लिए धन निर्माण के कार्य को राष्ट्रीय क्षमताओं से जोड़कर देखा जाना चाहिए तभी विकसित भारत के मिशन को सफल बनाया जा सकता है और इसमें आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए युवकों के अदम्य साहस, संकल्पशक्ति और सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है। कोई राष्ट्र अपने नागरिकों की सोचने–समझने के तौर–तरीकों से महान बनता है। खासकर भारत की युवा पीढ़ी के सामने महान उद्‌देश्य होना चाहिए, छोटे–छोटे लक्ष्यों में अपने आप को सीमित कर लेना गुनाह जैसा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली छात्रों पर काम का बोझ बढ़ा रही है, किन्तु यह उन्हें सपने देखने से वंचित न करे। यह उन्हें ज्ञान प्राप्त करने के लिए बाधक न बने। कठिन परिश्रम और लगन जीवन में खूबसूरत पैगाम लाते हैं जो हमेशा आपको सहयोग देते रहेंगे।

सन् 1960 के दशक में हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम के दूरद्रष्टा वैज्ञानिक प्रो. विक्रम साराभाई ने एक ध्येय सामने रखा कि भारत को अपने संचार उपग्रह और दूर–संवेदी उपग्रहों की रूपरेखा तैयार कर उन्हें खुद विकसित करना चाहिए, और भारत के प्राकृतिक संसाधनों के आंकलन के लिए उन्हें भारतीय जमीन से ध्रुवीय कक्षाओं में प्रक्षेपित करना चाहिए। आज उनके सपने सच हो गए, आज भारत किसी भी प्रकार की अंतरिक्ष प्रणाली के निर्माण में सक्षम है।

विकसित भारत महज एक सपना नहीं, जब यह सपना सच हो जाएगा तो इसका सबसे अधिक लाभ युवाओं को होगा। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इस सपने को साकार करने में शुरू से ही युवा पीढ़ी को सहयोग करना चाहिए। उसे अपनी शैक्षिक और पारिवारिक सीमाओं में रहते हुए अपनी शोध यात्रा के अनुरूप बेहद अनोखे अंदाज में निभा सकते हैं। माता–पिता और बच्चों की टोली में यह चिंता उमड़ती–घुमड़ती रहती है कि पढ़ाई पूरी करने के बाद कौन सा रोजगार मिलेगा, छोटी–मोटी बाधाओं से घबराए बिना जिस विषय का अध्ययन करते हैं यदि उसमें आपका प्रदर्शन उत्कृष्ट बना रहता है, तो इसके कोई शक नहीं कि आपकी संभावना और भविष्य जगमगाते रहेंगे।

रोजगार के अवसरों की कोई कमी नहीं, किंतु जब कोई व्यक्ति बहुत ही खासम–खास चाहत रखता है और कहता है कि उसे सिर्फ सरकारी नौकरी चाहिए तो काफी दिक्कतें आती हैं। यदि आप उद्यमशीलता, डिजाइन, उद्योग, अपने नए विचारों के साथ कृषि कार्य करने, सूचना प्रौद्योगिकी उत्पाद बनाने के बारे में सोच सकते हैं तो युवा पीढ़ी के सामने अनंत संभावनाएं हैं। भावी युवा पीढ़ी के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे ज्ञान और शारीरिक सहयोग के हथियार का उपयोग करते हुए सभी क्षेत्रों में सहयोग करने का मन बना लें।

एक विकसित राष्ट्र का बहुत ही महत्वपूर्ण पैमाना है उसका साक्षर स्तर। सौ करोड़ लोगों को शिक्षित करना कोई खेल नहीं, यह लक्ष्य अपने सभी युवकों के सहयोग से ही प्राप्त किया जा सकता है, आप में से ऐसे बहुत से खुशनसीब हैं जो अच्छे स्कूल में पढ़कर स्तरीय शिक्षा ले रहे हैं किंतु बहुत से आपके भाई–बहनों को यह नसीब नहीं, खासकर जो आपके आस–पास के गाँवों में रहते हैं।

एक विकसित राष्ट्र की पहचान है कि उसमें अमीर–गरीब के भेद दृढ़तापूर्वक मिटा दिए जाएं। इसका एक तरीका यह है कि आपका स्कूल आपके पड़ोस के एक गाँव को अपना ले और अपने प्रत्येक छुट्टियों के दिन उस गाँव में जाए और कम से कम दो लोगों को साक्षर बनाने में सहयोग देकर ज्ञान का दीप जलाए। इसके साथ ही बच्चे अपने विद्यालय परिसर या घर में दस पौधे लगा सकते हैं। जो आज से कुछ सालों के बाद हम सभी हरे–भरे परिवेश में काम कर सकेंगे, जिससे हमारे अंदर सृजनात्मक सोच और सक्रियता पनपेगी। छात्र बुजुर्गों, बीमारों और विशेष आवश्यकता वाले लोगों की देखभाल कर सकते हैं। ऐसे भद्र व्यवहार से विकास के लिए अनुकूल और शांतिपूर्ण माहौल तैयार हो सकेगा तो निष्ठापूर्ण कार्य हो सकेंगे और शत–प्रतिशत सफलता मिलेगी। यहां पर मुझे संत तिरुवल्लुवर की वो पंक्तियां याद आती हैं जो उन्होंने तिरुक्कुरल में बड़ी सुंदरता से कहा है– "सफलता और धन अपना मार्ग ढूँढ़ लेते हैं और उस व्यक्ति तक पहुंच जाते हैं, जिसमें वह दृढ़ इच्छाशक्ति और योजनाबद्ध लगन होती है। नसीब उस इंसान तक खुद चलकर आ जाता है, जिसमें अदम्य उत्साह और कभी न पस्त होने वाली हिम्मत होती है।"

शब्दार्थ

औपनिवेशिक – उपनिवेश में रहने वाला; **अस्तित्व** – सत्ता, विद्यमान होना; **संप्रभुता** – सर्वप्रधान, जिसे संपूर्ण अधिकार प्राप्त हो, जैसे– राष्ट्र; **प्रतिस्पर्धा** – आगे बढ़ने की प्रवृत्ति; **तंत्र** – शासन प्रबंध, शासन की विशिष्ट प्रणाली; **सर्जन** – रचना, निर्माण; **गुनाह** – अपराध; **पैगाम** – संदेश; **मिशन** – उद्देश्य, कोई विशेष लक्ष्य अथवा ध्येय।

अभ्यास

पाठ से

1. ज्ञानवान समाज से लेखक का आशय क्या है?
2. लेखक के अनुसार ज्ञान के कई रूप हैं जिसे शिक्षा, सूचना, बुद्धिमानी तथा अनुभव के जरिए कहां–कहां से प्राप्त किया जा सकता है?
3. "भारत में ज्ञान बाँटने की संस्कृति रही है" का निहितार्थ क्या है?
4. ज्ञानवान समाज के दो महत्वपूर्ण अवयव कौन–कौन से हैं इस पर अपने विचार रखें।
5. विकसित भारत के मिशन में आई चुनौतियों का किस तरह से सामना किया जा सकता है?
6. आशय स्पष्ट कीजिए– "विकसित भारत महज एक सपना नहीं है।"
7. "सफलता और धन अपना मार्ग ढूँढ़ लेते हैं" संत तिरुवल्लुवर के इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. लेखक ने हमारे गाँवों में कई तरह के ज्ञान के भण्डारों की चर्चा की है? आपको अपने गाँव के लोगों में ऐसे किस तरह के ज्ञान की जानकारी मिलती है?
2. प्राचीन भारतीय समाज में किस प्रकार के ज्ञान और कौशल उपलब्ध थे उनकी सूची बनाइए एवं उस पर अपने साथियों से चर्चा कीजिए।
3. अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर एक आलेख तैयार कीजिए।
4. विकसित भारत के सम्बंध में डॉ. कलाम के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

D2NXF3

भाषा के बारे में

1. वर्तनी शुद्ध कर लिखिए –

   (1) विकसीत, (2) मुलतः, (3) बुद्धी, (4) दूकान, (5) प्राक्रतिक,

   (6) ओधोगिक, (7) परयाप्त, (8) स्तेमाल, (9) प्रतिर्स्पधात्मक, (10) ऊत्पादन।

D2XTGQ

2. संधि विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए–

   पुस्तकालय – पुस्तक + आलय – दीर्घ स्वर संधि

   विद्यालय, महर्षि, यद्यपि, अन्वय, रामायण, महेन्द्र, तथैव, परमेश्वर, पावन, पवन

3. निम्नांकित शब्दों का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए–

   (1) योजनाबद्ध, (2) उमड़ती–घुमड़ती, (3) माता–पिता

   (4) श्रम–आधारित, (5) आपदा–प्रबंधन

4. जब दो अलग–अलग वाक्य को जोड़कर एक संयुक्त वाक्य बनाना हो तो हम क्योंकि, चूँकि, इसलिए, बल्कि इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते हैं।

   जैसे– (क) उसका गृह–कार्य अधूरा था।

   (ख) उसे शिक्षक की डाँट खानी पड़ी।

   संयुक्त वाक्य – उसका गृह–कार्य अधूरा था इसलिए उसे शिक्षक की डाँट खानी पड़ी।

   इस तरह के योजक शब्दों की सहायता से निम्नांकित दो वाक्य के समूह को क्रम की उचित अदला–बदली के साथ संयुक्त वाक्य में बदलिए–

   (क) (i) बारिश हो रही थी।

   (ii) वे नहीं आ सके।

   (ख) (i) वस्तुएँ महँगी थीं।

   (ii) वे नहीं खरीद सके।

(ग) (i) भोजन हमेशा संतुलित मात्रा में करना लाभदायक होता है।

(ii) ज्यादा मात्रा में भोजन करना रोगों को दावत देना है।

(घ) (i) वह डर गया था।

(ii) वह बोल नहीं पा रहा था।

(ङ) (i) सामान बहुत वजनी था।

(ii) वह उठा नहीं पा रहा था।

5. पाठ में से सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य व मिश्र वाक्यों के तीन–तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. डॉ. कलाम के विद्यार्थी जीवन के बारे में पता कर एक लेख तैयार कीजिए।
2. छत्तीसगढ़ में डॉ. कलाम का आगमन हुआ था। उस समय उनके द्वारा छत्तीसगढ़ पर एक कविता लिखी गई थी, इसे खोजकर लिखिए।

D37PID

इकाई 7 : विविध

पाठ 7.1 : पद

पाठ 7.2 : आ रही रवि की सवारी

पाठ 7.3 : अख़बार में नाम

पाठ 7.4 : अपने हिस्से में लोग आकाश देखते हैं

इकाई 7

विविध

इकाई एक से छः तक आपने विशिष्ट विषयों पर आधारित रचनाओं का अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई–सात में शामिल रचनाएँ विषय, विधा और भाव की दृष्टि से विविधतापूर्ण हैं।

इसके अंतर्गत जहाँ एक ओर कबीर, सूर, तुलसी और धनी धरमदास जैसे मध्ययुगीन (भक्तिकालीन) कवियों के **पद** दिए गए हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक कवि हरिवंश राय बच्चन की कविता **आ रही रवि की सवारी** एवं विनोद कुमार शुक्ल की कविता **अपने हिस्से में लोग आकाश देखते हैं** सम्मिलित की गई हैं। दो भिन्न युगों के पद्य में आपको अत्यंत भिन्नता दिखाई देगी। ये भिन्नताएँ भाषा, भाव, छंद और उद्देश्यों में मिलेंगी। भक्तिकाल की कविताओं का मुख्य भाव किसी–न–किसी रूप में ईश्वर की आराधना तथा आचार की पवित्रता है। सगुण भक्त कवि सूर और तुलसी राम और कृष्ण दोनों को ईश्वर के रूप में देखते हैं, इसके समानांतर निर्गुण भक्तिधारा के कवि कबीर और धनी धरमदास ईश्वर को निराकार रूप में मानते हैं।

आधुनिक युग के कवि बच्चन ने प्रकृति का मोहक वर्णन किया है और प्रातःकालीन दृश्य को जीवंत कर दिया है। **शुक्ल** की कविता पूरी तरह छंदमुक्त व आंतरिक लय से युक्त हैं तथा वर्तमान में मानव–जीवन में व्याप्त अभाव, चिंता, संघर्ष और अन्याय को व्यक्त करती है।

प्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार यशपाल की कहानी **अख़बार में नाम** को भी इस इकाई में शामिल किया गया है। इसमें कथ्य की नवीनता और रोचकता है। प्रचार–प्रसार में अखबार की भूमिका तथा उसमें स्थान पाने की लालसा को यह कहानी विशेष रूप से उभारती है।

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक आस्वाद की मिली–जुली रचनाएँ एक साथ उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसका उद्देश्य साहित्यिक अध्ययन में तुलनात्मक एवं तार्किक क्षमता को विकसित करना है।

पाठ 7.1 : पद

D3GKK1

यहाँ हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के चार कवियों के पदों को संकलित किया गया है। इनमें तुलसी व सूर सगुण भक्ति काव्यधारा से हैं, तो कबीर व धरमदास निर्गुण काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तुलसीदास अवधी भाषा के अप्रतिम कवि हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में रामकथा को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया है। उनकी प्रमुख रचनाएँ **रामचरितमानस, दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका** इत्यादि हैं। यहाँ दिया हुआ पद विनयपत्रिका से लिया गया है। **सूरदास** ब्रज भाषा के कवि हैं। **सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी** आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उनके द्वारा लिखे गए श्रीकृष्ण के बाल–वर्णन ब्रज भाषा ही नहीं समूचे भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। **कबीर** मध्यकाल के अकेले कवि हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में कई देशज भाषाओं का प्रयोग किया हैं। उनकी कविताएँ मुख्यतः **साखी, सबद** और **रमैनी बीजक** में संकलित हैं, जिसमें साखी दोहा रूप में और सबद व रमैनी पद रूप में हैं। उनकी कविता अपने समय में ही नहीं, आज भी प्रासंगिक हैं। **धनी धरमदास** का जन्म 1433 में छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में हुआ था। वे कबीर के शिष्य थे और कबीर की विचारधारा को आगे बढ़ाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी रचनाएँ बाद में धरमदास की बानी के रूप में प्रकाशित हुईं।

तुलसीदास

मन पछितैहैं अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम, बचन अरु ही ते।।
सहसबाहु, दसवदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम–हम करि धन–धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते।।
सुत–बनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते।
अंतहु तोहि तजेंगे पामर! तू न तजै अबही ते।।
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते।
बुझै न काम–अगिनि तुलसी कहुँ, बिषयभोग बहु घी ते।।

– विनय पत्रिका

सूरदास

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी
कटि कछनी पीतांबर बाँधे हाथ लए भौंरा चक डोरी
गए स्याम रवि तनया के तट, अंग लसति चंदन की खोरी
औचक ही देखीं तहँ राधा, नैन बिसाल भाल दिए रोरी
नील बसन फरिया कटि पहिरै, बेनि पीठि रुलति झकझोरी,
संग लरिकिनी चलि इति आवति, दिन थोरी अति छवितन गोरी,
सूरस्याम देखत ही रीझैं, नैन–नैन मिल परी ठगोरी।।

– सूरसागर

कबीर

साधो, देखो जग बौराना।
साँची कही तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।
हिन्दू कहत, राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ै मरत हैं, मरम कोई नहिं जाना।
बहुत मिले मोहि नेमी, धर्मी, प्रात करे असनाना।
आतम–छाँडि पषानै पूजै, तिनका थोथा ज्ञाना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीपर–पाथर पूजन लागे, तीरथ–बरत भुलाना।
माला पहिरे, टोपी पहिरे छाप–तिलक अनुमाना।
साखी सब्दै गावत भूले, आतम खबर न जाना।

– सबद

धनी धरमदास

हम सत्त नाम के बैपारी।
कोइ–कोइ लादै काँसा पीतल, कोइ–कोइ लौंग सुपारी।।
हम तो लाद्यो नाम धनी को, पूरन खेप हमारी।।
पूँजी न टूटै नफा चौगुना, बनिज किया हम भारी।।
हाट जगाती रोक न सकिहै, निर्भय गैल हमारी।।
मोती बूँद घटहिं में उपजै, सुकिरत भरत कोठारी।।
नाम पदारथ लाद चला है, धरमदास बैपारी।।

– धरमदास की बानी

शब्दार्थ

ही ते – हिय ते अर्थात हृदय से; **रीते** – खाली हाथ; **पामर** – पापी, दुर्जन; **दुरासा** – बुरी आशा; **खोरी** – गली; **चंदन की खोरी** – चंदन का टीका; **नेमी** – नियम का पालन करने वाला; **पीतांबर** – पीले रंग का कपड़ा; **रवि तनया** – सूर्य की पुत्री अर्थात यमुना; **बौराना** – पागल होना; **पतियाना** – विश्वास कर लेना; **डिंभ** – गर्भ, यहाँ पर पाखंड या आडंबर से है; **गुमाना** – घमण्ड करना; **बैपारी** – व्यापारी; **लाद्यो** – लाद लिया है; **बनिज** – व्यापार; **जगाती** – चौकीदार; **गैल** – रास्ता; **दसबदन** – रावण; **सहसबाहु** – हैहयवंश का एक बलशाली राजा।

अभ्यास

पाठ से

1. अवसर बीत जाने के पश्चात् पछताना क्यों पड़ता है? पद में दिए गए उदाहरणों के भाव लिखिए।
2. 'अंत चले उठि रीते' पंक्ति का भावार्थ क्या है?
3. 'सूरस्याम देखते ही रीझें, नैन–नैन मिली ठगोरी' से कवि का क्या आशय है?
4. कबीर के पद में जग के बौराने का क्या अभिप्राय है?
5. 'मरम' से कबीर का क्या आशय है?
6. कबीर ने किसके ज्ञान को थोथा कहा है? और क्यों?
7. धनी धरमदास के पद में सत्य–व्यापार की बात की गई है। सत्य–व्यापार से कवि का क्या आशय है?
8. 'पूँजी न टूटै नफा चौगुना' से क्या अभिप्राय है?

पाठ से आगे

D3QGLN

1. अवसर निकल जाने पर पछतावा होता है। जीवन में अवसर को कैसे पहचाना जाए?
2. अत्यधिक संग्रह की प्रवृत्ति सुखकर क्यों नहीं हो सकती है? अगर नहीं तो क्यों? अपने विचार लिखिए।
3. (क) 'औचक ही देखीं तहँ राधा' इस पंक्ति में औचक देखने से क्या आशय है?

   (ख) आप किसी परिचित को अचानक अपने सामने पाते हैं, तो आपके मन में क्या–क्या भाव आते हैं?
4. आपके अनुसार व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार कैसा होना चाहिए?
5. पद में किशोर कृष्ण और राधा के मिलने का वर्णन ब्रज भाषा में दिया है। आप इसे अपनी भाषा में लिखिए।

भाषा के बारे में

D3ZCNB

1. जहाँ एक ही ध्वनि की आवृत्ति होती है उसे अनुप्रास अलंकार कहा जाता है। जैसे– पीपर पाथर पूजन लागे (यहाँ 'प' ध्वनि की एक से अधिक बार आवृत्ति हो रही है) इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ पाठ से छाँट कर लिखिए।
2. आपके घर की भाषा और इन पदों की भाषा में किस तरह का अंतर व समानता है? इस पाठ में बहुत से शब्द होंगे, जो आपके घर की भाषा में भी थोड़े फेर बदल के साथ प्रचलित होंगे। उन शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. अपने घर परिवार और बड़े बूढ़ों से पता कीजिए कि कबीर के कौन–कौन से भजन गाए जाते हैं, अपने दोस्तों के साथ मिलकर उनका एक संकलन तैयार कीजिए।
2. ब्रज, अवधि एवं छत्तीसगढ़ी के अन्य भक्तिकालीन कवियों की रचनाएँ ढूँढ़कर पढ़िए।
3. नीचे कबीर के कुछ दोहे दिए गए हैं इन्हें भी पढ़िए। अर्थ के बारे में साथियों से चर्चा कीजिए।

DFDL4V

तिनका कबहुँ न नींदिये, जो पाँयन तर होय।
कबहुँ उड़ आँखिन परे, पीर घनेरी होय।। 1।।

रात गँवाई सोय के, दिवस गँवाया खाय ।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय।। 2 ।।

माँगन मरण समान है, मति माँगो कोई भीख ।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख।। 3 ।।

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की श्वास से, लौह भस्म हो जाय।। 4 ।।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा–परजा जेहि रुचै, शीश देई ले जाय।। 5 ।।

शब्दार्थ

निंदिये – निन्दा करना या बुरा भला कहना; **पीर** – दर्द; **बाड़ी** – सब्जी की बगिया।

पाठ 7.2 : आ रही रवि की सवारी

हरिवंश राय बच्चन

DFHH6I

*हिंदी के लोकप्रिय कवि **हरिवंश राय बच्चन** का जन्म सन् 1907 ई. में इलाहाबाद में हुआ था। बच्चन को हालावाद का प्रवर्तक कहा जाता है। उन्होंने अपनी सुदीर्घ साहित्यिक यात्रा में कई महत्त्वपूर्ण रचनाएँ की। **मधुशाला** उनकी सर्वाधिक चर्चित रचना है। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य रचनाएँ **मधुबाला, मधुकलश, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, निशा निमंत्रण, दो चट्टानें** हैं। **दो चट्टानें** के लिए उन्हें सन् 1968 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। सन् 2003 में 96 वर्ष की अवस्था में उनका निधन हो गया।*

आ रही रवि की सवारी।

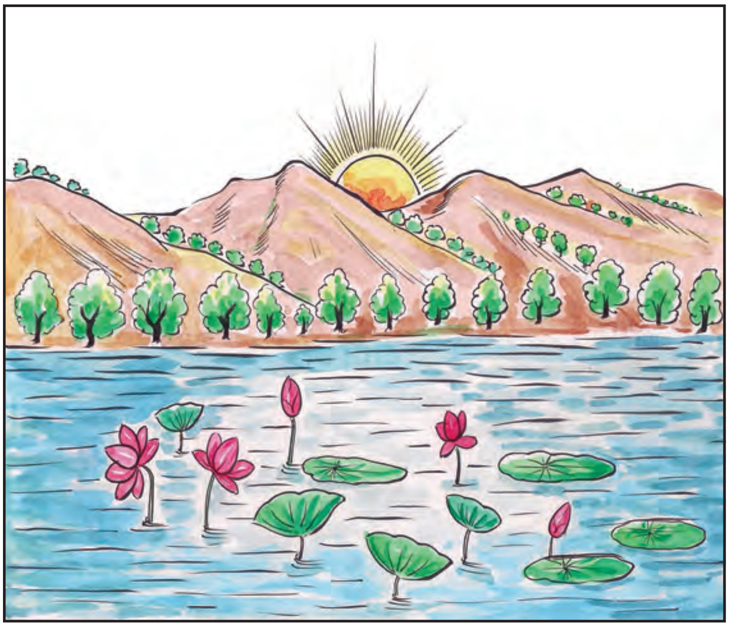

नव–किरण का रथ सजा है,
कलि–कुसुम से पथ सजा है,
बादलों–से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।
आ रही रवि की सवारी।

विहग, बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति–गायन,
छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फौज सारी।
आ रही रवि की सवारी।

चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह–
रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी।
आ रही रवि की सवारी।

शब्दार्थ

अनुचर – सेवक; **बंदी और चारण** – पुराने समय में राजा के यश गाने वाले; **विहग** – पंछी।

अभ्यास

पाठ से

1. 'बादलों–से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी' पंक्ति का क्या आशय है?
2. रात का राजा किसे कहा गया है और वह भिखारी बनकर क्यों खड़ा है?
3. रवि की सवारी आने पर क्या–क्या हो रहा है? उसे अपनी भाषा में लिखिए।
4. ''चाहता, उछलूँ विजय कह,

   पर ठिठकता देखकर यह–

   रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी।''

   उपर्युक्त पंक्तियों को कुछ इस प्रकार भी लिखा जा सकता है–

   ''मैं चाहता हूँ कि विजय कहकर उछल पडू, लेकिन यह देखकर ठिठक जाता हूँ कि रात का राजा (चंद्रमा) राह में भिखारी बन कर खड़ा हुआ है।''

   इसी प्रकार आप अपनी भाषा में नीचे दी गई पंक्तियों को लिखिए।

   ''विहग, बंदी और चारण,

   गा रहे हैं कीर्ति–गायन,

   छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फौज सारी।''

पाठ से आगे

1. तारों को फौज, पक्षियों को चारण और चाँद को रात का राजा कहकर संबोधित किया गया है। इसी तरह इन्हें आप क्या कहेंगे?कल्पना कर लिखिए।

   जंगल के पेड़ों को ....

   फूलों के बगीचे को ....

   बगुलों की कतार को ....

   सूरज को ....

   धूप को ....

   चाँदनी को ....

DFWD86

भाषा के बारे में

1. (क) कलि–कुसुम, कीर्ति–गायन में दो शब्दों के बीच '–' का चिह्न लगा है। इस तरह के पदों को सामासिक पद कहते हैं। इनमें बीच के कुछ शब्दों का लोप होता है और उनके स्थान पर इस (–) चिह्न का उपयोग किया जाता है। इसे सामासिक चिह्न (योजक चिह्न) भी कहा जाता है।

   उदाहरण– कीर्ति–गायन – कीर्ति का गायन

   माता–पिता – माता और पिता

   DG699T

   (ख) इसी तरह के और भी सामासिक पद खोजकर लिखिए।

2. कविता से उन पंक्तियों को छाँट कर लिखिए जिनमें मानवीकरण किया गया है?

   जैसे– विहग, बंदी और चारण, गा रहे हैं कीर्ति–गायन।

योग्यता विस्तार

DGF5BG

1. इस कविता की एक धुन बनाइए और समूह गीत के रूप में अपने दोस्तों के साथ गाइए।
2. कविता में सूर्योदय का वर्णन किया गया है। इसी तरह आप सूर्यास्त का वर्णन कीजिए।
3. हरिवंश राय बच्चन की अन्य रचनाएँ अपनी पुस्तकालय से लेकर पढ़िए और उन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

पाठ 7.3 : अखबार में नाम

DGP1D4

यशपाल

*हिंदी के यशस्वी कथाकार और उपन्यासकार **यशपाल** का जन्म 03 दिसम्बर सन् 1903 को फिरोजपुर छावनी (पंजाब) में हुआ था। वे स्वतंत्रता आन्दोलन के सिपाही भी थे। शहीद भगतसिंह और सुखदेव के संपर्क में आने के बाद क्रांतिकारी आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुए थे। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान वे कई बार जेल भी गए। उन्होंने **विप्लव** नाम की एक पत्रिका निकाली। उनकी अनेक रचनाओं का दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। यशपाल की प्रमुख कृतियाँ **दादा कामरेड, दिव्या, झूठासच** (उपन्यास) **ज्ञानदान, धर्मयुद्ध, तर्क का तूफान** (कहानी संग्रह) तथा **न्याय का संघर्ष, बात–बात में बात, देखा सोचा समझा** (निबंध संग्रह) हैं। उनका निधन 26 दिसम्बर सन् 1976 को हुआ।*

जून का महीना था, दोपहर का समय और धूप कड़ी थी। ड्रिल–मास्टर साहब ड्रिल करा रहे थे।

मास्टर साहब ने लड़कों को एक लाइन में खड़े होकर डबल मार्च करने का आर्डर दिया। लड़कों की लाइन ने मैदान का एक चक्कर पूरा कर दूसरा आरंभ किया था कि अनंतराम गिर पड़ा।

मास्टर साहब ने पुकारा, 'हाल्ट!'

लड़के लाइन से बिखर गए।

मास्टर साहब और दो लड़कों ने मिलकर अनंत को उठाया और बरामदे में ले गए। मास्टर साहब ने एक लड़के को दौड़कर पानी लाने का हुक्म दिया। दो–तीन लड़के स्कूल की कापियाँ लेकर अनंत को हवा करने लगे। अनंत के मुँह पर पानी के छींटे मारे गए। उसे होश आते–आते हेडमास्टर साहब भी आ गए और अनंतराम के सिर पर हाथ फेरकर, पुचकारकर उन्होंने उसे तसल्ली दी।

स्कूल का चपरासी एक ताँगा ले आया। दो लड़कों के साथ ड्रिल मास्टर अनंतराम को उसके घर पहुँचाने गए। स्कूल–भर में अनंतराम के बेहोश हो जाने की खबर फैल गई। स्कूल में सब उसे जान गए।

लड़कों के धूप में दौड़ते समय गुरदास लाइन में अनंतराम से दो लड़कों के बाद था। यह घटना और कांड हो जाने के बाद वह सोचता रहा, 'अगर अनंतराम की जगह वही बेहोश होकर गिर पड़ता, वैसे ही उसे चोट आ जाती तो कितना अच्छा होता?' आह भरकर उसने सोचा, 'सब लोग उसे जान जाते और उसकी खातिर होती।'

श्रेणी में भी गुरदास की कुछ ऐसी ही हालत थी। गणित के मास्टर साहब सवाल लिखाकर बेंचों के बीच में घूमते हुए नजर डालते रहते थे कि कोई लड़का नकल या कोई दूसरी बेजा हरकत तो नहीं कर रहा। लड़कों

के मन में यह होड़ चल रही होती कि सबसे पहले सवाल पूरा करके कौन खड़ा हो जाता है।

गुरदास बड़े यत्न से अपना मस्तिष्क कॉपी में गड़ा देता। उँगलियों पर गुणा और योग करके उत्तर तक पहुँच ही रहा होता कि बनवारी सवाल पूरा करके खड़ा हो जाता। गुरदास का उत्साह भंग हो जाता और दो–तीन पल की देर यों भी हो जाती। कभी–कभी सबसे पहले सवाल कर सकने की उलझन के कारण कहीं भूल भी हो जाती। मास्टर साहब शाबाशी देते तो बनवारी और खन्ना को और डाँटते तो खलीक और महेश का ही नाम लेकर। महेश और खलीक न केवल कभी सवाल पूरा करने की चिंता करते, बल्कि उसके लिए लज्जित भी न होते।

नाम जब कभी लिया जाता तो बनवारी, खन्ना, खलीक और महेश का ही, गुरदास बेचारे का कभी नहीं। ऐसी ही हालत व्याकरण और अंग्रेजी की क्लास में भी होती। कुछ लड़के पढ़ाई–लिखाई में बहुत तेज होने की प्रशंसा पाते और कोई डाँट–डपट के प्रति निर्द्वंद्व होने के कारण बेंच पर खड़े कर दिए जाने से लोगों की नजर में चढ़कर नाम कमा लेते। गुरदास बेचारा दोनों तरफ से बीच में रह जाता।

इतिहास में गुरदास की विशेष रुचि थी। शेरशाह सूरी और खिलजी की चढ़ाइयों और अकबर के शासन के वर्णन उसके मस्तिष्क में सचित्र होकर चक्कर काटते रहते, वैसे ही शिवाजी के अनेक किले जीतने के वर्णन भी। वह अपनी कल्पना में अपने–आपको शिवाजी की तरह ऊँची, नोंकदार पगड़ी पहने, छोटी दाढ़ी रखे और वैसा ही चोगा पहने, तलवार लिए सेना के आगे घोड़े पर सरपट दौड़ता चला जाता देखता।

इतिहास को यों मनस्थ कर लेने या इतिहास में स्वयं समा जाने पर भी गुरदास को इन महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तारीखें और सन् याद न रहते थे क्योंकि गुरदास के काल्पनिक ऐतिहासिक चित्रों में तारीखों और सनों का कोई स्थान न था। परिणाम यह होता कि इतिहास की क्लास में भी गुरदास को शाबाशी मिलने या उसके नाम पुकारे जाने का समय न आता।

सबके सामने अपना नाम पुकारा जाता सुनने की गुरदास की महत्वाकांक्षा उसके छोटे–से हृदय में इतिहास के अतीत के बोझ के नीचे दबकर सिसकती रह जाती। तिस पर इतिहास के मास्टर साहब का प्रायः कहते रहना कि दुनिया में लाखों लोग मरते जाते हैं परंतु जीवन वास्तव में उन्हीं लोगों का होता है, जो मरकर भी अपना नाम जिंदा छोड़ जाते हैं, गुरदास के सिसकते हृदय को एक और चोट पहुँचा देता।

गुरदास अपने माता–पिता की संतानों में तीन बहनों का अकेला भाई था। उसकी माँ उसे राजा बेटा कहकर पुकारती थी। स्वयं पिता रेलवे के दफ्तर में साधारण क्लर्की करते थे। कभी कह देते कि उनका पुत्र ही उनका और अपना नाम कर जाएगा। ख्याति और नाम की कमाई के लिए इस प्रकार निरंतर दी जाती रहने वाली उत्तेजनाओं के बावजूद गुरदास श्रेणी और समाज में अपने–आप को किसी अनाज की बोरी के करोड़ों एक ही से दानों में से एक साधारण दाने से अधिक अनुभव न कर पाता था।

ऐसा दाना कि बोरी को उठाते समय वह गिर जाए, तो कोई ध्यान नहीं देता। ऐसे समय उसकी नित्य कुचली जाती महत्त्वाकांक्षा चीख उठती कि बोरी के छेद से सड़क पर उसके गिर जाने की घटना ही ऐसी क्यों न हो जाए कि दुनिया जान ले कि वह वास्तव में कितना बड़ा आदमी है और उसका नाम मोटे अक्षरों में अखबारों

में छप जाए। गुरदास कल्पना करने लगता कि वह मर गया है परंतु अखबारों में मोटे अक्षरों में छपे अपने नाम को देखकर, मृत्यु के प्रति विद्रूप से मुस्करा रहा है, मृत्यु उसे समाप्त न कर सकी।

आयु बढ़ने के साथ–साथ गुरदास की नाम कमाने की महत्वाकाँक्षा उग्र होती जा रही थी, परंतु उस स्वप्न की पूर्ति की आशा उतनी ही दूर भागती जान पड़ रही थी। बहुत बड़ी–बड़ी कल्पनाओं के बावजूद वह अपने पिता पर कृपा–दृष्टि रखनेवाले एक बड़े साहब की कृपा से दफ्तर में केवल क्लर्क ही बन पाया।

जिन दिनों गुरदास अपने मन को समझाकर यह संतोष दे रहा था कि उसके मुहल्ले के हजार से अधिक लोगों में से किसी का भी तो नाम कभी अखबार में नहीं छपा, तभी उसके मुहल्ले के एक निःसन्तान लाला ने अपनी आयु भर का संचित गुप्तधन प्रकट करके अपने नाम से एक स्कूल स्थापित करने की घोषणा कर दी।

लालाजी का अखबार में केवल नाम ही प्रशंसा–सहित नहीं छपा, उनका चित्र भी छपा। गुरदास आह भरकर रह गया। साथ ही अखबार में नाम छपवाकर, नाम कमाने की आशा बुझती हुई चिनगारियों पर राख की एक और तह पड़ गई। गुरदास ने मन को समझाया कि इतना धन और यश तो केवल पूर्वजन्म के कर्मों के फल से ही पाया जा सकता है। इस जन्म में तो ऐसे अवसर और साधन की कोई आशा उस जैसों के लिए हो ही नहीं सकती थी।

उस साल वसंत के आरंभ में शहर में प्लेग फूट निकला था। दुर्भाग्य से गुरदास के गरीब मुहल्ले में गलियाँ कच्ची और तंग होने के कारण, बीमारी का पहला शिकार, उसी मुहल्ले में दुलारे नाम का व्यक्ति हुआ।

मुहल्ले की गली के मुहाने पर रहमान साहब का मकान था। रहमान साहब ने आत्मरक्षा और मुहल्ले की रक्षा के विचार से छूत की बीमारी के हस्पताल को फोन करके एम्बुलेंस गाड़ी मँगवा दी। बहुत लोग इकट्ठे हो गए। दुलारे को स्ट्रेचर पर उठाकर मोटर पर रखा गया और हस्पताल पहुँचा दिया गया। म्युनिसिपैलिटी ने उसके घर की बहुत जोर से सफाई की। मुहल्ले के हर घर में दुलारे की चर्चा होती रही।

गुरदास संध्या समय थका–माँदा और झुँझलाया हुआ दफ्तर से लौट रहा था। भीड़ में से अखबारवाले ने पुकारा, 'आज शाम का ताजा अखबार। नाहर मुहल्ले में प्लेग फूट निकला। आज की खबरें पढ़िए।'

अखबार में अपने मुहल्ले का नाम छपने की बात से गुरदास सिहर उठा। उसका मस्तिष्क चमक गया। ओह, दुलारे की खबर छपी होगी। अखबार प्रायः वह नहीं खरीदता था, परंतु अपने मुहल्ले की खबर छपी होने के कारण उसने चार पैसे खर्च कर अखबार ले लिया। सचमुच दुलारे की खबर पहले पृष्ठ पर ही थी। लिखा था, 'बीमारी की रोकथाम के लिए सावधान।' और फिर दुलारे का नाम और उसकी खबर ही नहीं, स्ट्रेचर पर लेटे हुए, घबराहट में मुँह खोले हुए दुलारे की तस्वीर भी थी।

गुरदास ने पढ़ा कि बीमारी का इलाज देर से आरम्भ होने के कारण दुलारे की अवस्था चिंताजनक है। पढ़कर दुख हुआ। फिर ख्याल आया इस आदमी का नाम अखबार में छप जाने की क्या आशा थी? पर छप ही गया।

अपना–अपना भाग्य है, एक गहरी साँस लेकर गुरदास ने सोचा। दुलारे की अवस्था चिंताजनक होने की बात से दुख भी हुआ। फिर ख्याल आया देखो, मरते–मरते नाम कर ही गया। मरते तो सभी हैं पर यह बीमारी की मौत फिर भी अच्छी! ख्याल आया, कहीं बीमारी मुझे भी न हो जाए। भय तो लगा पर यह भी ख्याल आया कि नाम तो जिसका छपना था, छप गया। अब सबका नाम थोड़े ही छप सकता है।

खैर, दुलारे अगर बच न पाया तो अखबार में नाम छप जाने का फायदा उसे क्या हुआ? मजा तो तब है कि बेचारा बच जाए और अपनी तस्वीर वाले अखबार को अपनी कोठरी में लटका ले!

गुरदास को होश आया तो उसने सुना, 'इधर से संभालो! ऊपर से उठाओ!' कूल्हे में बहुत जोर से दरद हो रहा था। वह स्वयं उठ न पा रहा था। लोग उसे उठा रहे थे।

'हाय! हाय माँ!' उसकी चीखें निकली जा रही थी। लोगों ने उठा कर उसे एक मोटर में डाल दिया।

हस्पताल पहुँचकर उसे समझ में आया कि वह बाजार में एक मोटर के धक्के से गिर पड़ा था। मोटर के मालिक एक शरीफ वकील साहब थे। उस घटना के लिए बहुत दुख प्रकट कर रहे थे। एक बच्चे को बचाने के प्रयत्न में मोटर को दाईं तरफ जल्दी से मोड़ना पड़ा। उन्होंने बहुत जोर से हॉर्न भी बजाया और ब्रेक भी लगाया पर ये आदमी चलता–चलता अखबार पढ़ने में इतना मगन था कि उसने सुना ही नहीं।

गुरदास कूल्हे और घुटने के दरद के मारे कराह रहा था। कुछ सोचना समझना उसके बस की बात ही न थी।

डॉक्टर ने गुरदास को नींद आने की दवाई दे दी। वह भयंकर दरद से बचकर सो गया। रात में जब नींद टूटी तो दरद फिर होने लगा और साथ ही ख़्याल भी आया कि अब शायद अखबार में उसका नाम छप ही जाए। दरद में भी एक उत्साह–सा अनुभव हुआ और दरद भी कम लगने लगा। कल्पना में गुरदास को अखबार के पन्ने पर अपना नाम छपा दिखाई देने लगा।

सुबह जब हस्पताल की नर्स गुरदास के हाथ–मुँह धुलाकर उसका बिस्तर ठीक कर रही थी, मोटर के मालिक वकील साहब उसका हाल–चाल पूछने आ गए।

वकील साहब एक स्टूल खींचकर गुरदास के लोहे के पलंग के पास बैठ गए और समझाने लगे, 'देखो भाई, ड्राइवर बेचारे की कोई गलती नहीं थी। उसने तो इतने जोर से ब्रेक लगाया कि मोटर को भी नुकसान पहुँच गया। उस बेचारे को सजा भी हो जाएगी, तो तुम्हारा भला हो जाएगा? तुम्हारी चोट के लिए बहुत अफसोस है। हम तुम्हारे लिए दो–चार सौ रुपये का भी प्रबंध कर देंगे। कचहरी में तो मामला पेश होगा ही, जैसे हम कहें, तुम बयान दे देना। समझे!'

गुरदास वकील साहब की बात सुन रहा था, पर ध्यान उसका वकील साहब के हाथ में गोल–मोल लिपटे अखबार की ओर था। रह न सका तो पूछ बैठा, 'वकील साहब, अखबार में हमारा नाम छपा है? हमारा नाम गुरदास है। मकान नाहर मुहल्ले में है।'

वकील साहब की सहानुभूति में झुकी आँखें सहसा पूरी खुल गईं, 'अखबार में नाम?' उन्होंने पूछा, 'चाहते हो? छपवा दें?'

'हाँ साहब, अखबार में तो जरूर छपना चाहिए।' आग्रह और विनय से गुरदास बोला।

'अच्छा, एक कागज पर नाम–पता लिख दो।' वकील साहब ने कलम और एक कागज गुरदास की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'अभी नहीं छपा तो कचहरी में मामला पेश होने के दिन छप जाएगा, ऐसी बात है।'

गुरदास को लँगड़ाते हुए ही कचहरी जाना पड़ा। वकील साहब की टेढ़ी जिरह का उत्तर देना सहज न था, आरंभ में ही उन्होंने पूछा– 'तुम अखबार में नाम छपवाना चाहते थे?'

'जी हाँ।' गुरदास को स्वीकार करना पड़ा।

'तुम्हें उम्मीद थी कि मोटर के नीचे दब जानेवाले आदमी का नाम अखबार में छप जाएगा?' वकील साहब ने फिर प्रश्न किया।

'जी हाँ!' गुरदास कुछ झिझका पर उसने स्वीकार कर लिया।

अगले दिन अखबार में छपा, 'मोटर दुर्घटना में आहत गुरदास को अदालत ने हर्जाना दिलाने से इनकार कर दिया। आहत के बयान से साबित हुआ कि अखबार में नाम छपाने के लिए ही वह जान–बूझकर मोटर के सामने आ गया था।

गुरदास ने अखबार से अपना मुँह ढाँप लिया, किसी को अपना मुँह कैसे दिखाता?

शब्दार्थ

यत्न – कोशिश; **निर्द्वंद्व** – दुविधाहीन, निश्चिंत; **मनस्थ** – मन में उपस्थित; **विद्रूप** – विकृत, बिगड़ा हुआ; **हर्जाना** – क्षतिपूर्ति; **बयान** – कथन; **आहत** – घायल।

अभ्यास

पाठ से

1. अनंतराम के बेहोश हो जाने के बाद गुरदास ने क्या सोचा और क्यों?
2. गुरदास की क्या महत्वाकांक्षा थी?
3. गुरदास के पिता की उससे क्या अपेक्षा थी?
4. गुरदास अपनी तुलना बोरी के एक दाने से क्यों करता था?
5. गुरदास अखबार में नाम छपवाने के लिए क्यों उतावला था?
6. अखबार में देखकर अपने मुहल्ले के लोगों का नाम उस पर क्या प्रतिक्रिया होती थी?
7. अदालत ने गुरदास को हर्जाना दिलाने से क्यों इंकार किया?

पाठ से आगे

1. किसी दिन का एक हिंदी अखबार लीजिए और एक पृष्ठ देखकर बताइए कि उसमें किस–किस के नाम छपे हैं? और किस बारे में उनके नामों की चर्चा हुई है?
2. अपने आस–पास के व्यक्तियों के अच्छे कार्यों को जानिए और उनके कार्यों के बारे में लिखिए।
3. 'ये आदमी चलता–चलता अखबार पढ़ने में इतना मगन था कि उसने सुना ही नहीं।' इस वाक्य में गुरदास के अखबार पढ़ने में मगन होने की बात कही गई है! आप किस–किस काम में मगन होते हैं? लिखिए।
4. ''अखबार में अपने नाम छपने की लालसा लिए विचार मग्न गुरुदास सड़क पर चलते हुए मोटर की ठोकर से दुर्घटनाग्रस्त हो गया।''

   गुरुदास द्वारा सड़क पर चलते हुए विचार में खो जाना कहाँ तक उचित था ? सतर्क उत्तर दीजिए।

भाषा के बारे में

1. अनन्त को अनंत, सम्बन्ध को संबंध, चञ्चल को चंचल की तरह भी लिखा जा सकता है। शब्द को संक्षिप्त कर लगाया गया बिंदु अनुस्वार कहलाता है। दिए गए उदाहरण के आधार पर आप भी पाठ में आए कुछ शब्दों को विस्तारित व संक्षिप्त कर लिखिए। यह भी बताइए कि अनुस्वार लगे शब्दों को विस्तारित करने के नियम क्या हैं?

2. पूर्ति, प्रारूप, पर्व, प्रखर, क्लर्क, राष्ट्र शब्दों में 'र' के भिन्न–भिन्न स्वरूप हैं।

पूर्ति	–	प + ऊ + र् + त + इ
प्रारूप	–	प् + र + आ + र + ऊ + प्
राष्ट्र	–	र + आ + ष् + ट् + र
पर्व	–	प् + अ + र् + व
क्लर्क	–	क् + ल् + अ + र् + क
प्रखर	–	प् + र + ख् + अ + र

(जहाँ 'र्' के साथ स्वर है वहाँ 'र' पूरा है जहाँ स्वर नहीं है वहाँ 'र्' आधा है।)

इसी तरह भिन्न रूप में प्रयुक्त 'र' वाले शब्दों की सूची बनाइए और इनकी प्रकृति को समझिए।

3. इन वाक्यों को पढ़िए–

(क) राम सेब ही खाता है।

(ख) राम सेब भी खाता है।

दोनों वाक्यों में दो शब्द 'भी' और 'ही' आगे आने वाले शब्दों में अर्थ को बदल रहे हैं। पहले वाक्य के संदर्भ में कहा जा सकता है कि राम केवल सेब खाता है, कोई अन्य फल नहीं। यहाँ 'ही' का प्रयोग 'एकमात्र' का अर्थ देता है और वाक्य में विशेष बल देता है।

दूसरे वाक्य में 'भी' में समावेशन का प्रभाव है कि राम सेब के साथ–साथ अन्य फल भी खा सकता है।

इसी तरह से आप 'ही' व 'भी' का प्रयोग करते हुए पाँच–पाँच वाक्य बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. अपने गाँव, मुहल्ले या कस्बे में घटी किसी घटना को एक खबर के तौर पर लिखिए।

DHGNI2

2. कहानीकार 'यशपाल' की जीवनी अन्य स्रोतों से पढ़कर लिखिए।

3. समूह में चर्चा कीजिए कि सड़क पर चलते हुए हमें किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

पाठ 7.4 : अपने हिस्से में लोग आकाश देखते हैं

विनोद कुमार शुक्ल

DHQJJP

1 जनवरी सन् 1937 को राजनाँदगाँव में जन्मे ***विनोद कुमार शुक्ल*** *का पहला कविता संग्रह* ***लगभग जयहिंद*** *सन् 1971 में प्रकाशित हुआ था। उन्हें दूसरे कविता संग्रह* ***'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहनकर विचार की तरह'*** *के लिए रज़ा पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके रचना संसार में उपन्यास* ***नौकर की कमीज़, खिलेगा तो देखेंगे, दीवार में एक खिड़की रहती थी*** *और* ***पीली छप्पर वाली झोंपड़ी और बौना पहाड़*** *तथा कहानी संग्रह* ***पेड़ पर कमरा*** *और* ***महाविद्यालय*** *भी शामिल हैं। कविता संग्रह* ***सब कुछ होना बचा रहेगा*** *पर उन्हें सन् 1992 में रघुवीर सहाय स्मृति सम्मान मिला।*

अपने हिस्से में लोग आकाश देखते हैं
और पूरा आकाश देख लेते हैं
सबके हिस्से का आकाश
पूरा आकाश है।
अपने हिस्से का चंद्रमा देखते हैं
और पूरा चंद्रमा देख लेते हैं।

सबके हिस्से की जैसी–तैसी साँस सब पाते हैं
वह जो घर के बगीचे में बैठा हुआ
अखबार पढ़ रहा है
और वह भी जो बदबू और गंदगी के घेरे में जिंदा है।
सबके हिस्से की हवा वही हवा नहीं है।

अपने हिस्से की भूख के साथ
सब नहीं पाते अपने हिस्से का पूरा भात
बाजार में जो दिख रही है
तंदूर में बनती हुई रोटी
सबके हिस्से की बनती हुई रोटी नहीं है।
जो सबकी घड़ी में बज रहा है
वह सबके हिस्से का समय नहीं है।
इस समय।

अभ्यास

पाठ से

1. "सबके हिस्से का आकाश व पूरा चंद्रमा" देख लेने से कवि का क्या तात्पर्य है?
2. घर के बगीचे में अखबार पढ़ रहे व्यक्ति और बदबू के घेरे में जिंदा व्यक्ति की हवा में क्या अंतर है और क्यों?
3. कौन लोग अपने हिस्से की भूख के साथ अपना भात नहीं पा रहे हैं?
4. बाजार में दिखती तंदूर में बनी हुई रोटी सबके हिस्से की रोटी क्यों नहीं है?
5. सबकी घड़ी में बज रहा है, वह समय सबके लिए समान नहीं है। इसका क्या अभिप्राय है?

पाठ से आगे

DHZFLC

1. क्या अपने हिस्से की चीजें पाकर हमें संतुष्ट हो जाना चाहिए? कारण सहित अपने विचार दीजिए।
2. हमारे समाज में लोगों की आवश्यकताओं के संदर्भ में कहाँ–कहाँ विसंगतियाँ दिखाई देती हैं, उन्हें चिह्नित कीजिए और एक सूची बनाइए।
3. सबको बराबरी के अवसर मिलें, इसके लिए हमारे संविधान में क्या–क्या प्रावधान हैं?

भाषा के बारे में

DI9BMZ

1. इन शब्दों को हम और किन–किन नाम से जानते हैं– आकाश, चंद्रमा, बगीचा, घर, हवा।
2. 'चंद्रमा' और 'आकाश' पर दो–दो मुहावरे लिखिए।
3. 'बदबू' शब्द में 'बद' एक उपसर्ग है। सामान्यतः उर्दू शब्दों में यह लगता है। आप ऐसे पाँच शब्द लिखिए जिसमें 'बद' उपसर्ग लगा हो।
4. 'गंदगी' शब्द में 'गी' प्रत्यय लगा है। उर्दू शब्दों में यह लगता है। 'गी' प्रत्यय लगाकर आप कोई पाँच शब्द बनाइए।

योग्यता विस्तार

DII7PM

1. सूर, कबीर, तुलसी के 'पद' और विनोद कुमार शुक्ल की कविता की भाषा में क्या अंतर है? लिखिए।
2. नई कविता के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए या पुस्तकालय की पुस्तकों का अध्ययन कर जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. अपने आस–पास के लोगों के जीवन की असमानता को देखिए और उस पर अपने विचार लिखिए।

आन्तरिक मूल्यांकन

- आन्तरिक मूल्यांकन को मौखिक और लिखित गतिविधियों में क्रमश : 10 और 15 अंक में बांटा गया है।
- आन्तरिक मूल्यांकन वर्षपर्यंत होने वाली शिक्षण प्रक्रिया के साथ ही पूरा करवाया जाएगा तथा इनका आंकलन किया जाएगा।
- गतिविधियों और परियोजना कार्य को जांचने के आधार बिंदु/निर्देश शिक्षकों को उपलब्ध करवाए जायेंगे।
- किताब में से कोई भी दो परियोजना कार्य और सुझाई गई निम्नांकित गतिविधियाँ आन्तरिक मूल्यांकन का हिस्सा मानी जाएगी।
- दी गई गतिविधियों में से विद्यार्थी अपनी सुविधा अनुसार निर्धारित संख्या में किन्ही गतिविधियों और परियोजना कार्य का चयन कर सकेंगे।

आंतरिक गतिविधियों को जांचने के आधार

1. आडियो सुनकर चर्चा करना

1. मुख्य विषय/मुद्दे सम्मत बात
2. तर्क पूर्वक विचार करना
3. दूसरों की बातों को धैर्य पूर्वक सुनते हुए अपनी प्रतिक्रियाएँ देना
4. आत्मविश्वास पूर्वक अपनी बात कहना
5. भाषिक संरचना/वाक्य संरचना

2. किसी घटना, लेख, चर्चा के मुख्य बिन्दुओं को लिखना–

1. महत्वपूर्ण बिंदुओं की पकड़
2. अनुक्रम/व्यवस्थितक्रम
3. संक्षिप्तता
4. भाषिक समझ–वाक्य संरचना, वर्तनी

3. सर्वे/संकलन–विश्लेषण व प्रस्तुति–

1. आंकड़ो का समुचित चयन एकत्रीकरण
2. निष्पक्ष विश्लेषण
3. निष्कर्ष की सटिकता
4. भाषिक संरचना–वाक्य संरचना, वर्तनी

4. भाषण/वाद–विवाद/चर्चा–

1. संदर्भ की समझ
2. अपनी बात रखने के लिए उचित तर्कों का प्रयोग
3. उदाहरणों व वक्तव्यों का प्रयोग
4. विचारों का जुड़ाव
5. अपने मत/राय को प्रस्तुत करना
6. सटिक वाक्य संरचना/शब्द भंडार का प्रयोग

5. कविता पाठ/कहानी व नाटक पठन–

1. भावानुरूप पठन
2. आवश्यकतानुसार स्वरों का आरोह–अवरोह, लय
3. भाव–भंगिमा (Xpression)
4. पठन में प्रवाह (Fluency)
5. आत्मविश्वास पूर्वक पठन

6. रोल–प्ले करना–

1. पात्रानुरूप परिवेश में उपलब्ध समग्री का उपयोग
2. पात्रानुरूप भाषा प्रयोग, आरोह–अवरोह व गति के अनुरूप
3. पात्रानुरूप संवाद कथन
4. आत्मविश्वास

7. मुद्दों पर आधारित संवाद/वाद–विवाद

1. विषय का चयन
2. स्वर का आरोह–अवरोह
3. कल्पनाशीलता एवं तर्क का समावेश
4. शब्द का प्रयोग, शब्द निर्माण
5. भाव–भंगिमा
6. साथी से तालमेल
7. आत्मविश्वास

8. जीवनवृत लिखना–

1. व्यक्ति विषयक आवश्यक जानकारी
2. विचारों का व्यवस्थित लेखन
3. तारतम्यता
4. वाक्य संरचना, वर्तनी, विराम चिन्ह

9. लेखन–निबंध/अनुच्छेद/रिपोर्ट लेखन–

1. थीम विकसित करना
2. विचारों की क्रमबद्धता
3. वाक्य संरचना
4. भाषिकता–वर्तनी, विराम चिह्न

10. पत्र लेखन

1. उचित प्रारूप
2. विषय की समझ
3. विचारों की क्रमबद्धता
4. वाक्य संरचना–वर्तनी, विराम चिह्न